CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10.3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grar

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaor

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# रतीय स्वतंत्रता संग्राम

☆

लेखक

**त्रिवेणी शर्मा सुधाकर**

☆

ज्ञान गेह प्रकाशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम संस्करण

कापीराइट—लेखक

**मूल्य सजिल्द : रु० 125/-**

*प्रकाशक :*
**ज्ञानगेह**
नेताजी सुभाष नगर
राजेन्द्र पथ, गया (बिहार)

मुद्रक : बिहार ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क्स, नयाटोला, पटना-4
फोन : 656463 (O), 656426 (R)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी की पच्चासवीं वर्षगाठ के अवसर पर प्रकाशित

सादर समर्पित

पंडित यदुनन्दन शर्मा

की प्रेरणा से १९३२-३३

के स्वतंत्रता संग्राम में

गया और फुलवारी कैम्प जेल में बन्दी
जीवन बितानेवाले परम पूज्यवर पिता

श्री कैलाश शर्मा जी

के पावन स्मृति में

त्रिवेणी शर्मा सुधाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# विषय-सूची


| | | |
|---|---|---|
| १. | दो शब्द–स्वतंत्रता सेनानी अम्बिका प्रसाद सिंह 'दादा' | १ |
| २. | भूमिका–प्रो० परमानन्द सिंह 'मदन' | २ |
| ३. | स्वतंत्रता संग्राम में किसानों की गौरवशाली भूमिका | ४ |
| ४. | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मजदूर वर्ग की भूमिका | २२ |
| ५. | जब चुनौती बन गया 'वन्देमातरम्' | ३० |
| ६. | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका | ३४ |
| ७. | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और साहित्यकार | ४० |
| ८. | स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी | ४६ |
| ९. | नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की विचार धाराएं | ५४ |
| १०. | एक समर्पित स्वतंत्रता सेनानी, किसानों के प्राण पंडित यदुनन्दन शर्मा | ५८ |
| ११. | अगस्त क्रांति की पृष्ठभूमि और गतिविधियां | ६८ |
| १२. | अगस्त क्रांति के चिरस्मरणीय दिन | ७३ |
| १३. | आजादी के दीवानों के तराने अब भी गूंजते हैं | ७८ |
| १४. | परिशिष्ट | ८२-१२६ |


RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# दो शब्द

कामरेड त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर' किसान आन्दोलन के जनक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के अन्तिम एवं जुझारू दशकों से जुड़े रहे हैं । इनके गाँव मंझियावा को सौभाग्य था कि महान् त्यागमूर्त्ति, बलिदानी और क्रांतिकारी किसान नेता पं० यदुनन्दन शर्मा की जन्मस्थली भी है । स्वाभाविक है कि कामरेड सुधाकर की लेखनी, राजनैतिक चेतना एवं वक्तृता शक्ति को इन दो ऐतिहासिक पुरुषों ने पल्लवित एवं पुष्पित किया है ।

तदनुकूल कामरेड सुधाकर ने दर्जनों रचनाएँ अपने महान् प्रेरणा-स्रोतों से जुड़े होने के कारण अपने देश की युवा पीढ़ी को समर्पित किया है ।

स्वयं कामरेड सुधाकर अगस्त क्रांति, युवक संगठनों, किसान आन्दोलनों, बकाश्त संघर्षों में बिहार के बदनाम सामन्तों से लोहा लेने में अपने आदर्श पुरुषों के अत्युत्तम उत्तराधिकारी के रूप में निखरे हैं ।

ब्रिटिश शासन ने सौदागरों की धोखाधड़ी एवं क्रूरतम शासकों एवं साम्राज्यवादियों के रूप में हिन्दुस्तान का शोषण-दोहन किया है । इनके बेईमान एवं नापाक हरकतों पर खुद ब्रिटेन एवं फ्रांस के इतिहासकारों और दर्शनवेत्ताओं ने काफी रोषपूर्ण प्रतिक्रियायें व्यक्त की हैं । भारत में अँग्रेजीराज के लेखक मेजर बसु एवं पं० सुन्दरलाल ने ही नहीं बल्कि महान् कार्लमार्क्स, लेनिन ने इनकी साम्राज्यशाही की भर्त्सना की है ।

आज हम ९ अगस्त, १९४२ के पचासवें सालगिरह के दिन भी ब्रिटिश साम्राज्यशाही की कुटिलताओं की फसल देश के विभाजन एवं सीमा संघर्षों और आतंकवादी एवं अलगाववादी खूँरेजियों के रूप में काट रहे हैं ।

मेरे सरीखे स्वाधीनता सेनानी जो महान् सोवियत क्रान्ति से काफी प्रभावित हुए थे और जो 'सर बाँधे कफनियाँ हो शहीदों की टोली निकली' के तराने भरते अपने को कुर्बान करते रहे हैं, कामरेड 'सुधाकर' की रचनाओं में भारतीय जन-मानस की चेतनशीलता एवं संवेदनशीलता को जाग्रत रखने का बेजोड़ प्रयास पाया है ।

मेरी विनती है, कामरेड सुधाकर से कि वे अपनी सशक्त लेखनी एवं विशुद्ध क्रान्तिकारी चेतना से शहीद भगत सिंह, गाँधी, सुभाष, स्वामीजी, यदुनन्दन शर्मा, जयप्रकाश, लोहिया तथा खान अब्दुल गफ्फार खान की हिन्दोस्तानियत को पुनर्स्थापित करते रहने के प्रयासों में चार-चाँद जोड़ने में प्रयत्नशील रहें ।

काश ! विभाजन जन्य व्याधियों पर कुठाराघात करने की अनिवार्यता पर लेखक, कवि, कलाकार, इतिहासकार, आजादी के जुझारू इनक्लाबों के दिनों से अब तक सतर्क एवं सक्रिय होते तो हमें हिन्दुस्तानी और हिन्दोस्तानियत का अभाव न खटकता और न आजाद देश में दंगे होते, न साम्प्रदायिकता नंगा नाच करती और निश्चित रूपेण हमारा भारतीय महाद्वीप एक सौहार्दपूर्ण परिवार होता ।

कामरेड सुधाकर के प्रति कोटिशः धन्यवाद प्रकट करते हुए इनके प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ ।

—अम्बिका प्रसाद सिंह "दादा"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# भूमिका

भारत का राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम विश्व इतिहास में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। वर्तमान काल के सर्वाधिक शक्तिशाली साम्राज्यवाद, जिसके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था, उसे ध्वस्त करने का श्रेय इसे प्राप्त है। स्वतंत्रता संग्राम के संबंध में अवतक विभिन्न भाषाओं में काफी पुस्तकें लिखी गयी हैं और हिन्दी में भी पुस्तकें आयी हैं किन्तु अभी तक इस विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से और नयी सामग्रियों की खोज के आलोक में पुस्तकों की आवश्यकता है। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में देश के प्रायः सभी इलाकों, तबकों और धर्मों के लोगों ने अलग-अलग या मिलकर हिस्सा लिया था। वैचारिक दृष्टि से भी अलग मत रखनेवाले लोगों ने निष्ठा के साथ अपने ढंग से साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष किया था। अतः आवश्यकता इस बात की है कि स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेनेवाले सभी तरह के लोगों के योगदान को इतिहास में स्थान दिया जाय। आज इस बात की भी आवश्यकता है कि राष्ट्रीय आन्दोलन की सही विरासत को आम जनता के समक्ष सही पृष्ठभूमि में रखा जाए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने स्वतंत्रता संग्राम के दौर में साम्प्रदायवाद को बढ़ावा देकर न केवल हर मौके पर हमारे संघर्षों को कमजोर करने का प्रयास किया वल्कि अन्ततः देश का विभाजन कराने में सफलता भी प्राप्त की। आजादी की आधी शताब्दी पूरी होने जा रही है और आज पुनः साम्प्रदायवाद की शक्तियां स्वाधीनता संग्राम की विरासतों को भूलाकर और इससे सही सवक न लेकर देश को गलत दिशा में ले जाने की साजिश कर रही हैं। साम्राज्यवादी देशों की बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी देश की राजनीति में कुचक्र का चाल फैला रही है। अतः इस पृष्ठभूमि में स्वाधीनता संग्राम के अनुभवों का अध्ययन और इससे सबक लेने की आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री त्रिवेणी शर्मा सुधाकर स्वयं एक स्वतंत्रता सेनानी हैं, किसान आन्दोलन के जुझारू नेता हैं और नौजवान संघ के संगठनकत्ता से राज्य के कम्युनिस्ट आन्दोलन के एक वरिष्ठ नेता बने हैं। श्री सुधाकर में यह खुबी है कि संघर्षो के दैनन्दिन कार्यों से जुड़े रहकर भी साहित्य, लेखन और पत्रकारिता में अपनी पहचान बनाने में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सफलता प्राप्त की है । किसान आन्दोलन के मूर्धन्य नेताओं की संक्षिप्त जीवन लिखकर उन्होंने राज्य के स्वतंत्रता आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन के इतिहास लेखन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है । उनकी संकलित सामंग्रियों का उपयोग किसान आन्दोलन के कई शोधकर्त्ताओं ने अपनी पुस्तकों में किया है । स्वाधीनता संग्राम की बातों को सही परिप्रेक्ष्य में आज आमलोगों के बीच पहुँचाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है । सरल सुबोध भाषा एवं शैली में लेखक ने इस कर्त्तव्य को पूरा किया है । इन्होंने बड़े ही सरल एवं प्रभावकारी ढंग से स्वाधीनता संग्राम में किसानों, मजदूरों, महिलाओं, साहित्यकारों एवं कम्युनिस्टों की भूमिका को अलग से उजागर किया है तथा कई अन्य महत्त्वपूर्ण विन्दुओं को अलग-अलग अध्याय में लेकर इन्होंने पाठकों को नयी जानकारियाँ भी दी है और अन्त में १८५७ से अंतिम दिनों तक प्रसिद्धि पानेवाले आजादी के तरानों का चयनित संकलन देकर लेखक ने नयी पीढ़ी को इन प्रेरणादायक गीतों से परिचित होने का अवसर प्रदान किया है । नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जन्म-शताब्दी का यह वर्ष है और स्वाभाविक है कि लेखक ने इस पुस्तक में उनकी विचारधारा पर भी एक अध्याय दिया है।

वस्तुतः यह पुस्तक सामग्री, भाषा, शैली और अध्यायों के चयन की दृष्टि से एक सराहनीय प्रयास है और वर्त्तमान राष्ट्रीय परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में आम पाठकों के लिए एक सही दिशा-निर्देश करनेवाली पुस्तक है । मुझे विश्वास है कि सुधाकर जी की लेखनी अभी हमें और भी बहुत कुछ पठनीय सामग्री देती रहेगी ।

**परमानन्द सिंह 'मदन**
सचिव,
बिहार इतिहास परिषद्

**स्थान : पटना**
**तिथि : वसंत पंचमी (२५ जनवरी, ९६)**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# स्वाधीनता संग्राम में किसानों की गौरवशाली भूमिका

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने छल-बल से भारत पर अधिकार जमाया और इस देश को तरह-तरह से लूटकर तबाह किया। सन् १७५७ की पलासी की लड़ाई से लेकर १८०३ में मराठों की हार तक में विशाल आबादी वाला महान् देश भारत अँग्रेजों द्वारा जीत लिया गया। सन् १७५७ से १९४७ तक का काल भारत की औपनिवेशिक गुलामी का काल रहा। इस तरह १९० वर्ष तक भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शोषण का शिकार रहा। आजादी हासिल करने तथा स्वाधीन भारत के निर्माण के लिए भारतीय जनता के शानदार संघर्ष का काल भी यही है।

भारतीय किसान बार-बार विद्रोह कर अँग्रेज लुटेरों और उनके गुर्गों, जमींदारों तथा साहुकारों को मार भगाने की लगातार कोशिश की। किसानों के संग्राम ने विभिन्न समय में, विभिन्न रूप धारण किया। लक्ष्य और रण कौशल के विचार से उनके संघर्षों के कई रूप रहे हैं।

ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज होते ही, अँग्रेजों ने हमारे ग्रामीण समाज के सारे खेत हड़प लिए और धनियों के हाथ बेच दिये। फल यह हुआ कि तरह-तरह की अर्ध-सामंती जमींदारी प्रथाएँ पैदा हो गयी। धरती जमींदारों की निजी जायदादें हो गयी। किसानों से कमरतोड़ लगान वसूले जाने लगे। भारत के किसानों ने अँग्रेजी राज और सामंती शोषण को यों ही नहीं स्वीकार किया। वे लड़ते और लगातार प्रतिरोध करते रहे। भारत में अँग्रेजी राज का इतिहास किसान विद्रोहों से भरा पड़ा है। उन विद्रोहों की याद करके देशकी आजादी और जनवाद के प्रत्येक योद्धा की छाती गर्व से फूल उठती है।

## संन्यासी विद्रोह

किसानों का पहला विद्रोह इतिहास में सन्यासी-विद्रोह के नाम से प्रसिद्ध है। यह विद्रोह १७६३ में बंगाल और बिहार में शुरू हुआ और १८७० तक चलता रहा। ईस्ट इंडिया कम्पनी के गवर्नर जनरल बारेन हेस्टिंग ने जांनबुझकर इसे डाकुओं का उपद्रव कह कर बदनाम किया था। सरकारी सूत्रों से ही पता चलता है कि ये तथाकथित "डाकू" पचास-पचास हजार के गिरोहों में चलते थे। इनमें, फौज से निकाले गये सिपाही और खेतों से बेदखल किये गये उजड़े किसान शामिल होते थे।

सरकारी गजेटियरों के रचयिता सर विलियम हन्टर ने साफ शब्दों में लिखा है कि संन्यासी विद्रोह किसान विद्रोह था। उन्होंने लिखा है कि "ये जीवनयापन के शेष उपाय का सहारा लेने को बाध्य हुए थे।" "ये तथाकथित गृहत्यागी और सर्वत्यागी संन्यासियों के रूप में पचास-पचास हजार के दल बाँध कर सारे देश में घूमा करते थे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


हचिन्सन नामक इतिहास लेखक ने अपना मत प्रकट करते हुए लिखा है कि संन्यासियों और फकीरों ने लड़ाकू किसानों और कारीगरों के सामने विदेशियों के चंगुल से देश की मुक्ति और धर्मरक्षा का आदर्श उपस्थित किया था। उन्होंने शिक्षा दी कि पराधीन जाति की मुक्ति के लिए सर्वस्व त्याग, मातृभूमि में अचल भक्ति, अन्याय के अन्त और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए 'संन्यास मुंह' और विदेशी शक्ति के विरुद्ध देशवासियों की एकता। डा० भूपेन्द्रनाथ दत्त ने लिखा है–"संन्यासी योद्धा 'बन्देमातरम्' का रणनाद करते थे।"

बंगाल और बिहार में फैले इस विद्रोह के नेता मजनू शाह, मूसा शाह, चिराग अली, भवानी पाठक, देवी चौधुरानी, कृपानाथ, नूरुल मुहम्मद, पीताम्बर, अंनूपनारायण और श्रीनिवास आदि थे। इनमें मजनू शाह की भूमिका सबसे अधिक उल्लेखनीय है। ये विद्रोह बड़ी तादाद में अपने नेता के नेतृत्व में चलते, ईस्ट इंडिया कम्पनी की कोठियों और जमींदारों की कचहरियों को लूटते और उनसे कर वसूल करते थे। सर विलियम हंटर ने लिखा है कि इन गिरोहों की सरगर्मियों से सरकार नाकोदम रहती थी। १८१० में लाटमिंटो ने लिखा था–'इन्होंने जो आतंक राज कायम किया था, वह उतना ही सर्वांगपूर्ण था, जितना कि वह आतंक जो फ्रांस की प्रजातांत्रिक शक्ति का आधार बना था।"

२९ दिसम्बर १७८६ को अँग्रेजों से युद्ध करते हुए उनका घेरा तोड़कर निकलने में मजनू शाह घायल हुए और एक दिन बाद ही संन्यासी विद्रोह के सर्वश्रेष्ठ नेता शहीद हो गये।

जून १७८७ में विद्रोहियों के विख्यात नेता भवानी पाठक अपनी छोटी टुकड़ी के साथ अँग्रेजों की विशाल सेना के घेरे में पड़ गये। जल युद्ध में भवानी पाठक और उनके साथी मारे गये। देवी चौधुरानी इसके बाद भी लड़ती रहीं, पर आखिर में उनका क्या हुआ, अज्ञात है।

प्रसिद्ध उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने संन्यासी विद्रोह के आधार पर "आनन्दमठ" में जो चित्रण किया है, वह बंगाल के क्रांतिकारियों की नीव और संन्यासी विद्रोह उनका आदर्श बना।

## वहाबी किसानों का क्रांतिकारी आंदोलन

सन् १८२६ से १८७२ तक वहाबी आन्दोलन ब्रिटिश राज के लिए ललकार भरी चुनौती थी। कुछ अंग्रेज इतिहासकारों ने वहाबी आंदोलन को हिंदू-विरोधी मुस्लिम मजहबी आंदोलन के रूप में चित्रित किया है। किन्तु सच्चाई यह है कि वहाबी मुसलमान अवश्य थे, फिर भी उनका आन्दोलन भारत को अँग्रेजी राज से छुटकारा दिलाने की भावना पर आधारित था। उन्होंने अँग्रेजों द्वारा अधिकृत भारत को "दार-उल-हर्ब" (दुश्मन का मुल्क) कहा और अँग्रेजों को भगाकर 'दार-उल-इस्लाम" (धर्मराज) कायम करने की शपथ ली थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

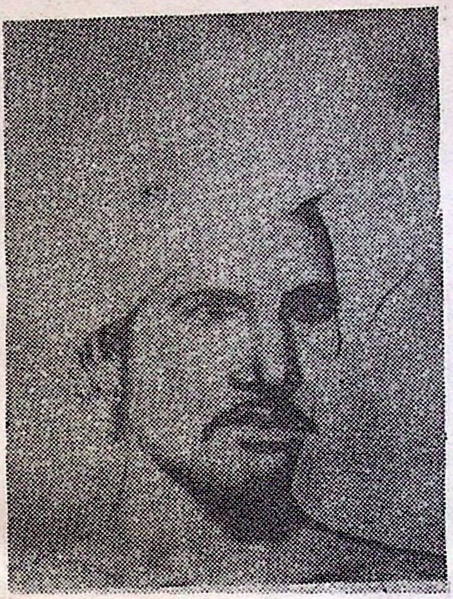

बिरसा मुंडा

महात्मा गाँधी

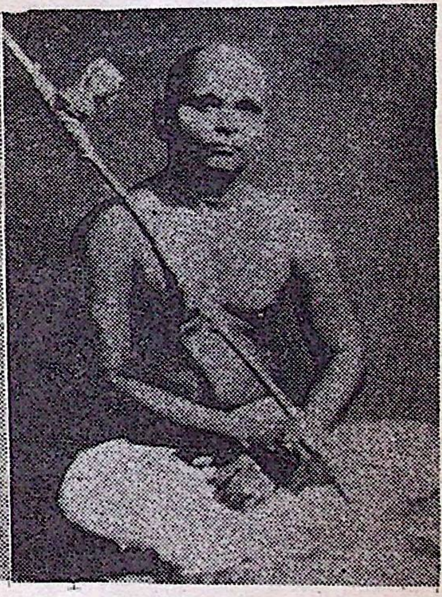

स्वामी सहजानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


१९वीं सदी के प्रथम चरण में यह आंदोलन पूरे उत्तरी भारत में फैल गया था। मुसलमान किसानों के बीच इस आंदोलन का जर्बदस्त असर था। वहाबी आंदोलन का मकसद था हथियारों के बल पर अँग्रेजों को मार भगाना। बेशक, इस्लामी पुनर्जागरण भी वहबियों का घोषित उद्देश्य था, लेकिन सार रूप में यह आंदोलन विदेशी राज से देश की आजादी का क्रांतिकारी राजनीतिक आंदोलन था।

वहाबी-विद्रोह के नायक तीतू मीर के नेतृत्व में १८३१ में बंगाल के किसानों ने विद्रोह किया था। यह विद्रोह हमारे आजादी के आंदोलन के वहाबी अध्याय का सबसे उज्जवल पृष्ठ है। तीतू मीर नवदीक्षित वहाबी था, लेकिन उसके अन्दर धर्म सुधारक से कहीं अधिक किसान क्रांति की चेतना मजबूत थी। जमींदारी जुल्म, बेगार और बेदखलियों ने उसकी क्रांतिकारी भावना की आग को भड़का दिया था।

तीतू खुद चतुर लठघर था और उसने तीन चार हजार लठैत किसानों का एक दल बना लिया था। जमींदारों की फौजों से इसकी कई मुठभेड़ें हुई थी। कई महीनों तक २४ परगना, नदिया और फरीदपुर के जिलों पर तीतू मीर का कब्जा रहा। अँग्रेजी राज उखाड़ कर फेंक दिया गया था। तीतू का नारा था 'जमींदारी जुल्म मुर्दाबाद"।

तीतू मीर की शक्ति काफी बढ़ गयी। उन्होंने गाँवों के अत्याचारी तालुकेदारों, महाजनों, नील कोठी के साहबों तथा वहाबी-विरोधी धनी मुसलमानों को सबक सिखाने का फैसला किया। घोषणा कर दी गयी कि जो तीतू को कर न देगा उसे दंड दिया जायेगा। तीतू ने यह भी आदेश दिया कि सभी किसान, चाहे वे मुसलमान हों या हिन्दू, जमींदारों और निलहे साहबों को लगान देना तथा नील की खेती करना बंद कर दें। अधिकांश किसानों ने इस आदेश का पालन किया।

सरकार ने इस विद्रोह को दबाने के लिए बहुत बड़ी पलटन भेजी। तीतू बारासात के अपने ऐतिहासिक "बांस के किले" में जमकर लड़ा। १४ नवम्बर से १७ नवम्बर तक उसने बड़ी बहादुरी से अपने किले की रक्षा की। फ़िर सरकारी फौजों के पास गोले-बारूद का बड़ा भंडार आ गया। लाठियों और तीर-धनुषों का गोले-बारूद के सामने हार हो गई। खुद तीतू गोली खाकर शहीद हो गया। ५० किसान मरे और ३५० पकड़े गये।

वहाबियों का विद्रोह देश के अन्य भाग में भी हुआ और १८७२ तक किसी-न-किसी रूप में जारी रहा।

## संथाल विद्रोह

१८५५-५६ में संथाल किसानों का विद्रोह भी भारतीय किसान आन्दोलन का एक अभिन्न अंग है। इस विद्रोह का विस्तार बिहार के भागलपुर, संथालपरगना और बंगाल के वीरभूम जिले तक था। इस पूरे भूखंड को संथालों ने जंगल साफ कर आबाद किया था और खेती शुरू की थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


इस नये क्षेत्र को 'दामने-कोह' कहा जाता था। 'दामने कोह' का अर्थ है—पहाड़ का अंचल, राजमहल पहड़ियों की घाटियों से भरा इस क्षेत्र में ८६६ वर्ग-मील पहाड़ी और ५०० वर्ग मील मैदानी इलाके थे।

'दामने-कोह' के संथालों को जमींदार, महाजन और सौदागर बड़ी बर्बरता से सताते थे। संथालों को जबर्दस्ती अपनी जमीन से बेदखल किया जाता था, नकली बटखरों से उनकी फसलें तौलकर उन्हें ठगा जाता था और उनका उत्पीड़न हिंसा से किया जाता था। बार-बार आवाज लगाने पर भी सरकार उन्हें कोई राहत नहीं देती। इस तरह संथालों में विद्रोह की आग सुलगने लगी।

३० जून १८५५ को भगनाडीह गाँव में सिद्धू, कानू, चान्द और भैरव के नेतृत्व में दस हजार संथाल जमा हुए और प्रतिशोध की शपथ ली। संथाल बड़ी संख्या में जमा होकर एक-के-बाद एक बाजारों को लूटते-पाटते जमींदारों, महाजनों और उत्पीड़क सौदागरों की जायदादें जप्त करते आगे बढ़ते गये।

गोड्डा, कुरछई, पाकुड़, लिटिपाड़ा, जीतपुर, हिरनपुर, राजमहल, कालिकापुर, बल्लभपुर, दुमका आदि जगहों में चुन-चुन कर अत्याचारी जमींदार, महाजन, नील कोठी के गोरे साहब, पुलिस अधिकारी या तो मार डाले गये या उन्हें इलाके से खदेड़ दिया गया और उनकी जायदाद जब्त कर ली गयी।

संथाल विद्रोह के नायकों ने यह घोषणा कर दी कि ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज खत्म हो गया है। ब्रिटिश राज ने हथियार बंद फौजें इन्हें दबाने के लिए भेजी। वीर संथालों ने उन्हें भी मार भगाया। विद्रोह लगभग दो वर्ष तक चलता रहा। अन्त में गोले-बारूद से लैस शक्ति के हाथों निर्मम रक्तपात और दमन द्वारा उन्हें कुचल दिया गया।

फरवरी १८५६ में सिद्धू को पकड़ कर गोली से उड़ा दिया गया। चाँद और भैरव भागलपुर के पास एक जबर्दस्त लड़ाई में शहीद हुए। फरवरी के तीसरे सप्ताह में वीरभूम में कानू को पकड़कर गोली मार दी गयी। इस तरह वीर संथालों के सभी नेता आजादी की लड़ाई लड़ते हुए मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गये।

इतिहासकार हंटर ने लिखा है कि—अँग्रेज सेनापतियों को भी यह स्वीकार करना पड़ा कि "हमने जो कुछ किया वह युद्ध नहीं था, जन हत्या थी।"

श्री कालीकिंकर दत्त ने इस विद्रोह के बारे में लिखा है—

"६ माह से अधिक समय तक यह राज्य क्रांति सरकार, जमींदारों और महाजनों के लिए एक हड़कंप बनी रही।"

## १८५७ का महान् विद्रोह

संथाल विद्रोह के दमन के फौरन बाद ही १८५७ का महान् राष्ट्रीय विद्रोह हुआ, जिसने भारत में ब्रिटिश राज की नीवें हिला दीं। वह सिपाहियों का सिर्फ गदर नहीं था, भारतीय जनता और खासकर किसानों में फैले व्यापक असंतोष का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



ही विस्फोट था। वेदखल किये गये सामंत भी इस विद्रोह के एक महत्वपूर्ण अंग थे। साथ ही पूरे उत्तर भारत के देहातों के गरीब विद्रोहियों के प्रमुख आधार थे। सचमुच में यह विद्रोह विदेशी राज के खिलाफ एक राष्ट्रीय विद्रोह था। किसान का बेटा मंगल पांडेय ने २९ मार्च १८५७ में पहली गोली चलाई और स्वतंत्रता संग्राम छेड़ दिया। हिन्दू और मुसलमान कन्धे-से-कन्धा मिलाकर लड़े और स्वाधीनता के लिए विदेशी उत्पीड़कों का उन्होंने हथियारो से मुकाबला किया।

कार्लमार्क्स ने ऐतिहासिक विश्लेषण करते हुए यह बताया है कि सिपाही-विद्रोह ठीक उन्हीं दिनों हुआ, ज़ब पूरे दक्षिण-पूर्वी एशिया में उपनिवेशी व्यवस्था के विरुद्ध व्यापक उभार था। यह भारत के नवयुग की आगवानी थी। नये राष्ट्र के जन्म का लक्षण था।

हैदराबाद, काश्मीर आदि देशी रजवाड़ों की मदद से अँग्रेज इस विद्रोह को कुचलने में सफल हो गये। बड़े-बड़े सामंत आम तौर पर अँग्रेजों के साथ थे और छोटे-छोटे सामंत 'राष्ट्रीय-विद्रोह' में शरीक थे।

विद्रोहियों ने मुगलवंश के अंतिम बादशाह बहादुर शाह को दिल्ली में अपना बादशाह बनाया था। हिन्दू-मुसलमान सभी उनके प्रति राजभक्ति की शपथ ली थी। फिर भी बहादुरशाह सिर्फ एक प्रतीक थे। असली अधिकार उन फौजियों के हाथ में था, जो बादशाह के सलाहकार बनाये गये थे। विद्रोहियों के पक्ष में सामंतों के बीच से झांसी की रानी, नाना साहब और कुंवर सिंह आदि ने ऐतिहासिक भूमिका अदा की।

इस महान् विद्रोह ने कुछ समय के लिए पूरे उत्तर भारत में ब्रिटिश राज को बिल्कुल मिटा डाला था। विद्रोह की सबसे बड़ी शक्ति थी, विभिन्न जातियों, संप्रदायों और फौजियों तथा देहाती गरीबों के बीच देशभक्तिपूर्ण संग्रामी एकता। इसी शक्ति के कारण निहायत कमजोर नेतृत्व के रहते हुए भी हम १९वीं सदी के मध्य में ही ब्रिटिश शासन की नींवे हिला सके थे।

## नील विद्रोह

१८५७ के विद्रोह की राख ठंढी भी नहीं हो पायी थी कि १८५८-५९ में नील के किसानों की विद्रोही आग भड़क उठी। ईस्ट इंडिया कंपनी के मातहत अँग्रेजों ने किसानों की जमीन छीन ली थी और उन्हें नील की खेती करने को मजबूर किया था। किसान बिल्कुल भूदास बन गये थे। नीलहे साहबों के बर्बर जुल्म से किसानों के बीच आग फैल गयी थी। विद्रोही किसानों ने नीलहे साहबों की कोठियों पर घेरे डाल दिये और नील की खेती करने से साफ इन्कार कर दिया। महान् नील विद्रोह पहले बारासात में शुरू हुआ। नदिया और जैसोर के जिलों में विद्रोह का प्रचंड रूप फैल गया। विद्रोही किसानों ने अँग्रेजों की शस्त्र सेनाओं को बार-बार मार भगाया था। ब्रिटिश सैनिकों ने गाँवों पर प्रतिशोध की भावना से अकथनीय अत्याचार किये। इस विद्रोह ने बुद्धिजीवियों के अंदर देशभक्ति की ऐसी भावना जगा दी थी कि उस युग का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सर्वोत्तम बंगला नाटक, श्री दीनबंधु का 'नील दर्पन' प्रसिद्ध बंगला कवि माइ-केल मधुसूदन दत्त ने अँग्रेजी में अनुवाद किया था।

## मोपला विद्रोह

किसानों के विद्रोह में मालावार के मोपला विद्रोह का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। १८३६ में इस विद्रोह का प्रारम्भ हुआ। १८३६ से १८५३ तक मोपलों ने २२ विद्रोह किये। मोपला किसानों का विद्रोह रूक-रूक कर १९२०-२२ तक चलता रहा। कुछ लोगों ने मोपला विद्रोह को सांप्रदायिक विद्रोह कहकर बदनाम किया है। इस क्षेत्र में जमींदार और महाजन आमतौर पर हिन्दू थे। जमींदार और महाजनों के शोषण से मोपला किसान ऊब चुके थे। मोपला किसानों के हमले का निशाना आम हिन्दू नहीं, बल्कि ये शोषक ही थे। सरकारी हथियारबंद फौजों से भी मोपलों की कई टक्करें हुईं।

१९२१ में मालावार के काँग्रेसी एवं गांधीवादी नेता मौलाना याकूब ने गाँधीजी को अपने पत्र में जो कुछ लिखा था, उससे तो जरा भी सन्देह नहीं रह जाता कि मोपला-विद्रोह सचमुच में किसान विद्रोह था।

## किसान संघर्ष जारी रहा

१८५७ के राष्ट्रीय विद्रोह से अंग्रेजों की आँखें खुल गयी थी। उन्होंने कंपनी के राज का अंत कर भारत को ब्रिटिश साम्राज्य का एक अंग बना लिया। रानी विक्टोरिया भारत की महारानी घोषित हुई। विक्टोरिया की घोषणाओं से भी हमारे किसानों का संघर्ष रूका नहीं, उनका संघर्ष जारी रहा।

कूका विद्रोह (१८६९-७२) पाबना का किसान विद्रोह (१८७२-७३) महाराष्ट्र के किसानों का संग्राम (१८७५) बासुदेव बलवन्त फड़के का विद्रोह (१८७९) और बिरसा-विद्रोह (१८९९-१९००) आदि की चिनगारी फैलती रही। ब्रिटिश राज की छत्रछाया में किसानों की बेचैनी दबी नहीं, बढ़ती ही गयी। नये-नये इलाकों में किसानों की लड़ाई फैल गयी।

किसानों के क्रांतिकारी आन्दोलन और पढ़े-लिखे मध्यमवर्ग की राष्ट्रीय चेतना को देखकर ही ब्रिटिश नौकरशाह चिन्तित हो गये और क्रांति रोकने की गरज से ही ब्रिटिश उपनिवेशवादियों का भारत सरकार के अवकाश प्राप्त अधिकारी अक्टावियन ह्यूम के नेतृत्व में इंडियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना हुई।

## नया दौर, नये संघर्ष

बीसवीं सदी के दूसरे दशक में आंध्र के किसानों ने सीताराम राजू के नेतृत्व में विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। उनका उद्देश्य था ब्रिटिश राज का अन्त करना। लड़ते-लड़ते राजू के दल को जंगल-पहाड़ों की शरण लेनी पड़ी। सीताराम राजू एक तरह का 'राबिन-हुड' बन गया, जो अमीरों और सतानेवालों की लूट-पाट से धन जमा कर गरीबों की सेवा में लगाता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



बिहार के चंपारण के किसान गोरे निलहों के विरुद्ध बगावत करने पर थे। गाँधीजी ने १९१७ में सत्याग्रह की धारा में उसे मोड़ने में सफलता प्राप्त की। तात्कालिक लक्ष्य में चम्पारण का किसान सत्याग्रह सफल रहा। गुजरात के खेड़ा जिले में भी उसी साल किसान आन्दोलन चलाया गया था, मगर वह अधिकांश विफल रहा। अवध में १९२० में बाबा रामचन्द्र के नेतृत्व में ताल्लुकेदारों के विरूद्ध किसान आन्दोलन चला, जिसमें लूट-पाट भी हुई। सन् १९२१ में जनता में फैले असंतोष को देखकर गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया। इस आंदोलन में किसान, स्त्री, पुरुष और बच्चे सामूहिक रूप से शामिल हुए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक नयी ताकत मिली। सदियों से गोरों के पाँवों तले रौंदे भारत में आत्म-सम्मान जाग उठा। अब तक मुट्ठी भर पढ़े-लिखे लोगों के एक मंच के रूप में 'भिक्षादेहि' का प्रस्ताव पास करने वाली काँग्रेस राष्ट्रीय आन्दोलन की संघर्ष वाहिनी बन गयी। काँग्रेस द्वारा संचालित संघर्ष को भारत के किसानों ने वास्तविक शक्ति प्रदान कर उसे लोकप्रिय राष्ट्रीय संस्था बनायी। लगभग ३४-३५ वर्षों तक मात्र मंच के रूप में काम करने वाली काँग्रेस अवज्ञा आन्दोलन में किसानों का सहयोग और समर्थन पाकर शक्तिशाली बनी।

असहयोग युग के पूर्व किसान आंदोलन की विशेषता यह थी कि एक तो वे अधिकांश असंगठित थे। दूसरा उनको सुदृढ़ नेतृत्व का अभाव था। तीसरी बात यह थी कि किसान विद्रोह और आन्दोलन की तैयारी योजनाबद्ध नहीं होती। जब किसानों पर होनेवाले जुल्म असह्य हो जाते और उन्हें अपने त्राण का कोई दूसरा रास्त न दीखता तो वे एकाएक ऊबल पड़ते।

अब किसानों के संगठित आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ। सन् १९१८-१९ में इलाहाबाद में श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन के नेतृत्व में किसान आन्दोलन शुरू हुआ। १९२३-२४ में आंध्र प्रांतीय रैयत एसोसिएशन के नाम से एक संगठन बना। १९२७ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में पश्चिम पटना जिला किसान सभा बनी। १९२७ में ही मुंगेर जिले के चानन के किसानों का आन्दोलन पंडित कार्यानन्द शर्मा ने शुरू किया। १७ नवम्बर १९२९ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सोनपुर में बिहार प्रांतीय किसान सभा की स्थापना हुई।

१९२८ में बारदोली के किसानों का आन्दोलन सरदार बल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में हुआ। १९३१-३२ में पंडित जवाहरलाल नेहरू और पुरुषोत्तमदास टण्डन ने उत्तर प्रदेश में किसानों के बीच काम किया और उन्हें करबन्दी आन्दोलन के लिए तैयार किया। टण्डन जी ने उसी के बाद प्रयास में 'केन्द्रीय किसान संघ' की स्थापना की।

## अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना

१९वीं सदी का गौरवशाली किसान आन्दोलन की परंपरा को कोई ताकत नहीं मिटा सकी। साम्राज्यवाद और सामंतवाद की नीतियों के कारण बढ़ते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



कृषि संकट ने इन परंपराओं को एक नये धरातल पर लाकर पुनर्जीवित किया। वर्ग संगठन के आधार पर संगठित किसान आंदोलन का नया दौर शुरू हुआ। सन् १९२९ से ३३ के बीच विश्वव्यापी मंदी के कारण भारतीय किसानों के बीच व्यापक असंतोष फैलने लगा। स्थानीय पैमाने पर इस बीच विभिन्न क्षेत्रों में किसानों के संगठन बनने लगे और आन्दोलन विकसित होने लगा। लखनऊ काँग्रेस अधिवेशन के अवसर पर ११ अप्रैल १९३६ में किसान आन्दोलन में दिलचस्पी रखनेवाले लोगों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में हुआ।

यह बात अब महसूस की जाने लगी कि संगठित किसान आन्दोलन को अखिल भारतीय रूप दिये बिना काम चलने का नहीं। लखनऊ सम्मेलन में विभिन्न प्रांतीय किसान संगठनों को अखिल भारतीय संगठन में एकजुट करने की बुनियाद पड़ी।

अखिल भारतीय किसान सभा के लखनऊ अधिवेशन में किसान आन्दोलन के लक्ष्य और कार्यक्रम परिभाषित किये गये। इसके लक्ष्य के संबंध में कहा गया था कि

"किसान आंदोलन का लक्ष्य होगा–आर्थिक शोषण से पूर्ण मुक्ति और किसानों तथा अन्य शोषित वर्गों की पूर्ण आर्थिक राजनीतिक सत्ता की उपलब्धि।"

–"किसान आंदोलन पूर्ण स्वराज्य की विजय के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेकर अन्तिम रूप से आर्थिक और राजनीतिक सत्ता उत्पादन करने वाली जनता के हाथों में देने के लिए प्रतिबद्ध है।"

किसान सभा ने एक घोषणा पत्र भी प्रकाशित किया। किसान सभा का दूसरा अखिल भारतीय अधिवेशन फैजपुर में काँग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के साथ २५-२६ दिसम्बर १९३६ में एन. जी. रंगा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। तीसरा अधिवेशन पूर्वी बंगाल के कोमिल्ला में (बंगलादेश) पुनः स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में ११ से १४ मई १९३८ को तथा चौथा अधिवेशन ९, १० अप्रैल, १९३९ में आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में गया में सम्पन्न हुआ। किसान सभा ने किसानों में एक नयी चेतना पैदा की। जुल्म के खिलाफ तथा अपने हक के लिए संगठित तौर पर आवाज उठाने की हिम्मत किसानों में पैदा हुई। किसान गाने लगे–"अब न सहब हम जुलुमियां हो राजा, तोर जमींदरिया"।

सूखी हड्डियों वाला जाग्रत किसान तन कर खड़ा हो गया। उसके दिल की आग फूट निकली–"बाबू अगिया लगैबो जमींदरिया में"। उसने अपना अरमान प्रकट किया–"जमींदारी प्रथा नाश हो के नारे में"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में स्वाधीनता का संदेश ग्रामीण आबादी तक संगठित रूप से ले जाने का श्रेय किसान सभा को है। किसान आन्दोलन ने ही किसानों के बीच राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को सुदृढ़ बनाया। अखिल भारतीय किसान सभा द्वारा देश के कई क्षेत्रों में चलाये गये आन्दोलनों ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम पर व्यापक असर डाला तथा आगे चलकर जमींदारी प्रथा की समाप्ति तथा जोतनेवालों को जमीन के नारे को राष्ट्रीय स्वरूप मिला।

१९३६ के लखनऊ सम्मेलन से १९४८ के कुमारप्पा समिति के प्रतिवेदन तक किसान सभा द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम और आन्दोलन का असर देखा जा सकता है। अखिल भारतीय किसान सभा ने राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान बिहार का गौरवशाली वकाश्त आन्दोलन, बंगाल का तेभागा आंदोलन, केरल (त्रावणकोर कोचीन) का पुनप्रावाचालार का आंदोलन, महाराष्ट्र का बारली किसानों का आन्दोलन तथा आन्ध्र के ऐतिहासिक तैलंगाना मुक्ति संग्राम ने हमारे इतिहास में गौरवपूर्ण पृष्ठों को जोड़ा है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के महान् संग्राम में हमारे किसानों ने देशभक्ति की उमंगों में बड़े पैमाने पर भाग लिया, लाठियाँ खायी और गीत गाते हुए बड़ी संख्या में जेल गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मजदूर वर्ग की भूमिका

भारत में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आधुनिक उद्योग के विकास के साथ मजदूर वर्ग का उद्‌भव और विकास हुआ। १८५३ में रेलवे लाइन का निर्माण हुआ। कार्ल मार्क्स ने ८ अगस्त १८५३ के 'न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून' के अंक में प्रकाशित "भारत में ब्रिटिश राज के भावी परिणाम" शीर्षक लेख में लिखा–

"अंग्रेज उद्योगपति केवल इसलिये भारत में रेलें बिछाना चाहते हैं कि वे रूई और अन्य कच्चा माल अपने कारखानों के लिए कम खर्च पर प्राप्त कर सकें। मगर जिस देश में लोहा और कोयला पाए जाते हैं, उसके यातायात के साधनों में जब आप एक बार मशीनों को ले आयेंगे तो उसे खुद मशीनें बनाने से आप रोक नहीं सकेंगे। "रेल व्यवस्था भारत में आधुनिक उद्योग की जननी बनेगी।"

कार्ल मार्क्स ने भारत की भावी स्वाधीनता की भविष्यवाणी भी उन्हीं दिनों की। कार्ल मार्क्स की उपरोक्त भविष्यवाणी सच साबित हुई। आधुनिक उद्योग धीरे-धीरे शुरू हुआ। रेल, पोस्ट ऑफिस और टेलीग्राफ जैसी उपयोगी सेवाओं का विकास हुआ और भारत में आधुनिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ। कपड़ा, कोयला और चटकल तीन प्रधान उद्योग प्रारम्भ हुए। क्रमशः देश में नये-नये कल-कारखानों की संख्या बढ़ती गयी। भारत को सामन्ती शोषण का अनुभव था, अब विदेशी पूँजीवादी शोषण से इसकी भेंट हुई। खानों, बगानों, कारखानों, डाक और रेलवे में भारत का सर्वहारा वर्ग अँग्रेजी राज के आमने-सामने खड़ा था। इसी बीच अंग्रेजी पढ़े-लिखे राष्ट्रवादी बुद्धिजीवी वर्ग और भारतीय पूँजीवाद का भी जन्म हुआ।

१८८५ में काँग्रेस का जन्म हुआ। कुछ वर्षों के बाद इसके भीतर मध्यम वर्गीय बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में एक वामपंथी धारा बनने लगी। लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल वामपंथी धारा के त्रिमूर्ति थे। वामपंथी धारा ने मजदूर वर्ग को जुझारू साम्राज्यवाद-विरोधी शक्ति के रूप में देखा। बाल गंगाधर तिलक बम्बई के मजदूरों से जुड़े थे, लाला लाजपत राय ऐटक के प्रथम अध्यक्ष बने थे तथा विपिन चन्द्र पाल बंगाल के जूट उद्योग और चाय बगान के मजदूरों के समर्थक थे। ब्रिटिश मालिकों के उद्योगों में काम करने वाले मजदूरों का सवाल जब आया तो राष्ट्रवादी नेताओं को मजदूरों को पूरा समर्थन देने में किसी प्रकार की हिचक नहीं हुई। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रवादी अखबारों ने चाय बागान मालिकों के खिलाफ जबर्दस्त अभियान चलाया। भारतीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



मजदूर वर्ग की पहली संगठित हड़ताल ब्रिटिश स्वामित्व और प्रबंध में चलनेवाली रेलों में हुई। ग्रेट इंडिया पेनिन्सुलार (जी० आई० पी०) रेलवे १८९९ में सिगनल पर काम करने वालों की यह हड़ताल मजदूरी, काम के घंटों तथा अन्य शर्तों से सम्बद्ध थी।

सभी राष्ट्रवादी अखबारों ने खुलकर इस हड़ताल का पूर्ण समर्थन किया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक द्वारा संपादित 'मराठा' तथा 'केशरी' ने इसके समर्थन में महीनों अभियान चलाया। बंबई तथा बंगाल में फिरोजशाह मेहता, डी. ई. वाचा और सुरेन्द्रनाथ टैगोर ने हड़तालियों की मदद के लिए जनसभाएँ आयोजित की तथा कोष इकट्ठा किया। यहाँ पर शोषक विदेशी था। यह बात आंदोलन चलाने के लिए काफी थी। एक राष्ट्रीय मुद्दा था, इसलिए राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न हिस्सा भी था।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में राष्ट्रीय आन्दोलन में उत्ताल-तरंग आयी। मजदूर वर्ग इससे अछुता न रहा। राजनीतिक चेतना और नव जागरण के लक्षण दीख पड़े। १९०५ में बंग-भंग के सवाल पर एक अभूतपूर्व राष्ट्रीय उभार पैदा हुआ। कलकत्ता स्थित भारत सरकार के प्रेस में, हाबड़ा की बर्न कम्पनी, कलकत्ता की ट्राम कम्पनी और कारपोरेशन के मजदूरों तथा ईस्ट इण्डिया रेलवे के गार्डों की हड़ताल हुई।

१९०६ में चटकलों में हड़तालों को देखकर ब्रिटिश शासकों के पत्र "टाइम्स ऑफ इण्डिया" ने आतंकित होकर लिखा कि राष्ट्रीय कांग्रेस के नौजवान कार्यकर्त्ता चटकल मजदूरों के अन्दर घुस रहे हैं और यूनियन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। विपिन चन्द्रपाल और चित्तरंजन दास चटकल मजदूरों की मांगों का समर्थन करते थे।

१९०७ में १ मई को बम्बई के रेलवे वर्कशाप के तीन हजार मजदूरों ने हड़ताल की। १७ नवम्बर से पूर्व भारत रेलवे के मजदूरों ने आसनसोल में हड़ताल की। यह हड़ताल इलाहाबाद और टुंडला तक फैल गई। अधिकारियों ने बंगाल-नागपुर रेलवे की एक ट्रेन चलाने और विपिन चन्द्र पाल समेत कुछ राजबन्दियों को इस ट्रेन पर आसनसोल से कलकत्ता ले जाने की कोशिश की, लेकिन २०० रेल मजदूरों ने रेलवे लाइन पर खड़े होकर यह चाल नाकाम कर दी। हड़ताल इतनी सफल रही कि कलकत्ता कोई ट्रेन नहीं आयी।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने 'केशरी' में "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" शीर्षक से लेख लिखा। वह गिरफ्तार कर लिये गये और ६ साल के सश्रम कारावास की सजा के साथ मॉडले जेल भेज दिये गये। बम्बई के दो लाख से अधिक मजदूरों ने छह दिनों की हड़ताल कर अपना विरोध प्रकट किया। जुलाई १९०८ में मजदूरों की ६ दिनों की ऐतिहासिक हड़ताल पर महान् लेनिन ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


प्रेरित होकर कहा–"भारतीय सर्वहारा वर्ग इतना परिपक्व हो चुका है कि वह वर्ग चेतना से लैश राजनीतिक संघर्ष छेड़ सके।"

प्रथम विश्व युद्ध के बाद १९१७ की रूस की अक्टूबर क्रांति ने राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और मजदूर आंदोलनों को काफी शक्ति प्रदान की। १९१९ से १९२२ तक व्यापक राष्ट्रीय उथल-पुथल का दौर रहा।

रौलट ऐक्ट के खिलाफ सामूहिक हड़ताल और जलियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद पूरे देश में रोष की लहर फैल गई। होम रूल लीग से १९१५ में शुरू होकर और १९१९ में रौलट सत्याग्रह के मार्ग से गुजरता हुआ, १९२०-२२ में असहयोग आन्दोलन और खिलाफत आंदोलन के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन उत्कर्ष की ओर बढ़ा। इस सन्दर्भ में १९१९ से १९२२ के बीच मजदूर वर्ग का आन्दोलन ताकत के साथ उठ खड़ा हुआ। जनवरी १९१९ में बम्बई में कपड़ा मिल मजदूरों ने हड़ताल की। १९१५-१९२० तक कानपुर, मद्रास, शोलापुर, अहमदाबाद आदि जगहों में हड़तालों का सिलसिला चला। १९१९ में ही २४ फरवरी से २६ मार्च तक एक महीने से ऊपर टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी के ४० हजार मजदूरों ने हड़ताल चलायी।

अपने वर्गीय अधिकारों की रक्षा के लिए मजदूर वर्ग ने १९२० में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (ऐटक) की स्थापना की। मजदूर वर्ग राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा में काफी हद तक शामिल हुआ। बम्बई के मजदूरों के साथ लोकमान्य तिलक का नजदीकी संबंध था। ऐटक की स्थापना के पीछे प्रेरित करने वाले लोगों में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। पंजाब के गरम दल के प्रसिद्ध नेता लाला लाजपत राय इसके पहले अध्यक्ष बने और दीवान चमन लाल महामन्त्री बने।

भारत में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय आदि ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने प्रथम बार पूँजीवाद को साम्राज्यवाद से जोड़कर देखा था। ऐटक की स्थापना अधिवेशन के पहले ही तिलक का देहान्त हो गया। उनके विचारों में मजदूर वर्ग की कारवाई की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ऐटक के दूसरे सम्मेलन में स्वराज के पक्ष में एक प्रस्ताव पेश करते हुए दीवान चमन लाल ने कहा था–"यह स्वराज पूँजीपतियों के लिए नहीं, मजदूरों के लिए होगा।"

कांग्रेस के गया अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में चित्तरंजन दास ने कहा था कि मजदूरों और किसानों को कांग्रेस को अपने हाथ में ले लेना चाहिए।

१९२० में भारत में मजदूर यूनियनों की संख्या १२५ थी, जिनमें २,५०,००० सदस्य शामिल थे। अधिकांश यूनियनों की स्थापना १९१९-२० के दौरान हुई थी। देश की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं में मजदूरों की उल्लेखनीय भागीदारी थी। पंजाब में दमन और गाँधीजी की गिरफ्तारी के बाद १९१९ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

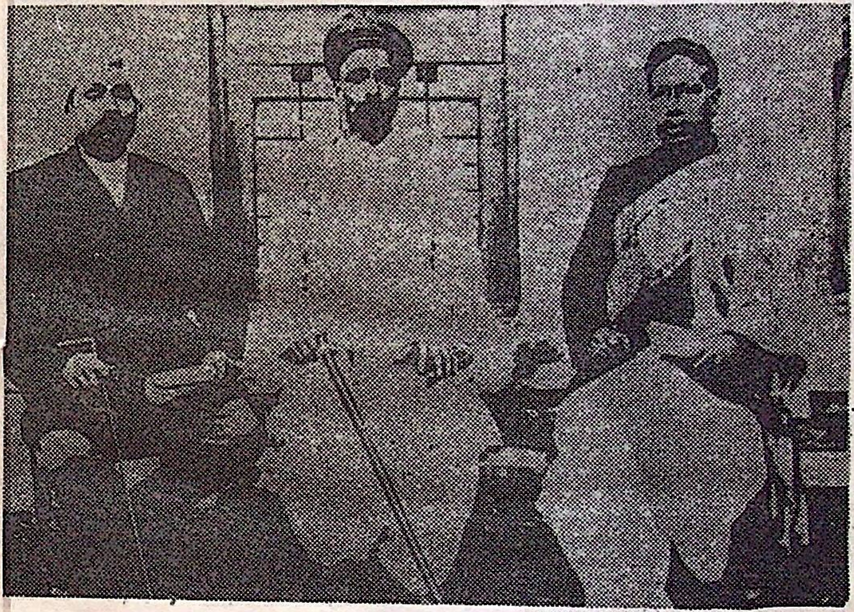

लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्रपाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


अहमदाबाद और गुजरात के अन्य भागों में मजदूरों ने हड़ताल कर दी। मजदूरों के आन्दोलन के कारण कलकत्ता और बम्बई भी हिल गये थे।

१९२१ के नवम्बर में प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत दौरे के समय सारे देश में बहिष्कार का आह्वान किया गया। मजदूरों ने सम्पूर्ण देश में हड़ताल कर इस आह्वान को सफल बनाया। असहयोग आन्दोलन की विफलता के बाद भारत में मजदूर वर्ग पर आधारित एक नयी राजनीतिक शक्ति उभरी। २६ दिसम्बर १९२५ को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। देश के ट्रेड यूनियन और साम्राज्यवाद विरोधी आंन्दोलन को एक नया आयाम मिला। १९२७-२८ में मजदूरों में एक नयी चेतना की सुगबुगाहट हुई। रेल मजदूरों और बम्बई एवं अन्य केन्द्रों में कपड़ा मजदूरों के अत्यन्त संगठित संघर्ष हुए। सिंगारवेल्लु चेट्टियार की अध्यक्षता में १९२३ में मद्रास में पहली बार मई दिवस मनाया गया। मजदूर वर्ग के प्रतिनिधियों ने कांग्रेस के अन्दर १९२१ के अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता की मांग प्रस्तुत करना आरम्भ कर दिया था। ३ फरवरी १९२८ को जब साइमन कमीशन बम्बई आया तो तीस हजार मजदूरों ने पूर्ण स्वाधीनता और आठ घंटे का काम के नारों के साथ उसका विरोध किया।

साइमन कमीशन के बायकाट आन्दोलन ने सारे देश में एक नयी फिज़ा पैदा कर दी। क्रांतिकारी नेता मजदूर आन्दोलन में सुधारवादियों को चुनौती देने लगे। वर्ग संघर्ष की विचारधारा के विरोध में 'ट्रस्टीशिप' की विचारधारा विफल हो गई। मजदूर-किसान पार्टियाँ पूर्ण स्वाधीनता का नारा बुलन्द कर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संग्राम का आह्वान कर रही थी। राष्ट्रवादी क्रान्तिकारी नौजवानों का संगठन सर पर कफन बांध कर स्वाधीनता संग्राम में उतर पड़ने को बेचैन था। दिसम्बर १९२८ में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पचास हजार से अधिक मजदूर कांग्रेस के पंडाल में घुस गये और 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव पारित किया। यह लक्ष्य बाद में १९२९ में लाहौर में कांग्रेस अधिवेशन में घोषित किया गया।

१९२९ में 'मेरठ षडयंत्र कांड' में कम्युनिस्ट और मजदूर नेताओं की धर-पकड़ के कारण कुछ वर्षों के लिए मजदूर आन्दोलन शिथिल पड़ गया। राष्ट्रीय आन्दोलन की दूसरी लहर १९३०-३४ के बीच सविनय अवज्ञा आन्दोलन के साथ ही मजदूर फिर से संघर्ष में उतर पड़े। ५ मई १९३० को महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के खिलाफ शोलापुर में ५० हजार से अधिक मजदूरों ने हड़ताल की। ७ और १६ मई के बीच शोलापुर में सरकारी कार्यालयों, कचहरियों, थानों और रेलवे स्टेशनों पर लोगों ने हमला किया और कुछ दिनों के लिए विद्रोहियों ने प्रशासन को अपने हाथ में ले लिया। शहर और कस्बे में राष्ट्रीय झंडा फहराया गया। विद्रोही शक्तियों को कुंचलने के लिए सरकार को मार्शल लॉ की घोषणा करनी पड़ी। कुछ मजदूरों की मौत और कुछ को लंबी सजाएँ सुनाई गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


दूसरे महायुद्ध के पूर्व एक तरफ देश के सारे मजदूर वर्ग की एकता कायम की गई और दूसरी तरफ साम्राज्यवाद विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों को एक मंच पर इकट्ठा करने का प्रयास किया गया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को राष्ट्रीय मुक्ति की शक्तियों का संयुक्त मोर्चा बनाने का प्रयास किया गया। यह प्रस्ताव रखा गया कि अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस, किसान सभा, छात्र संघ आदि कांग्रेस के अन्दर लाये जायें और कांग्रेस सबका महासंघ या संयुक्त मोर्चा बन जाये। कांग्रेस के सुधारवादी नेतृत्व ने इसे खतरनाक समझा और इसे नहीं होने दिया।

१९३७ के चुनावों में ऐटक और किसान सभा ने कांग्रेस के प्रत्याशियों का समर्थन किया। कांग्रेस के चुनाव घोषणा पत्र में श्रमिकों के झगड़ों को निपटाने और किसानों की मांगों का समर्थन करने की घोषणा की गई। चुनाव के बाद औद्योगिक विवाद अधिनियम द्वारा मजदूरों के हितों को पूंजीपति वर्ग की हितों के अधीन रखने की साजिश की गई। बम्बई के मजदूरों ने ७ नवम्बर १९३८ को अपना विरोध प्रकट करने के लिए एक दिन हड़ताल कर अपनी सामूहिक प्रतिक्रिया व्यक्त की। कांग्रेस सरकार ने मजदूरों पर गोली चलवाई, जिसमें दो मजदूर शहीद हुए। जमशेदपुर में धरना पर बैठे यूनियन के नेता हजारा सिंह को एक ट्रक के नीचे कुचल दिया गया। आसाम में दिगबोई के तेल मिल मजदूरों पर सेना द्वारा गोलियाँ चलाई गई, जिसमें ३ मजदूर शहीद हुए। मद्रास, मदुरै, बम्बई और दूसरी जगहों में भी मजदूरों के व्यापक संघर्ष हुए। ट्रेड यूनियन आन्दोलन में एक नया ज्वार १९३७-३८ की हड़तालों की लहर में देखा गया। कानपुर के कपड़ा मिल मजदूरों और बंगाल के चटकल मजदूरों की शानदार हड़तालें हुई।

द्वितीय विश्व युद्ध १ सितम्बर १९३९ में आरम्भ हुआ। ब्रिटेन ने ३ सितम्बर को जर्मनी के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की। उसके कुछ घंटों के अन्दर ही वाइसराय ने भारतीय जनता की राय लिए बिना भारत को युद्ध में शामिल कर दिया। २ अक्तूबर १९३९ को साम्राज्यवादी युद्ध के विरोध में लगभग ९० हजार मजदूरों ने काम बंद कर दिया। युद्ध के प्रयासों में किसी भी प्रकार के विघ्न को रोकने की इच्छुक सरकार द्वारा भयंकर दमन के बावजूद आर्थिक मुद्दों के लेकर भी देश के विभिन्न क्षेत्रों में कई हड़तालें हुई।

अगस्त १९४२ में राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी के तत्काल बाद 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के समर्थन में मजदूरों ने देश भर में बम्बई, अहमदाबाद, नागपुर, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, जमशेदपुर, मद्रास, इंदौर और बंगलौर आदि स्थानों पर हड़तालें की।

ये हड़तालें लगभग एक सप्ताह तक चली। टाटा स्टील प्लांट १३ दिनों तक इस नारे के साथ बंद रहा कि वे तब तक दोबारा काम नहीं करेंगे, जब तक देश में राष्ट्रीय सरकार नहीं बन जाती। अहमदाबाद में सूती कपड़ा मिल लगभग साढ़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तीन महीने हड़ताल पर रही। द्वितीय युद्ध के बाद मजदूर वर्ग की गतिविधियों में आश्चर्यजनक प्रगति हुई। राजनीतिक लहरों में बहुत बड़ी संख्या में मजदूरों ने भाग लिया। आजाद हिन्द फौज के मुकदमें के मुद्दों को लेकर असंख्य सभाओं और प्रदर्शनों में उनकी भागीदारी थी।

२५ अक्तूबर १९४५ को दक्षिण पूर्व एशिया दिवस मनाया गया। उस दिन बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी जन सभायें हुई, जुलूस निकाले गये और नारे बुलन्द किये गये 'साम्राज्यवादियों दक्षिण पूर्व एशिया से दूर हटो।'

बम्बई और कलकत्ता के गोदी मजदूरों ने उन जहाजों पर माल लादने से इन्कार कर दिया, जो दक्षिण-पूर्व एशिया के राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम को दबाने के लिए भेजे गये फौज का सामान और खाद्यान्न लेकर जा रहे थे।

१८ फरवरी १९४६ को रॉयल इंडियन नेवी के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। २२ फरवरी को नाविक सैनिकों के समर्थन में तीन लाख से अधिक मजदूर हड़ताल पर चले गये। अंग्रेज सिपाहियों ने मजदूरों और नागरिकों पर गोलियाँ चलायी। २४० से अधिक लोग मारे गये। कलकत्ता, करांची और सारे देश में इसी प्रकार की जन कार्रवाईयाँ हुई। कलकत्ता की कार्रवाई पर टिप्पणी करते हुए अमृत बाजार पत्रिका ने लिखा–साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में इतने अधिक मजदूरों के योगदान ने भारत में एक नयी परिस्थिति को जन्म दिया है। औपनिवेशिक शासन के अंतिम वर्षों में पूरे देश में आर्थिक मुद्दों को लेकर हुई हड़तालों की संख्या में असाधारण वृद्धि दिखाई दी। उसमें डाक-तार विभाग के कर्मचारियों की अखिल भारतीय हड़ताल सबसे अधिक विख्यात है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रत्येक मोड़ पर १९१९-२२ की पहली लहर, १९३० की दूसरी लहर, १९४२ की तीसरी लहर तथा १९४५-४६ की अन्तिम लहर में मजदूर वर्ग ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए शानदार भूमिका अदा की है। विद्रोही नौसैनिकों ने जब बम्बई के मजदूर वर्ग की आम हड़ताल की सहायता से आगे बढ़ना शुरू किया, तब अँग्रेजों ने संकेत को समझा, समझौता-वार्ता की, हमें विभाजित किया, दंगे आरंभ किये और अन्ततः १५ अगस्त १९४७ को चले गये। भारत स्वाधीन हो गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# जब चुनौती बन गया 'वन्दे मातरम्'

सन् १८५७ में पहली बार हमारे देश के लोगों ने करवट बदली थी । देश टुकड़े-टुकड़े में बटा था, फिरंगियों के चंगुल से अपने को आजाद कराने के लिए एक हो गया । कौमियत की बिजली सारे देश में दौड़ गई । बंगाल से लेकर पंजाब तक "फिरंगियों को मार भगाओ" की पुकार थी । सन् १९४२ की अगस्त क्रांति का नारा अंग्रेजों, "भारत छोड़ो" कोई नया नारा नहीं था । यह सन् सत्तावन के नारे की पुनरावृत्ति थी ।

सन् सन्तावन के बाद अंग्रेजों के एक छत्र राज्य को पहली चुनौती 'बन्दे मातरम' ने दी। 'वन्दे मातरम्" के पीछे भारत के नौजवानों की कुर्बानियों का शानदार इतिहास है । सन् सन्तावन में हमें निरस्त्रकर नपुंसक बनाने का प्रयास हुआ । स्कूल और कॉलेजों तथा पादरियों के जरिए हमारी संस्कृति पर आघात हुआ । हमारे बच्चों को उल्टा-सीधा इतिहास पढ़ाकर तथा अन्य गन्दे तरीकों से गुलामी का सबक दिया गया । मातृभूमि की वफादारी के बदले विदेशी हुकूमत के प्रति राज भक्ति की शिक्षा दी गई । "गौड सेव दी किंग" के गाने लादे गए । गाँव-गाँव में गोरे चमड़े का आतंक था । समाज में वही प्रतिष्ठित बना रह सकता था, जो अंग्रेज अफसरों का अपनी खुशामद के बल पर कृपा-पात्र हो । काँग्रेस की स्थापना हो चुकी थी, किन्तु वहाँ आजादी का प्रश्न नहीं, भारतीय नागरिकों की नौकरी का सवाल तय होता था । उस कायरतापूर्ण वातावरण में भारत के चंद नौजवानों ने आजादी का सपना देखा और राजभक्ति के दूषित वायुमंडल के विरुद्ध देशभक्ति के प्रति वफादारी का नारा—"वंदेमातरम्" बुलंद किया ।

बंकिमचन्द के 'आनन्दमठ' उपन्यास के पन्नों में ढँके इस शब्द को निकाल कर भारत के क्रान्तिकारी नौजवानों ने 'वंदेमातरम्' के नारे बुलन्द किये । एक ओर अँग्रेजों की विशाल साम्राज्यवादी शक्ति और दूसरी ओर खुदीराम बोस, चापेकर बन्धु, यतीन्द्र-मुखर्जी, पिंगले और ढिंगरा जैसे थोड़े से चुने हुए नौजवान बम, पिस्तौल और आतंक का सहारा लेकर मरघट में एक हरकत पैदा कर दी । आजादी के ये दीवाने फाँसी के तख्ते पर से भी अंतिम आवाज दी—'वंदेमातरम्' ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अंग्रेजों के लिए यह हौआ हो गया। देश में सनसनी सभी जगह फैल गई। तरह-तरह के आंदोलन छिड़ गए और निस्संदेह देश की मनोवृत्ति बदल गई। काँग्रेस पर भी इसका असर हुआ। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे उग्रवादी नेताओं को 'होमरूल' का नारा बुलन्द करने का अवसर मिला!

स्वतंत्रता संग्राम की पहली कतार के इन क्रांतिकारी तरुणों का त्याग रंग लाकर ही रहा। आरम्भ में लोग खुलेआम आजादी और वंदेमातरम् कहने में भी डरते थे। स्वदेशी आंदोलन ने इसे प्रोत्साहन दिया और सन् २१ के आंदोलन के समय 'वन्देमातरम्' मुख्य नारा बन गया और हमारा राष्ट्रीय गान बनकर घर-घर में व्याप्त हो गया।

कुछ गुमराह लोगों ने आगे चलकर 'वंदेमातरम्' को साम्प्रदायिक बतलाने की कोशिश की। यह सत्य है कि उन दिनों आजादी के जंग में हमारे शहीदों को धर्म से समुचित प्रेरणा मिली थी। वह जमाना ही वैसा था। १८५७ में हिंदू-मुसलमान की फौज, बिना एक-दूसरे की भावनाओं को चोट पहुँचाए एक ही साथ 'हर-हर, बम-बम' और अल्ला हो अकबर की पुकार मचाती थी। काकोरी के शहीदों में पंडित रामप्रसाद विस्मिल और असफाकउल्ला खाँ देश-भक्ति के जुर्म में एक साथ ही फाँसी पड़े थे। एक ने आजादी की शिक्षा गीता से ली थी, और दूसरे ने 'कुरान' से। सन् २१ के आंदोलन में 'वंदेमातरम्' और 'अल्ला हो अकबर' साथ-ही-साथ बोले जाते थे। उनमें धार्मिक सहिष्णुता थी। आज कुछ लोग वंदेमातरम् को सांप्रदायिक नारा बतलाने लगे हैं, यह पूर्णतः भ्रमात्मक है। यह हमारे स्वाधीनता संग्राम का राष्ट्रीय नारा है, जिसे हमारे शहीदों ने अपने रक्त से सींचा है।

क्रांतियों के इतिहास से पता चलता है कि जन आन्दोलन को एक सतह से दूसरी सतह पर ले जाने में नारों का विशेष महत्व है। वस्तु स्थिति के अनुसार नारे देना ही कुशल नेतृत्व का गुण है। 'वन्देमातरम्' के बाद दूसरा दौर 'इन्कलाव जिन्दाबाद' का आया।

सन् १९२२ में चौरी-चौरा कांड के कारण गांधीजी ने आन्दोलन वापस ले लिया। अहमदाबाद में हसरत मुहानी के पूर्ण आजादी के प्रस्ताव का गांधीजी ने विरोध किया। कांग्रेस की ओर से 'डोमिनियम स्ट्टेस' का ही आदर्श था। दूसरी ओर रूस की अक्तूबर क्रांति की लहर ने भारत के नौजवानों पर इन्कलाब की लहर और समाजवादी चेतना पैदा की। इन दो भिन्न परिस्थितियों से ही भारत में 'इन्कलाब जिन्दाबाद' की सृष्टि हुई, जिसे बुलंद करने का सेहरा प्रातः स्मरणीय शहीद भगत सिंह को मिला।

भगत सिंह को गांधी की नीति में विश्वास नहीं था। वे एक क्षण भी ब्रिटिश हुकूमत को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं थे। वह यह भी नहीं मानते कि आजादी भीख से मिला करती है। भगत सिंह ने भारत के नौजवानों को इन्कलाब का सन्देश दिया। फाँसी के तख्ते पर "इन्कलाब जिन्दाबाद" का नारा लगाया। सारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


देश में 'इन्कलाब जिन्दाबाद' क्रांति चिरंजीवी हो के नारे गूंजने लगे। भगत सिंह की लोकप्रियता भारतीय राजनैतिक गगन पर इतनी प्रखर हो उठी कि बड़ें-बड़े नेताओं का नाम भी कुछ दिनों के लिए ढँक गये। चारों ओर क्रांतिकारी लहर फैलने लगा। ब्रिटिश राज्य के बड़े-बड़े अफसर मारे जाने लगे। चटगाँव शस्त्रागार लुटा गया। कुमारी वीणा ने बंगाल के गर्वनर पर निशाना लगाया। वायसराय की ट्रेन पर डाइनामाइट की चोट दी गई। बंगाल से पंजाब तक क्रांतिकारी गतिविधियों का तांता बंध गया। एक-एक कर आजादी के नाम पर क्रांतिकारी नौजवान गोलियाँ और फाँसी का शिकार बनने लगे—चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव इत्यादि। वीर यतींद्र ने घुल-घुल कर जेल में प्राण दे दिए। भारतीय तरुणों के इस क्रांतिकारी जत्थों को कोरा आतंकवादी कहना बड़ा अन्याय होगा। उनके क्रांतिकारी संगठन हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के नाम से ही पता चलता है कि उन पर समाजवाद का पूरा असर था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि "इन्कलाब जिन्दाबाद" के पीछे भी हमारे इतिहास का वह हिस्सा है, जो शहीदों के खून से लिखा गया है। काँग्रेस के 'औपनिवेशिक स्वराज्य' को पूर्ण स्वाधीनता में बदलवाने में उन शहीदों के खून और इन्कलाबी नारों का बड़ा ही असर था। लाहौर काँग्रेस में अध्यक्ष के आसन से पंडित जवाहर लाल नेहरू को भी "इन्कलाब जिन्दाबाद" की उद्घोषणा करनी पड़ी। क़ाँग्रेस का दायां पक्ष इस पर खुश नहीं था, किन्तु हवा के रूख के विरुद्ध चलना असंभव था।

"इन्कलाब जिंदाबाद" हमारी राजनीति के नए युग का अग्रदूत बन गया। उसने नए समाजवादी विचारों और प्रगतिशील आंदोलनों का दरवाजा खोल दिया। बाएँ पक्ष में नए संगठन और कई पार्टियाँ बनने लगी। नौजवान भारत सभा, काँग्रेस समाजवादी पार्टी, रेडिकल डिमोक्रेटिक पार्टी, फारवर्ड ब्लॉक, किसान सभा, छात्र संघ, प्रगतिशील लेखक संघ आदि। सारे देश में मज़दूर और किसान आंदोलन फैल गया। बाएँ और दाएँ पक्ष में काफी कसमकस शुरू हुई। "किसान राज्य कायम हो" "मजदूर राज्य कायम हो" "जमींदारी प्रथा नाश हो" "पूँजीवाद नाश हो" "साम्राज्यवाद नाश हो" आदि नारे सारे देश और कांग्रेस को प्रभावित करने लगे। यद्यपि कांग्रेस नेतृत्व सामन्ती पूँजीवादी गठबंधन से अभी तक मुक्त नहीं हो सका था। फिर भी कांग्रेस नेतृत्व को अपने प्रस्तावों को शोषित-पीड़ित जनता की मांगों के आधार पर ढालने को मजबूर होना पड़ा।

दूसरे विश्व युद्ध के प्रारंभ के बाद ही वामपक्ष की शक्तियों ने और खासकर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने १९४० में रामगढ़ काँग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय समझौता विरोधी सम्मेलन का आयोजन कर यह घोषणा कर दिया कि अब 'जंगे आजादी' की घोषणा कर दो। महात्मा गांधी का ब्रिटिश सरकार से पूर्णतः मोह भंग नहीं हुआ था। उन्होंने वामपक्षी शक्तियों और कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं के दबाव पर भी उ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



समय आन्दोलन छेड़ने से इन्कार कर दिया। आगे चलकर व्यक्तिगत सत्याग्रह का नारा देकर सन्तोष कर लिया। अन्त में महात्मा गांधी का मोह भंग हुआ। ८ अगस्त १९४२ को बम्बई में काँग्रेस कार्य समिति ने गाँधीजी की राय से अँग्रेजों के तमाम दलीलों का पर्दाफाश करते हुए कांग्रेस महासमिति के लिए एक प्रस्ताव स्वीकृत किया। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के कार्यसमिति के प्रस्ताव की जानकारी प्राप्त होते ही दमन के लिए तैयार बैठी ब्रिटिश सरकार ने हमारे राष्ट्रीय नेताओं पर हमला बोल दिया। गाँधीजी समेत सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। सारे देश में नेताओं की गिरफ्तारी और दमन का दौरा शुरू हो गया। महात्मा गाँधी ने १९४२ की अगस्त क्रांति के लिए 'करो या मरो' 'आजादी या मौत' का नारा दिया था। नेतृत्वविहीन होने पर भी देश की जनता विशेषरूप से युवा वर्ग जुल्म और दमन के खिलाफ उठ खड़ा हुआ। देश से विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए सारे देश में तूफानी अभियान छिड़ गया।

इधर 'भारत छोड़ो' का नारा देकर काँग्रेसी नेता जेलों में चले गए, उधर "जय हिन्द, दिल्ली चलो" के नारे के साथ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारत को फौजी ताकत से आजाद कराने की कोशिश की। उन्होंने देश से बाहर 'आजाद हिन्द फौज' नामक एक राष्ट्रीय सेना का निर्माण किया और कुछ समय के लिए ही सही, 'स्वतंत्र भारतीय प्रजातंत्र' की स्थापना की, जिसे उस समय कई राष्ट्रों ने कबूल किया। आजाद हिन्द फौज ने अँग्रेजी राज को हटाने के लिए भारत पर हमला भी किया। लक्ष्मीबाई फिर से पैदा हुई। ढीलन, सहगल और शाहनवाज सामने आए और वर्मा के उस पुराने जेल की एक कब्र में सोए बहादुर शाह को कुछ काल के लिए शांति मिली। सुभाष को शायद उन्हीं के कब्र से 'जय हिन्द' की आवाज मिली। "इन्कलाब जिन्दाबाद" के बाद से लोकप्रिय नारा जयहिन्द का बन गया। आज दूर-दूर के गाँव में बच्चा-बच्चा 'जयहिन्द' बोलता नजर आता है। "जय हिन्द" के साथ जो हिम्मत, कुर्बानी, हिन्दू-मुस्लिम एकता और देशभक्ति की उत्कट भावना है, वह सभी साधारण भारतीयों पर जाहिर है। एक दूसरे को नमस्कार करने में भी लोग इसका प्रयोग करते हैं। "कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा, यह जिंदगी है कौम की, तू कौम पर लुटाए जा" आजाद हिन्द फौज का यह प्रयाण गीत उन दिनों हर भारतीय की जुबान पर थी। आजाद हिन्द फौज का रिहाई आन्दोलन और नौ सेना विद्रोह के बाद अंग्रेजों को भारत से जाने के लिए विवश होना पड़ा और १५ अगस्त १९४७ को हमारा देश आजाद हुआ।

"वन्देमातरम्" "इन्कलाब जिन्दाबाद" और "जय हिन्द" इन तीनों नारों का प्रादुर्भाव काँग्रेस प्लेटफार्म से नहीं हुआ। न खुदीराम बोस काँग्रेसी थे और न भगत सिंह। सुभाष को तो हमारे काँग्रेसी नेताओं ने बेइज्जती से बाहर निकाल फेंका था। फिर भी काँग्रेस और सारे मुल्क को इन नारों को अपनाना पड़ा। आजादी के बाद देश के सभी वामपक्षियों को एकबद्ध होने की अपील करते हुए स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने कहा था–"वन्देमातरम्" और "जय हिन्द" के बाद अब देश को एक नये नारे की जरूरत है–**'जय मजदूर' 'जय किसान'**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाएँ आगे बढ़कर भाग लेती रही है। जब पेशवा का पतन हुआ और कित्तूर पर संकट के बादल छाने लगे। अंग्रेजी साम्राज्यवाद का सर्वग्राही अजगर धीरे-धीरे कित्तूर की ओर बढ़ने लगा। कित्तूर की इतिहास प्रसिद्ध वीरांगना रानी चेन्नम्मा ने एक शानदार अध्याय का सृजन किया। दक्षिण भारत में चेन्नम्मा का अर्थ सुख-समृद्धि और वीरता की देवी होता है। कालान्तर में रानी चेन्नम्मा ने अपना यह नाम सार्थक सिद्ध किया।

देश का यह दुर्भाग्य था कि २० साल की अल्पायु में ही वह विधवा हो गई। उसे न केवल अंग्रेजों के विरुद्ध अपने राज्य की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड़ना पड़ा, बल्कि राजमहल के आन्तरिक कलह से भी लड़ना पड़ा। उसके पति राजा मल्लसर्ज की मृत्यु के पश्चात् बड़ी रानी का पुत्र शिवलिंग स्द्रसर्ज राजा बना। कुछ काल के बाद शिवलिंग की भी मृत्यु हो गई। उन्होंने परिवार का लड़का गोद लेना चाहा, पर अंग्रेजों ने उसे स्वीकार नहीं किया। इस पर रानी ने घोषणा कर दी–"कित्तूर मेरा है। मैं अपना कित्तूर किसी के हाथों लुटते नहीं देख सकती। रानी ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की कि कित्तूर एक स्वतंत्र राज्य है, अतः अंग्रेजों से उत्तराधिकारी के बारे में पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है। स्वतंत्र कित्तूर की रक्षा के लिए उन्होंने विदेशी सत्ता से युद्ध का विगुल बजाया। रानी चेन्नम्मा ने बचपन में ही तीर चलाना और घोड़े की सवारी करना सीख लिया था। वह बड़ी बहादुरी से स्वतंत्रता की रक्षा के लिए संघर्ष किया। अंग्रेजों की आधुनिक हथियारों से सज्जित सेना के समक्ष रानी चेन्नम्मा टिक नहीं सकी। अन्त में वे गिरफ्तार हो गई। रानी की इच्छा जब जेम्सन नामक एक अंग्रेज अधिकारी ने जानना चाहा तो रानी वीरतापूर्वक बोली–"मुँह मांगी मौत मिल रही है, और क्या चाहिए ?"

उसने फिर आग्रह किया कि आप का कम्पनी सरकार के लिए कोई संदेश हो तो कहिए, रानी ने निर्भयतापूर्ण शब्दों में कहा–"कम्पनी सरकार से कहना चेन्नममा की जिन्दगी समाप्त हो गई तो क्या, कल उसे फिर नया जीवन मिलेगा वह फिर अंग्रेजों से लड़ेगी। वह तब तक इसी प्रकार लड़ती रहेगी, जब तक हमारा देश स्वतंत्र नहीं हो जाता।"

२१ फरवरी १८२९ की शाम को उसे तोप से उड़ा दिया गया "कित्तूर की जय" तथा "भारत माता की जय" के साथ वह वीरगति प्राप्त की।

१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने जिस अद्भुत साहस और वीरता का परिचय दिया, उससे कोई भी भारतवासी अनभिज्ञ नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


आज भी झाँसी की रानी की अमर कथा भारतीयों के हृदय में उत्साह और वीरता का संचार करती है। सन् १८५७ के विद्रोह के असफल हो जाने पर भी अवध की बेगम ने अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण करना अस्वीकार कर दिया और अनेक प्रयत्न करने के पश्चात् भी अंग्रेज उन्हें बंदी बनाने में असफल रहे।

बाल विधवा महारानी तपस्विनी देवी ने त्रिचनापल्ली में अपने फौज को पुनर्गठित कर ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया। वेश और नाम बदल कर वे नाना साहब के साथ भी सक्रिय रही। अंग्रेजों ने इन्हें नजरबन्द कर लिया। छूटने के बाद गौरीशंकर पूजा उत्सव के बहाने नेपाल के सेनाध्यक्ष से मिलकर प्रसिद्ध जर्मन क्रुप्स हाउस की मदद से कपड़े के कारखाने खोल कर उसकी आड़ में हथियारों से भारतीय क्रांतिकारियों की मदद करती रही। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के प्रमुख सलाहकार खाडिलकर के सम्पर्क से तपस्विनी देवी कार्य करती रहीं। स्त्री शिक्षा के लिए भी इन्होंने महाकाली पाठशाला की स्थापना की।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की भांजी श्रीमती सरला देवी तेरह वर्ष की उम्र में १८८९ में मैट्रिक पास कर अरविन्द घोष, यतीन्द्रनाथ आदि क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आई। गुप्त रूप से घुड़सवारी आदि का प्रशिक्षण लेकर मैमन सिंह ढाका में 'सुहृद संघ' नामक क्रांतिकारी संगठन का गठन किया। पूरे बंगाल में १९०८ में इसकी १८ शाखाएँ थी। उन्होंने 'भारती' नामक एक गुप्त पत्रिका भी निकाली, जिसमें रानाडे, सिस्टर निवेदिता आदि के विचारों का प्रकाशन होता था।

सन् १८८९ के कांग्रेस अधिवेशन में दस महिलाएँ महिला प्रतिनिधि की हैसियत से भाग ली। इनमें स्वर्ण कुमारी, कादम्बरी, गांगुली, पंडित रमाबाई, काशीबाई कानेटकर, शर्बतीबाई विवेक, शांताबाई आदि प्रुमख थी। १९ अक्तूबर १९०५ को रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आह्वान पर 'राखी बन्धन' के नाम पर घर में एक समय चूल्हा न जलाकर ४०० महिलाओं ने वंग-भंग के विरोध में हुए प्रदर्शन में भाग लिया।

१९१७ में कलकत्ता काँग्रेस अधिवेशन में एनीबेसेंट को अध्यक्ष बनाया गया। एनीबेसेन्ट यद्यपि स्विस महिला थी, फिर भी उन्होंने भारत को ही अपना घर समझ लिया था। १९०४ में बनारस काँग्रेस अधिवेशन में गोपाल कृष्ण गोखले ने सरला देवी से ही 'बन्देमातरम्' का गान गवाया था। १९१७ के कलकत्ता अधिवेशन में सरला देवी ने अपना स्वरचित गान ओजपूर्ण स्वर में गाकर सारे हॉल को एक नये जोश से भर दिया था। १८ अगस्त १९४५ में इस महान देशभक्त महिला का निधन हो गया।

१९१९ के १३ अप्रैल को जलियांवाला बाग कांड में अनेक महिलायें मौत की शिकार बन गयी। कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने महिलाओं से कहा था—"महिलाओं उठो प्रत्येक घर को स्वतंत्रता आंदोलन का आश्रयदाता बना दो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


तिरंगा झंडा के निर्मात्री मैडम भीखा जी कामा ने १९०७ में पेरिस में हु दूसरे इन्टर नेशनल में भारत के राष्ट्रीय झण्डे को फहरा कर ब्रिटिश हुकूमत क चुनौती दी थी।

१९२४ में श्रीमती सरोजनी नायडू कॉंग्रेस की अध्यक्ष बनी तथा नमक सत्याग्रह में गांधी जी के साथ दांडी मार्च में भाग लिया और जेल गयी। १३ व की आयु से ही वे अंग्रेजी में कवितायें लिखने लगी थी। ये भारत कोकिला नाम से विख्यात थी।

१९२१, १९३० और १९३२ के आन्दोलनों में महिलाएँ स्वयंसेविका बनक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उस समय विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और माद द्रव्यों की दूकानों पर धरना देने में अपनी गिरफ्तारियाँ दी थी। महान् देशभक्त लीला नाग ने दीप्ति संघ की स्थापना कर लड़कियों को क्रांतिकारी आन्दोलन क ओर आकर्षित करने का काम किया। हरिपुरा कांग्रेस में सुभाष चन्द्र बोस ने इ काँग्रेस की महिला शाखा का प्रमुख नियुक्त किया।

श्रीमती विजयालक्ष्मी, स्वरूप रानी नेहरू, कमला नेहरू, रामेश्वरी नेहरू आ के त्याग और बलिदान मूर्त्तिमान प्रतीक हैं। कस्तूरबा गांधी का बलिदान हम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा। इसी तर श्रीमती सत्यवती देवी का स्वदेश प्रेम चिरस्मरणीय बना रहेगा। ये दोनों नारि अगस्त आन्दोलन में ही शहीद हुई थी। १९४२ के अगस्त क्रांति में आसाम १४ वर्षीय कनकलता जुलूस के आगे-आगे चल रही थी, सरकारी चेतावनी क उसने तनिक भी चिन्ता नहीं की। अन्त में गोली खाकर अपना नाम इतिहास अमर कर गयी। बम्बई की कुमारी ऊषा मेहता ने काँग्रेस रेडियो को जिस कुशल और दक्षता के साथ संचालन की, उसकी प्रशंसा सभी करते हैं। श्रीमती अरु आसफ अली १९४२ में बम्बई में गाँधी जी, कस्तुरबा और अन्य नेताओं के ब होने के बाद चौपाटी के मैदान में विशाल सभा का नेतृत्व किया। सभा समा होने के बाद्र वह लुप्त हो गयी और सरकार अन्त तक उनका पता न लगा सकी वह छिपकर अगस्त क्रांति का जिस सफलता के साथ संचालन किया, वह इतिह प्रसिद्ध है। अरुणा के हृदय की जलती हुई ज्वाला को देश ने अगस्त-क्रांति में देखा और वह अगस्त क्रांति की चिनगारी के रूप में देश भर में मशहूर हुई।

चटगाँव के क्रांतिकारी आंदोलन में महान् क्रांतिकारिणी कल्पनादत्त भूमिका को कौन नहीं जानता? वीनादास, सुहासिनी नेलीसेन आदि क्रांतिक महिलाओं ने अपनी युवावस्था देश की आजादी की लड़ाई में ही व्यतीत की। दु बाई ने चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह की क्रांतिकारी टोली में शानदार भूमि निभाई थी।

प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी किशोरी प्रसन्न सिंह की पत्नी सुनीती दे स्वाधीनता संघर्ष में ऐसी क्रांतिकारिणी महिला थी जो घुड़सवारी, छापेमारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्तूरबा गाँधी

सरोजनी नायडू

अरुणा आसफ अली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


माहिर थी, जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की नींद हराम कर रखी थी। १९३१ में बिहार की एक लड़ाकू महिला कुमारी गौरीदास के लिए बिहार बंगाल की खुफिया पुलिस परेशान रही। ब्रिटिश सरकार की नजर में वे एक खतरनाक महिला घोषित हो चुकी थी। पटना युवक संघ की वे संस्थापिका थी, जिसका सम्बन्ध गुप्त क्रांतिकारी आंदोलन से था।

स्वतंत्रता संग्राम में देश के विभिन्न जगहों में महिलाओं के संगठन बनने लगे थे। बम्बई में देश सेविका संघ, गुजरात में महिला स्वराज संघ, बंगाल में नारी सभा और स्त्री आत्मरक्षा समिति ने सामान्य नारियों को संघर्षशील बनाने में अग्रिम भूमिका निबाही।

राजकुमारी अमृत कौर, मणिबेन पटेल, सत्यवती, डा. सुशीला नायर, अनुसुईया किर्वे, हंसा मेहता, अनुस्वामीनाथन, लक्ष्मी सहगल, रुकमिणी लक्ष्मीपति, आबाडी बानो बेगम, उषा ताई डांगे, प्रभावती, सूचिता कृपलानी, हाजरा बेगम, रेणु चक्रवर्ती, इन्दिरा गांधी आदि महिला नेत्रियों का नाम आजादी के संघर्ष में, जन जागरण में और नारी जागरण में हमेशा चर्चित रहेगा।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज में रानी झाँसी रेजीमेंट संगठित हुई थीं, लक्ष्मी सहगल तथा अनुस्वामीनाथन रेजीमेंट की कप्तान थी। इनकी बहादुरी, बलिदान और त्याग को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के हर दौर में विभिन्न धाराओं से महिलायें जुड़ी रही हैं। १८५७ की क्रांति या सत्याग्रह आंदोलन और पिकेटिंग हो, सशस्त्र क्रांतिकारी कार्रवाई हो या आजाद हिन्द फौज की लड़ाई हो, सभी जगहों में महिलाओं ने अपनी वीरता और संघर्षशीलता का परिचय दिया है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका को हम किसी प्रकार भुला नहीं सकते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और साहित्यकार

सन् १४९८ ई० में समुद्री तट पर कालीकट में पहली बार एक पुर्तगाली जहाज आ लगा, जिसका नायक वास्कोडिगामा था। पुर्तगालियों ने व्यापार के उद्देश्य से अपनी कोठियां बनवानी शुरू की। फिर डच आये और अन्त में अँग्रेज आये। सन् १६०८ ई० में जहाँगीर की अनुमति प्राप्त कर सूरत में 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ने तम्बाकू के व्यापार के लिए कोठी खोली। औरंगजेब के बाद विशाल मुगल-साम्राज्य टूटने लगा और भारत की राजनीतिक अस्थिरता से लाभ उठाकर अंग्रेजों ने अपना सिक्का जमाना शुरू किया।

२३ जून, १७५७ ई० को सिराजुद्दौला को हराकर वे बंगाल के मालिक बन बैठे। सन् १७६४ में बिहार और उड़ीसा पर उनका आधिपत्य हो गया। सन् १७९९ ई० में टीपूसुल्तान को फाँसी देकर और सन् १८१८ ई० में मराठा को परास्त कर अंग्रेज भारत के शासक बन गये। अंग्रेजों ने हमारे देश की सम्पत्ति, जनशक्ति और साधनों का सहारा लेकर, लोगों में फूट डाल कर और अपने छल-छद्म से इस देश को गुलाम बना लिया। फिर भी अंग्रेजों की उस मनोवृत्ति और चेष्टा को चुनौती देने में सिराजुद्दौला, टीपूसुल्तान, हैदरअली, अहिल्या बाई, कित्तूर की रानी चेन्नप्पा, झाँसी की रानी लक्ष्मीवाई, नाना फड़नवीस, तात्याटोपे और बाबू कुंवर सिंह जैसे वीरों का नाम इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

अंग्रेजों की हुकूमत के खिलाफ जबरदस्त और व्यापक स्वतन्त्रता संग्राम सन् १८५७ ई० में राष्ट्रीय स्तर पर हुआ। बैरकपुर में मंगल पांडेय के वलिदान के बाद स्वतंत्रता की चिनगारी सारे देश में फैल गयी। १८५८ ई० की १२ फरवरी को सर जार्ज कार्नबेल ने 'हाउस ऑफ कामन्स' में कहा था कि १८५७ ई० का विद्रोह 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' की सरकार के विरुद्ध था, जिससे भ्रष्ट, धोखेबाज और लालची सरकार की कोई दूसरा मिसाल नहीं मिलता।

१८५७ के विद्रोह को बेरहमी से कुचल देने के बाद भी भारत में स्वाधीनता के लिए भीतर-ही-भीतर सुलगती हुई आग को अंग्रेज दबा नहीं सके। स्वाधीनता के लिए देश जाग उठा था और इस जागरण में हमारे कवि, लेखक, विचारक और साहित्यकारों की बड़ी भूमिका है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ने इतिहास में बड़े फेर-बदल, उतार-चढ़ाव देखें हैं और उसमें विभिन्न शक्तियों की अलग-अलग भूमिकाएँ रही है। स्वतन्त्रता संग्राम केवल राजनीतिक मोर्चे पर ही नहीं लड़ा गया, उसके अनेक मोर्चे थे—आर्थिक,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सांस्कृतिक, सामाजिक, साहित्यिक और वैचारिक सभी को एक साथ देखने पर ही यह स्पष्ट और पूर्ण होता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से माना जाता है। यह संयोग ही है कि भारतेन्दु के निधन के बाद ही उसी वर्ष १८८५ में कांग्रेस की स्थापना हुई। भारतेन्दु के तिरोभाव और कांग्रेस के आविर्भाव में लगभग एक वर्ष का अन्तर है। भारतेन्दु का निधन १८८५ ई० की जनवरी में और कांग्रेस की स्थापना दिसम्बर में हुई। इस अन्तर को ध्यान में रखना जरूरी है, क्योंकि बहुत सारे लोग स्वतंत्रता संग्राम का प्रारम्भ कांग्रेस के आविर्भाव से ही जोड़ते हैं। सत्य तो यह है कि साहित्य में स्वतंत्रता-आन्दोलन का आरम्भ पहले ही हो चुका था। यही साहित्य की अग्रगामिता और साहित्यकार की क्रान्तिदर्शिता है।

भारतेन्दु ने विकास का मूल आधार भाषा को माना है। उन्होंने यह भली भाँती समझा था कि विदेशी भाषा के द्वारा प्राप्त ज्ञान न तो सभी के लिए सुलभ हो सकता है और न स्वतंत्र चिंतन का साधन बन सकता है। यही कारण है कि उन्होंने आदर्श-वाक्य के रूप में कहा कि–

**'निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल'**

भारतेन्दु और उनके समकालीन लेखकों ने देश की अन्य समस्याओं पर भी ध्यान दिया। कवि भारतेन्दु का यह कथन कि–

**''अंग्रेज राज सब सुख साज सजै अति भारी,**
**पै सब धन विदेश चली जात इहै अतिख्वारी।''**

आर्थिक शोषण का कितना मार्मिक सूत्र है। उनकी एक अन्य मुकरी भी वैसी चुटीली है–

**''भीतर-भीतर सब रस चूसै, हंसि-हंसि के तन-मन-धन चूसै;**
**जाहिर बातन में अति तेज-क्या सखि साजन ?—ना अंग्रेज।''**

अपनी ''तृष्यंताप'' शीर्षक कविता में श्री प्रताप नारायण मिश्र ने आर्थिक स्थिति का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है–

**मंहगी और टिकस के मारे हमहिं क्षुधा पीड़ित तन छाम**
**साग-पात लौ मिलें न जीभरी, लैबे वृथा दूध को नाम**
**लैसन इंकम, चुंगी, चंदा, पुलिस अदालत बरखा छाम**
**सबके हाथन असन बसन जीवन संशयमय रहत मुदाम**

इन सब के कारण भोजन, वस्त्र, जीवन तक संशय में पड़ा रहता है। श्री बालमुकुन्द गुप्त ने देशवासियों को उद्बोधित करते हुए कहा–

**अपना बोया आपहिं खाएँ, अपना कपड़ा आप बनाएँ,**
**माल विदेशी दूर भगाएँ अपना चरखा आप चलाएँ।**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


विदेशी वहिष्कार और स्वदेशी अंगीकार की बात तब की थी, जब इसकी चर्चा भी कहीं नहीं थी।

बालमुकुन्द गुप्त का निधन १९०७ में ही हो चुका था और महात्मा गाँधी १९१५ में अफ्रीका से भारत आए।

स्वाधीनता की भावना भारतेन्दु युग में हिन्दी कविता में विभिन्न रूपों में व्यक्त हुई है।

भारतेन्दु की 'कवि-वचन-सुधा', बाल कृष्ण भट्ट की 'हिन्दी प्रदीप' प्रतापनारायण मिश्र की 'ब्राह्मण' तथा बदरी नारायण चौधरी की 'आनन्द कादम्बिनी' आदि पत्रिकाओं में तदयुगीन स्वाधीनता की चेतना भली-भाँती प्रकट हुई है।

उन्नीसवीं शताब्दी की हिन्दी काव्यधारा की गतिविधि की इस चर्चा से स्पष्ट हो जाना चाहिए कि राजनीति से साहित्य प्रेरित नहीं हुआ, बल्कि साहित्य ने ही सक्रिय राजनीति की भूमिका तैयार की।

विचार साहित्य ने दिया, राजनीति ने उसे व्यवहार में उतारा। वैचारिक क्रांति हमेशा पहले हुई है और साहित्य के द्वारा ही वह व्यक्त हुई है। हिन्दी काव्य में स्वाधीनता की भावना दो रूपों में स्पष्ट है–

प्रथम–देश और संस्कृति का गौरव-गान और दूसरा वर्त्तमान के प्रति क्षोभ। "प्रेमधन" के शब्दों में–

**"जय जय भारत भूमि भवानी !**
**जाकी सुजस पताका जग के**
**दसहूँ दिशा फहरानी !"**

जहाँ इन पंक्तियों में देश और संस्कृति के सुखद सुन्दर गान हैं, वहाँ भारतेन्दु की इन पंक्तियों में–

**"सबके पहले जेहि ईश्वर धन बल दीन्हीं,**
**सब से पहले जेहि ईश्वर सभ्य विधाता कीन्हीं,**
**अब सबसे पीछे सोई परत लखाई।"**

"आबहु सब मिलि रोबहु भारत भाई" आदि में वर्त्तमान के प्रति क्षोभ व्यक्त होता है।

भारतेन्दु काल में स्वतंत्रता का जो शंखनाद हुआ, वह उतरोत्तर फैलता गया और अन्ततः एक महा नाद में परिणत हो गया, जिससे सारा वातावरण गूंज उठा। बंकिमचन्द्र का "बंदेमातरम्" और इकबाल का "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" सारे देश में राष्ट्रगीत बन गया। श्याम लाल 'पार्षद' का झण्डा-गीत भी सार्वदेशिक बन चुका था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

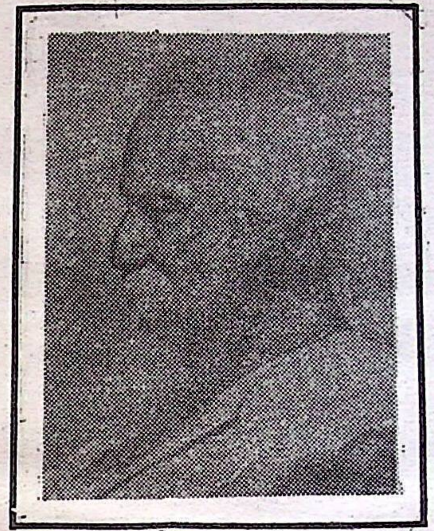

रविन्द्र नाथ टैगोर

प्रेमचन्द्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी, गया प्रसाद शुक्ल सनेही, रूप नारायण पांडेय, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', सियाराम शरण गुप्त, सोहन लाल द्विवेदी, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद, माखन लाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' शिवमंगल सिंह 'सुमन', जयशंकर प्रसाद, मोहन लाल महतो 'वियोगी', गोपाल सिंह 'नेपाली', सुभद्रा कुमारी चौहान, बंशीधर शुक्ल जैसे कवि, इकबाल, असमल लखनवी, सागर निजामी, अलफात हुसैन 'हाली' जमीन मजहरी, साहिर लुधियानवी, मख्दुम मोहीउद्दीन, फैज जैसे शायर, हरिकृष्ण 'प्रेमी' जैसे नाटककार, 'प्रेमचन्द, यशपाल और कृशनचन्द जैसे कथाकार इस परम्परा की ऐसी दुर्लभ कड़ियां हैं, जिनके स्वर ने महानाद की निरन्तरता प्रदान की। 'दिनकर' और 'प्रभात' सरकारी सेवा में थे, तब भी उनकी कविताएँ राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत थी। मैथिली शरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन आदि तो साहित्य के साथ ही स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ें रहे।

लेखकों में राष्ट्रीय स्तर पर तिलक, अरविंद और गणेश शंकर विद्यार्थी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम को अपनाया। मौलाना आजाद ने भी 'अलहिं लाल' नामक पत्र निकाला था।

देवव्रत शास्त्री, रामवृक्ष बेनीपुरी, लक्ष्मी नारायण सुधांशु, मुरली मनोहर प्रसाद आदि बिहार के पत्रकारों में अग्रगण्य थे। 'नवशक्ति' 'योगी' 'जनता' आदि के सम्पादक कई बार सरकार के कोप-भाजन भी बने।

छोटे-बड़े कवियों की संख्या तो सैकड़ों में है, जिनके काव्य या लोक-भाषाओं के गीत आजादी की भावना से ओत-प्रोत थे।

प्रेमचन्द अपनी रचनाओं में उस युग का ज्वलन्त चित्र उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से उपस्थित कर रहे थे। दिनकर की 'हिमालय के प्रति' कविता तरूणों को कंठाग्र थी। 'विपथगा' 'नई दिल्ली' जैसी कविताओं का प्रभाव भी कम नहीं था। स्वतंत्रता-संग्राम की तैयारी भारतेन्दु-युगीन कविताओं से हुई। द्विवेदी-युगीन कविताओं से उसकी अग्नि प्रज्चलित हुई और वर्त्तमान युग की कविताओं को स्वाधीनता समर के महान् लक्ष्य को पूरा करने का श्रेय है। स्वतंत्रता संग्राम में बन्दी जीवन बिताकर कई साहित्यकारों ने बीर सेनानियों में गौरवशाली स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय जन जागरण और स्वतंत्रता संग्राम में हमारे सहित्यकारों की गौरवशाली भूमिका को सदा आदर के साथ स्मरण किया जायेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

भारत में राजनीतिक पार्टियों के युग का सूत्रपात करनेवाली पहली राजनीतिक पार्टी, पूँजीपति वर्ग की पार्टी-भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस थी। उसका जन्म १८८५ में हुआ। पूँजीपति वर्ग की पार्टी, काँग्रेस के जन्म के ४० वर्षों के बाद मजदूर वर्ग की पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हुआ। काँग्रेस प्रारंभिक ३४ वर्षों तक अनुनय-विनय और प्रार्थना करने वालों के एक मंच के रूप में काम करती रही। उसका वार्षिक अधिवेशन होता था, प्रस्ताव पास होते थे और ब्रिटिश हाकिमों के सामने शिष्टमंडल ले जाने की व्यवस्था होती थी।

रूस की महान् अक्तूबर समाजवादी क्रांति ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव डाला। अक्तूबर क्रांति से पहले भारत में पूर्ण आजादी का स्पष्ट चित्र नहीं था। १९१८ में मांटेग्यूचेम्सफोर्ड रिपोर्ट में, जो भारत की आजादी की ललक को मात्र चंद संवैधानिक सुधारों में ही समेट कर भूला देना चाहती थी, अत्यन्त चिन्ता के साथ उल्लेख किया है–"भारत में रूस की क्रांति को निरंकुश तानाशाही के ऊपर विजय के रूप में समझा जाता है–इसने भारतीय राजनीतिक आकांक्षाओं को एक प्रचंड शक्ति प्रदान कर दी है।"

हमारी आजादी की लड़ाई में अक्तूबर क्रांति की सफलता से एक नयी शक्ति पैदा हुई। ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारत में बोल्शेविक खतरे से भयभीत था। उसे रोकने के लिए गुप्तचर विभाग ने १९१९ में एक "वोल्शेविक विभाग" खोला था। भारत में उभरते क्रांतिकारी आन्दोलन को दबाने के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने रौल्ट एक्ट (१९१९) बनाया था। इसके विरोध में अप्रैल १९१९ को देशव्यापी हड़ताल हुई। जालियाँवाला बाग हत्याकांड (१३ अप्रैल १९१९) ने आग में घी का काम किया।

भारत के राजनीतिक मानचित्र पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के आने के पहले ही जुझारू देश भक्तों को पेशावर और कानपुर षडयंत्र केश के मुकदमों में घसीटा गया था। पेशावर षडयंत्र केश के पहले मुकदमों का फैसला ३१ मई १९२२ को सुनाया गया था। इन मुकदमों में १५ कम्युनिस्टों को कड़ी सजा दी गई थी। उन पर अभियोग था कि वे कम्युनिस्ट थे और ब्रिटिश हुकूमत को सशस्त्र क्रांति के जरिये उखाड़ फेंकने का षडयंत्र कर रहे थे। पेशावर षडयन्त्र के मुकदमें में फिरोजुद्दीन मनसूर, अब्दूल मजीद, महम्मद अकबर, गुलाम हुसैन, रफीक अहमद, मो० रफीक और फजल इलाही कुर्बान आदि शामिल थे। पेशावर षडयंत्र केश के बाद कानपुर बोल्शेविक षडयंत्र के नाम २१ फरवरी १९२४ को गवर्नर जनरल ने एक दूसरा मुकदमा चलाने का हुक्म दिया। कानपुर बोल्शेविक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



षडयंत्र केश में श्रीपाद अमृत डांगे, मुजफ्फर अहमद, शौकत उस्मानी और नलिनीदास गुप्त को चार-चार साल की कड़ी सजा दी गई। ब्रिटिश शासकों की तरफ से मुख्य आरोप था कि भारत से ब्रिटिश हुकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए कम्युनिस्ट मजदूरों को संगठित कर रहें हैं। कांग्रेस के अन्दर के क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों और गरम दल वालों के साथ दे रहे हैं तथा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की एक शाखा भारत में खोलने की कोशिश कर रहे हैं।

ब्रिटिश शासकों ने कम्युनिस्ट विचार धारा को भारत से दूर रखने का पूरा प्रयास किया, किन्तु उनकी सारी कोशिशें विफल रहीं। उनकी सारी घेराबन्दी को तोड़कर यह विचारधारा भारतवासियों के बीच पहुँची। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक और गहरे होते जाने का अर्थ था, अपनी स्वाभाविक प्रक्रिया में राष्ट्रीय आन्दोलन से अभिन्न रूप से जुड़े हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों में कम्युनिस्ट समूहों का उदय। १९२१ और १९२४ के बीच बम्बई, कलकत्ता, लाहौर, मद्रास और कानपुर जैसे औद्योगिक केन्द्रों में छोटे-छोटे कम्युनिस्ट समूह कायम होते गये।

कम्युनिस्ट सदस्यों के उदय के साथ ही भारतीय कम्युनिस्टों ने काँग्रेस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का कार्यक्रम और प्रस्ताव पेश करना शुरू किया। दिसंबर १९२१ में काँग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में कम्युनिस्टों की इस माँग पर विवाद हुआ था कि भारत के लिए "पूर्ण स्वाधीनता" की माँग करनी चाहिए। मौलाना हसरत मोहानी ने अपने भाषण में पूर्ण स्वतंत्रता का जोरदार समर्थन किया था। १९२२ में कांग्रेस के गया अधिवेशन में मद्रास के कम्युनिस्ट मयालापुरम सिंगारवेलु चेट्टियार ने कम्युनिस्टों के प्रतिनिधि की हैसियत से अपने भाषण में पूर्ण स्वाधीनता की माँग पेश की।

भारत के छोटे-छोटे कम्युनिस्ट समूहों का जन्म ऐसी परिस्थिति में हुआ, जब गाँधी ने १९२२ में चौरी-चौरा काण्ड के बाद संघर्ष को रोक दिया था। राष्ट्रीय संघर्ष को पराजय का झटका लग चुका था। निराश तथा खिन्न भारतीय नौजवान क्रांतिकारी संघर्ष की सफल विधियों की तलाश कर रहे थे। रूस की महान् अक्तूबर समाजवादी क्रांति की सफलता ने उन्हें प्रेरित किया।

भारतीय कम्युनिस्टों ने अपने जन्म के साथ ही इंडियन नेशनल काँग्रेस को सुधारवाद के दलदल से निकाल कर क्रांतिकारी दिशा में ले जाने की कोशिश की। उन्होंने काँग्रेस अधिवेशनों के सामने पूर्ण स्वाधीनता का कार्यक्रम पेश किया। १९२१ से हर अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता को अपना लक्ष्य घोषित करने के लिए संघर्ष किया। इस तरह भारत की राजनीति में कम्युनिस्टों का प्रवेश राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में एक नयी क्रांतिकारी शक्तियों का प्रवेश था। २६ दिसम्बर १९२५ को कानपुर में विभिन्न कम्युनिस्ट समूहों को मिला कर जब भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई, तब उसकी भूमिका और असरदार हो गयी। १९२६ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


२८ के बीच में मजदूर किसान आन्दोलन और राजनीतिक अभियान ने राष्ट्रीय आंदोलन में वामपंथी विचारों का असर बढ़ाया।

साइमन कमीशन का वहिष्कार करने का प्रस्ताव मद्रास कांग्रेस अधिवेशन में कम्युनिस्ट प्रतिनिधियों ने पेश किया था। यह प्रस्ताव उमंगपूर्ण वातावरण में स्वीकृत हुआ। १९२८ में 'साइमन वापस जाओ' का नारा पूरे देश में गूंज उठा। साइमन कमिशन के विरुद्ध जन प्रदर्शनों में मजदूर वर्ग ने अग्रणी भूमिका निभायी तथा ट्रेड यूनियनों की जुझारू चेतना बढ़ती गयी। कम्युनिस्ट प्रभाव को रोकने के प्रयास से १९२९ के मार्च में औपनिवेशिक प्रशासन ने एक बड़ा प्रहार किया। देश के चुने हुए ३३ कम्युनिस्ट एवं ट्रेड यूनियन नेता गिरफ्तार किये गये और उनपर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ षडयंत्र करने के अभियोग लगाये गये। इतिहास प्रसिद्ध मेरठ षडयंत्र केश का यह मुकदमा चार साल तक चलता रहा। कम्युनिस्टों ने इन मुकदमों को बड़ी कुशलता से ऐसे मंच के रूप में उपयोग किया जिससे भारत में औपनिवेशिक लूट बेपर्द हुआ और वैज्ञानिक समाजवाद तथा कम्युनिस्ट विचारों का जोरदार प्रचार हुआ। ८ अप्रैल १९२८ को सरदार भगत सिंह ने अपने साथियों के साथ दिल्ली काउंसिल में बम फेंका। बम फेंकने का उद्देश्य किसी को मारना नहीं था, बल्कि यह बहरे को सुनाने के लिए जोरदार धमाका था जैसा कि बम के साथ फेंके गये पर्चे में कहा गया था। भगत सिंह, और उनके साथी, लेनिन और मार्क्सवाद के प्रति आकर्षित थे। भगत सिंह के बहुत से साथी बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये, उनमें से एक अजय कुमार घोष लम्बे काल तक पार्टी के महासचिव भी रहे।

१८ अप्रैल १९३० को हमारे क्रांतिकारियों ने चटगाँव शस्त्रागार पर हमला बोल दिया। ब्रिटिश पुलिस और भारतीय क्रांतिकारियों के बीच सीधी टक्कर हुई। इस टक्कर में १४ क्रांतिकारी मारे गये। चटगाँव शस्त्रागार कांड स्वतंत्रता आंदोलन की अत्यन्त सनसनी खेज घटनाओं में से एक घटना है। इसके अधिकांश क्रांतिकारी बाद में लेनिन और मार्क्सवाद के प्रति आकर्षित हुए तथा वे कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गये। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के भूतपूर्व महासचिव का० पूरनचन्द्र जोशी ने चटगाँव शस्त्रागार कांड से जुड़ी कल्पना जोशी और अन्य क्रांतिकारियों के मार्क्सवादी हो जाने की घटना को लिखते हुए कहा है कि–"उनकी अपनी कहानी पढ़ना ही हमारे राष्ट्रीय आंदोलन के एक जीवन्त चरण को समझने के बराबर है। यह क्यों हुआ कि चौथे दशक में अधिकांश नजरबन्द क्रांतिकारी कैदी कम्युनिस्ट बन गये। हमारी पार्टी के झंडे के नीचे आना उनके लिए एक ही साथ आसान और कठिन कदम था।"

१९२९ में भारत के तत्कालीन वाइसराय लार्ड इर्विन ने कहा था कि–"भारत में कम्युनिस्ट सिद्धांतों का प्रसार बेचैनी पैदा करने वाला और चिन्ताजनक है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरठ षड्यन्त्र के बंदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



भारत के संबंध में १९२९-३० के वार्षिक सरकारी प्रतिवेदन में दर्ज है–"खासकर बड़े-बड़े औद्योगिक शहरों में कम्युनिस्ट प्रचार और प्रभाव की वृद्धि से अधिकारियों में चिन्ता व्याप्त है।" सन् १९३०-३२ के संघर्षों में भाग लेनेवाले कई प्रमुख लोग कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। डाण्डी मार्च में भाग लेनेवाले जयन्ती पारिख, पेशावर में गढ़वाली बटालियन के विद्रोही नेता चन्द्रसिंह गढ़वाली, देशी राज्यों की जनता के एक प्रमुख नेता बाजुभई शुक्ल आदि पार्टी की कतार में शामिल हुए। पंजाब में गदर पार्टी के नेता कीर्ति पार्टी बनाकर काम करते रहे और बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए।

जुलाई १९३४ में साम्राज्यवादी अंग्रेज शासकों ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को गैर कानूनी घोषित कर दिया। फिर भी कांग्रेस और कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के भीतर रहकर कम्युनिस्टों ने मजदूरों और किसानों के संघर्षों को तेज किया और राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाया।

१९३६ में अखिल भारतीय किसान सभा, अखिल भारतीय छात्र फेडरेशन तथा प्रगतिशील लेखक संघ को संगठित करने में कम्युनिस्टों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन संगठनों ने स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक बनाने में ऐतिहासिक भूमिका अदा की। फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन में कम्युनिस्टों ने संविधान सभा हासिल करने के लिए संघर्ष करने का स्पष्ट प्रस्ताव पेश किया था तथा आजादी के लिए संघर्ष करने वालों के नाम 'उमड़ता घुमड़ता तूफान' शीर्षक से एक अपील जारी की थी।

१९३८ की जनवरी में नेशनल फ्रन्ट (अंग्रेजी में) पार्टी के मुखपत्र के रूप में प्रकाशित हुआ। औद्योगिक मज़दूरों की हड़तालें और किसानों के प्रचण्ड आंदोलन का यह दौर था। इस अवधि में कांग्रेस की विभिन्न कमिटियों में कम्युनिस्ट महत्वपूर्ण कार्यकारी पदों के लिए निर्वाचित हुए। अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी में इन दिनों कम्युनिस्टों की संख्या लगभग २० थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वतंत्र राजनीतिक शक्ति के रूप में और राष्ट्रीय आंदोलन के अंग के रूप में, दोनों ही रूप में काम किया। कांग्रेस के अन्दर वह साम्राज्यवाद विरोधी समस्त वर्गों का एक राष्ट्रीय मोर्चा बनाने के लिए काम करती रही। वह जनता के विभिन्न भागों के वर्गीय जन-संगठनों–ट्रेड यूनियनें, किसान सभाएँ, छात्रों, नौजवानों, लेखकों आदि के संगठनों के निर्माण में बड़ा योग दिया।

सुभाषचन्द्र बोस की अध्यक्षता में १९३८ में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने एक घोषणा पत्र जारी किया था। कांग्रेस के भीतर वामपंथी शक्तियों का समन्वय कर कम्युनिस्टों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता और एकता के लिए भरपुर प्रयास किया। १९३९ में त्रिपुरी कांग्रेस में पट्टाभिसीतारमैया के मुकाबले सुभाषचन्द्र बोस का भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने समर्थन किया। गांधीजी के तीव्र विरोध के बावजूद सुभाषचन्द बोस १५७५ मतों से पुनः निर्वाचित हुए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


गोविंदवल्लभ पन्त के प्रस्ताव का सहारा लेकर गांधीजी की राय से ऐसी कार्यकारिणी बनी, जिसके साथ सुभाष बाबू चल नहीं सके और उन्हें मजबूर होकर त्यागपत्र देना पड़ा।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, फारवर्ड ब्लाक और किसान सभा एवं अन्य वामपंथी दलों के प्रतिनिधियों को लेकर एक लेफ्ट काँसोलिडेशन कमिटी गठित की गई, जिसके संयोजक किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती बनाये गये।

१ सितम्बर १९३९ को हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण किया। भारतीय जनता के किसी भी प्रतिनिधि से सलाह लिए वगैर ब्रिटिश शासकों ने भारत को भी एक युद्धरत राष्ट्र घोषित कर दिया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने युद्ध का और युद्ध में भारत को शामिल किये जाने का विरोध किया। १९३९ के अक्तूबर में गैर कानूनी कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिट ब्यूरो ने यह साफ घोषणा की–"लड़ाई से संकट का क्रांतिकारी ढंग से उपयोग करके ही राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करनी होगी।" पार्टी ने नारा बुलन्द किया–"यह लड़ाई साम्राज्यवादी, हम न देंगे एक पाई, हम न देंगे एक भाई। युद्ध के खिलाफ विश्व में मजदूरों की पहली हड़ताल बम्बई में हुई। इस दौर में भी कम्युनिस्टों को भयंकर दमन का मुकाबला करना पड़ा।

२२ जून १९४१ को जब हिटलरी फासिस्ट ताकतों ने सोवियत संघ पर हमला किया, तब पार्टी ने युद्ध के चरित्र में हुए परिवर्तन को नोट किया। विश्वयुद्ध अब वास्तव में पूरी तरह फासिस्ट-विरोधी जनयुद्ध में परिणत हो गया। १९४२ के आंदोलन के पूर्व ही ७०० कम्युनिस्ट विभिन्न जेलों में बन्द थे। कय्यूर (मालावर) के ४ नौजवान कम्युनिस्टों को २९ मार्च १९४३ को फाँसी दी गई। १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने वाले सैकड़ों बहादूर कार्यकर्ता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए।

द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ। हिटलर का विश्व विजय का सपना चूर हो गया। युद्धोत्तर क्रांति की लहर फैलने लगी। आजाद हिन्द फौज के बंदियों की रिहाई और सन् १९४६ में नौसैनिकों के देशभक्ति पूर्ण विद्रोह के समर्थन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने शानदार भूमिका अदा की। तैलंगना का मुक्ति संग्राम और बंगाल तेभागा आंदोलन को संगठित और विकसित करने में कम्युनिस्ट अगली कतार में थे। मजदूरों का संघर्ष तेज हो रहा था। १९४५ में ८ हड़तालें हुई, जिनमें ८ लाख मजदूरों ने भाग लिया। १९४६ में २ हजार से अधिक हड़तालें हुई, जिनमें लगभग २० लाख मजदूरों ने भाग लिया।

किसानों के आन्दोलन, मज़दूरों का संघर्ष और देश में बढ़ती क्रांतिकारी स्थिति के कारण अँग्रेज उपनिवेशवादियों के लिए कोई विकल्प नहीं रह गया था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



क्रांतिकारियों की शक्तियों को बढ़ते देख कांग्रेस और मुस्लिम लीग के साथ समझौता कर अंग्रेजों को भारत से विदा लेना पड़ा । इस प्रकार १५ अगस्त १९४७ में देश स्वाधीन हुआ । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी स्वतंत्रता संग्राम में अपने कार्यों, अपनी भूमिका और अपनी सरगर्मियों पर उचित ही गर्व कर सकती है । अपने जन्मकाल से १९४६ के नौसेना विद्रोह तक भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वतंत्रता संग्राम में गौरवशाली भूमिका अदा की है ।

साम्राज्यवाद ने शुरू से ही कम्युनिस्टों को अपने प्रधान शत्रु के रूप में देखा और उनको खत्म करने की चेष्टा की । उनपर तीन-तीन षडयंत्र केस चलाये । १९३४ से १९४२ के जून माह तक पार्टी को गैर-कानूनी रखा । इसके बाद भी कम्युनिस्ट आंदोलन को कुचला नहीं जा सका । गदर विद्रोह के प्रवीण नेता बाबा सोहन सिंह भखना, बाबा गुरुमुखसिंह, पृथ्वी सिंह आजाद, भगत सिंह के कतिपय साथी, चटगाँव विद्रोह के योद्धा, १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन के सतारा के नेता नानापाटिल, आजमगढ़ के झारखंडे राय, बलिया के सरयू पाण्डेय, मेदनीपुर के रविमित्र आदि स्वाधीनता संग्राम के बहादुर योद्धा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के साथ आये ।

भारत में पूर्ण आजादी, जमींदारी प्रथा और सामंतवाद का खात्मा तथा वैज्ञानिक समाजवाद का नारा सर्वप्रथम कम्युनिस्टों ने ही दिया । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के लिए यह गौरव की बात है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में उसकी महत्वपूर्ण देन है, जिन्हें कोई ईमानदार इतिहासकार नजरअंदाज नहीं कर सकता ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की विचारधारा

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के एक विशिष्ट महान् क्रांतिकारी और अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे। वैचारिक दृष्टि से सुभाषचन्द्र बोस न तो गाँधीवादी थे और न मार्क्सवादी। वे एक प्रखर क्रांतिकारी देशभक्त थे। १९१७ की महान् अक्तूबर समाजवादी क्रांति, सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण की सफलताओं तथा मार्क्स और लेनिन के विचारों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। स्वाधीन भारत की आर्थिक सामाजिक व्यवस्था को वे समाजवादी सिद्धांतों के आधार पर ढालना चाहते थे। इस बात को उन्हें अपनी पुस्तक "भारतीय संघर्ष" में स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है। अ जीवन के प्रारंभ से ही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस कट्टर साम्राज्य-विरोधी त समाजवाद के समर्थक थे। १९२१ से लेकर १९४१ तक स्वातंत्र्य-संघर्ष के दौ ब्रिटिश साम्राज्यवादी सरकार ने उन्हें सोलह बार बंदी बनाया। उन्होंने ब्रि साम्राज्यवाद से कभी भी समझौता नहीं किया। वे आजीवन भारत की आजादी लिए बेचैन थे। सुभाषचन्द्र बोस ने अपनी पुस्तक "भारतीय संघर्ष (इण्डि स्ट्रगल)" में स्पष्ट रूप से लिखा है कि "गाँधीवाद एक प्रतिक्रियावादी विचारध है।" उन्होंने यह भी लिखा है कि "गांधीवाद ने वर्ग समन्वय तथा ट्रस्टीशिप सिद्धांत का प्रचार किया है।"

गाँधीजी के समझौतावादी रुख के खिलाफ सन् १९४० में जब उन्हें रामगढ़ में काँग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर विख्यात किसान नेता स्व सहजानन्द सरस्वती के साथ मिलकर समझौता-विरोधी सम्मेलन संगठित किया उन्हें युवकों के उन सभी संगठनों का समर्थन प्राप्त था जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद विरुद्ध सशस्त्र क्रांति के हिमायती थे।

कांग्रेस के अन्दर सुभाषचन्द्र बोस ने गांधीवादी नेतृत्व के विरुद्ध एक वाम विकल्प के लिए प्रबल संघर्ष किया। त्रिपुरी कांग्रेस में गांधीजी द्वारा समर्थि अध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार पट्टभिसीतारमैया के विरुद्ध सुभाषचन्द्र बोस विजय वामपंथी शक्तियों की विजय थी। अनेक कारणों से जिसमें वाम शक्तियों की अपनी फुट मुख्य कारण था, इस जीत को स्थायी नहीं बनाया जा सक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



जा सका। दूसरा महायुद्ध छिड़ने पर उन्होंने वामपंथी शक्तियों को एकताबद्ध करने का आह्वान किया ताकि ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर अन्तिम और निर्णायक प्रहार किया जा सके, लेकिन इसमें भी उन्हें सफलता नहीं मिली।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थक थे। उन्होंने हरिपुरा कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि "कांग्रेसियों को आज केवल आजादी का ही प्रयास नहीं करना है, बल्कि अपने चिंतन और शक्ति को राष्ट्र के पुनर्निर्माण के सवाल पर भी समर्पित करना होगा। राष्ट्र का पुनर्निर्माण तभी संभव है, जब विज्ञान और हमारे वैज्ञानिकों का योग हमें मिले।"–(सुभाषचन्द्र बोस, क्रास रोड्स, पृष्ट ५१)

उसी पुस्तक के पृष्ठ ५२ में लिखा है–

"हमें जिस समस्या से जूझना है, वह उद्योग की पुनरप्राप्ति नहीं है, बल्कि औद्योगीकरण है। विकास के क्रम में भारत अभी भी प्राग्-औद्योगिक स्थिति में है। औद्योगिक विकास, बिना औद्योगिक क्रांति के रास्ते से गुजरे संभव नहीं है। हम इसे माने या नहीं, लेकिन हमलोगों को यह समझना चाहिए कि आधुनिक इतिहास में वर्तमान युग, औद्योगिक युग है। औद्योगिक क्रांति से हम पिंड नहीं छुड़ा सकते। हमें यह तय करना चाहिए कि यह क्रांति ग्रेट ब्रिटेन की तरह क्रमिक विकास के क्रम में होगी या रूस की तरह बल प्रयोग कर, मेरा ख्याल है, भारत में यह बल प्रयोग के द्वारा ही संभव है।"

१० जून, १९३३ में लंदन में होने वाले भारतीय राजनीतिक कांग्रेस में सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था–"उन्नीसवीं शताब्दी में जर्मनी ने मार्क्सवादी दर्शन के माध्यम से विश्व समाज और संस्कृति को एक उत्तम चीज दी है तथा रूस ने बीसवीं शताब्दी में अक्तूबर क्रांति के माध्यम से एक अद्‌भूत अवदान दिया है।" उन्होंने कहा कि "रूस ने नयी अर्थनीति दी है और भारत को भी इसे प्राप्त करने से कम सहूलियत नहीं होगी।"

१५ मार्च, १९३५ की वियना से यू० पी० आई० के प्रबंध निदेशक श्री बी० सेनगुप्त को पत्र लिखते हुए उन्होंने लिखा था कि "यदि मैं गलती पर नहीं हूँ तो कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी फैवियन सोशलिज्म के प्रभाव के घेरे में आयेगा जो कि इंगलैंड में ५० वर्षों से एक फैशन-सा हो गया है।"

रजनी पामदत्त के साथ साक्षात्कार में दिये गये अपने वक्तव्य में, जो २४ जनवरी, १९३८ में "डेली वर्क्स" लंदन में प्रकाशित हुआ, सुभाषचन्द्र बोस ने कहा था–"मैं जो वास्तविक समझता हूँ, भारत में हमलोग यही चाहते हैं कि हमें राष्ट्रीय शक्ति प्राप्त हो और इसकी जीत के लिए हम चाहते हैं कि समाजवाद की दिशा में पहल करें।"

"मेरी यह धारणा है कि एक वृहत रूप में, कांग्रेस को साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चे के रूप में संगठित होना चाहिए और इसके दो लक्ष्य हों–राजनीतिक स्वतंत्रता हासिल करना तथा समाजवादी व्यवस्था की स्थापना।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


हरिपुरा में ९ फरवरी १९३८ को कांग्रेस के ५१वें महाधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा था–"इसमें संदेह नहीं है कि हमारी प्रमुख राष्ट्रीय समस्याएँ जैसे गरीबी, निरक्षरता, बीमारी तथा वैज्ञानिक ढंग से उत्पादन और वितरण की समस्याएँ प्रभावकारी ढंग से समाजवादी पद्धति से ही सुलझायी जा सकती है। हमारी भावी राष्ट्रीय सरकार का पहला काम होगा एक योजना आयोग की स्थापना जो सम्पूर्ण देश की कृषि, उद्योग से संबंधित उत्पादन और वितरण की समुचित स्कीम बना सके।"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रबल राष्ट्रवादी और आध्यात्मिक विचारों के परिप्रेक्ष्य में कुछ आलोचकों ने उनके समाजवादी होने में सन्देह प्रकट किया है जो पूर्णतः निराधार है। अलजीरिया के बोमेदीन, गिनी के सेकूतूरे, तंजानिया के न्यरेरे तथ इराक के बाथ सोशलिस्ट नेता अहमद हसन अलवक्र अगर समाजवादी हैं तो सुभाषचन्द्र बोस निःसंदेह समाजवादी थे। यह सही है कि आर्थिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विचारों में वे सम्पूर्ण रूप में मार्क्सवादी लेनिनवादी दृष्टिकोण नहीं अपनाते थे।

चिरविद्रोही नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारत की गुलामी को एक क्षण के लिए भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अपने विद्यार्थी-जीवन में ही भारतीयों की निंदा के लिए आपने अपने गोरे प्रिंसिपल के गोरे गालों पर चपत जमा दी थी और इस अपराध में आपको कॉलेज से निकाल दिया गया था। बाद में सर आशुतोष मुखर्जी के प्रयत्न से उन्हें पुनः कॉलेज में वापस ले लिया गया, तब से बिलायत की आई० सी० एस० की परीक्षा तक आप पढ़ने में अपने साथियों में बेजोड़ रहे। फिर भी आपने आई० सी० एस० का परीक्षा-फल प्रकाशित होते ही उस नौकरी पर लात मार दी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। तब से निरंतर आपका जीवन ब्रिटिश साम्राज्यशाही से युद्ध करने में ही बीता।

इसमें संदेह नहीं कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद को भारत में समाप्त करने के लिए जापानी साम्राज्यवादियों से सहायता ली थी। यह सर्वविदित है कि नेताजी सोवियत संघ से सहायता लेना चाहते थे। १९४० के २० मार्च को रामगढ़ में समझौता-विरोधी-सम्मेलन में यह निर्णय लेना पड़ा कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक राष्ट्रीय संघर्ष छेड़ा जाय। उन्होंने रामगढ़ में ही अपने साथियों से रूस से सक्रिय सहायता लेने के प्रश्न पर विचार-विमर्श किया। लाला शंकरलाल नेताजी के द्वारा गलत पासपोर्ट पर जापान भेजे गये। वहां उन्होंने सोवियत संघ के राजदूत से बातें की। इसी बीच आन्दोलन के सिलसिले में नेताजी कलकत्ता में गिरफ्तार कर लिये गये। लाला शंकरलाल कलकत्ता लौटे। नेताजी को जेल में उनके बड़े भाई शरतचन्द्र बोस के द्वारा यह संदेश पहुँचाया गया। उन्होंने जेल से बाहर निकलने के लिए आमरण अनशन शुरू किया। वे छोड़ दिये गये। इसी बीच उनके भाग निकलने की कुछ व्यवस्था हो गई और वे भारत से विदा हो गये। उसके बाद वे किस प्रकार पेशावर होते हुए काबूल गये और काबूल से मास्को, बर्लिन और टोकियो गये इसकी एक लम्बी कहानी है।

नेताजी ने अपने एक सन्देश में कहा था–"मैं अपने देशवासियों से कहना चाहता हूँ कि गुलामी दुनिया की संबसे घिनौना पाप है। कभी न भूलो कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



अत्याचार सहना बड़ा पाप है। मत भूलो कि मनुष्य का जीवन इसीलिए है कि हम अत्याचार के खिलाफ लड़ें।''

नेताजी ने आजाद हिन्द फौज के नायक के रूप में घोषणा की थी–''मैं धूरी राष्ट्रों का प्रचारक नहीं हूँ–यह मेरा पेशा नहीं है। ब्रिटेन के प्रचारकों ने मुझे दुश्मन का जासूस कहा है। मेरी पूरी जिंदगी अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ लगातार और अथक लड़ाई करने में बीती है। जीवन भर मैं भारत का सेवक रहा हूँ और अपनी अंतिम घड़ी तक मैं वहीं रहूँगा। मैं दुनिया के किसी भी हिस्से में क्यों न रहूँ, भारत के प्रति अपने कर्त्तव्य को मैं कभी भूल नहीं सकूँगा।''

नेताजी को यह पक्का विश्वास था कि बगैर किसी बाहरी सहायता से भारत की क्रांति सफल नहीं होगी। संयुक्त राज्य अमरीका ने फ्रांस से बहुत बड़ी सहायता प्राप्त की थी। दुनिया के इतिहास में, किसी देश के लिए अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए विश्व के अन्य राष्ट्रों की सहायता लेना कोई नयी बात नहीं थी। सोवियत संघ में १९१७ की महान् अक्तूबर समाजवादी क्रांति के पहले महान् लेनिन ने जर्मन शील्ड गाड़ी में बैठकर सीमा पार करके लेनिन-ग्राद में प्रवेश किया था और तब बहुत से लोगों ने रूस से विशेषकर मेनशेविक और सोशल रिवोल्यूशनरियों ने कहा था कि लेनिन रूस में जर्मन सम्राज्यवाद के एजेन्ट हैं। उस समय रूस और जर्मन एक-दूसरे के विरोध में लड़ाई लड़ रहे थे। मार्शल टीटो ने अमरीका और ब्रिटेन से अपने देश को जर्मन अधिकार से आजाद कराने के लिए हर प्रकार की सहायता ली थी। जर्मन फासिस्ट और उनके युगोस्लाव मित्र भी टीटो के सम्बन्ध में ऐसी ही बातें कहते थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद से भारत को आजाद कराने के लिए जापानी साम्राज्यवाद से सहायता ली थी। इस तरह के उदाहरण हमको दुनिया के इतिहास में और भी बहुत से मिलते हैं।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस में उत्कृष्ट एवं ज्वलंत देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे एक महान् क्रांतिकारी थे और उन्होंने एक ज्वलंत उदाहरण देश के सामने उपस्थित किया था। युद्ध के मैदान में आजाद हिन्द फौज के हार जाने के बाद नेताजी सोवियत रूस जा रहे थे। कर्नल हवीब रहमान ने, जो नेताजी के साथ विमान में थे, कहा कि मंचूरिया के ऊपर से पार करते हुए विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारत के महान् सपूत, महानतम क्रांतिकारी तथा देशभक्त नेता थे। विचारधारा में प्रचंड क्रांतिकारी, कट्टर वामपंथी और समाजवादी विचार के प्रबल समर्थक थे। प्रो० हीरेन मुखर्जी ने इनसे सम्बन्धित एक किताब लिखकर यह अच्छी तरह प्रमाणित किया है। विगत वर्ष संभवतः २४ जनवरी को कलकत्ता की एक आमसभा में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री एवं मार्क्सवादी कम्युनिस्टों के नेता ज्योति बसु ने प्रथम बार यह स्वीकार किया कि नेताजी को देशद्रोही कहना कम्युनिस्टों की भूल थी। उन्होंने कहा कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बारे में कम्युनिस्टों ने गलत सूचना के आधार पर अपनी धारणा बनायी थी। नेताजी न तो फासिस्ट थे और न कम्युनिस्ट-विरोधी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

# एक समर्पित स्वतंत्रता सेनानी किसानों के प्राण पंडित यदुनन्दन शर्मा

जहानाबाद जिले के कुर्था अंचल में मझियावां एक ऐतिहासिक गाँव है। ए समर्पित स्वतंत्रता सेनानी और लोकप्रिय किसान नेता पंडित यदुनन्दन शर्मा क जन्म देने का गौरव इसी गाँव को प्राप्त है। सन् १९३० से १९४६ तक इस गाँ ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में ऐतिहासिक भूमिका अदा की है। सन् ३० में इ गाँव के ५ व्यक्ति, सन् ३२ में ५५ व्यक्ति और सन् ३३ में ६५ व्यक्ति आजादी आन्दोलन में जेल-यात्री बने। १९४२ के अगस्त आन्दोलन में यहाँ के दर्जनों लो कुर्था थाने पर झण्डा फहराने में छर्रे से आहत हुए। लगभग ३० व्यक्तियों प मुकदमें चलाये गये। कई फरार रहे और गाँव पर सामूहिक जुर्माना लगाया गया शहीद श्यामबिहारी के साथ श्री सरयु सिंह तो मरनासन्न हो गये। वे जहानाब अस्पताल में लम्बी चिकित्सा के बाद बच पाये। सन् १९३९ में इस गाँव किसानों का ऐतिहासिक किसान सत्याग्रह भी हुआ, जिसमें ३५० लोग गिरफ्त हुए और जेल-जीवन बिताया। इस गाँव का कोई ऐसा घर नहीं, जिस घर के क से-कम एक व्यक्ति किसान आंदोलन तथा आजादी के आंदोलन में जेल न ग हों। इस दृष्टि से यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता संग्राम में ए गाँव की भूमिका के रूप में जो गौरव पंडित यदुनन्दन शर्मा की जन्म-भू मझियावां को प्राप्त है, वह राजेन्द्र बाबू का जीरादेई, श्रीबाबू का माउर अ अनुग्रह बाबू के पोईवां को नहीं।

पंडित यदुनन्दन शर्मा का जन्म १८९६ में वसन्त पंचमी के दिन हुआ थ उनके पिता पंडित रामदेव मिश्र तीस वर्ष की उम्र में ही मर गये। वे संस्कृत विद्वान् थे। अभी पढ़ाई में लगे ही हुए थे, कि अकाल में ही काल-कवलित गये। पिता के मरने के समय यदुनन्दन शर्मा सिर्फ तीन साल के थे। उन बचपन का नाम सुखल मिश्र था। शायद दुबला-पतला रहने के कारण ही यह न रखा गया था। जिन लोगों को यदुनन्दन शर्मा की शिक्षा और उनकी योग्यता पता है, उन्हें यह जानकर आश्चर्य होगा, कि अठारह वर्ष की उम्र तक बिल्कुल निरक्षर थे। होश सम्हालते ही घरवालों ने सुखल मिश्र को चरवाही काम दिया। गरीब ब्राह्मण परिवार में एक भैंस थी, सुखल मिश्र उसे चराते, उ लिए जहाँ-तहाँ बिखरी छोटी-छोटी घासों को खुरपे से गढ लाते। इस चरव जीवन में भी वह गाँव के सारे चरवाहों के सर्व-सम्मत नेता थे। इस पद को उन्ह अपनी टोली में सबसे सबल को परास्त कर तथा बाहरवालों से लड़ने में अ कुशल नेतृत्व दिखाकर प्राप्त किया था। गाँव में मकई के बालों की चोरी में स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



खतरे की जगह सुखल मिश्र रहते, मगर बालों के बँटबारों में सबसे पीछे। यह भी उनके सर्व स्वीकृत नेतृत्व का एक गुर था।

अब सुखल मिश्र १८ वर्ष के हो गये। उन्हें गाँव के बाबू रामदेव सिंहजी के समझाने पर कि 'पंडित बाप के पुत्र को कुछ पढ़ना चाहिए' अचानक पढ़ने का ख्याल आया। उनके पिता पंडित रामदेव मिश्र और बाबू रामदेव सिंहजी एक-दूसरे को 'मीत' कहा करते थे। 'डोल पत्ता' खेल में पेड़ से गिरे तरुण 'सुखल' कराह रहा था। उसी समय गाँव के प्रतिष्ठित बाबू रामदेव सिंहजी उसी रास्ते से गुजर रहे थे। उन्होंने सुखल मिश्र को समझाया और कहा आपके पिता हमारे 'मीत' थे। हम दोनों का एक ही नाम होने के कारण हम एक-दूसरे को मीत कहा करते थे। 'पंडित बाप के पुत्र को कुछ पढ़ना चाहिए' यह बात उनके मन में बैठ गयी और उन्होंने पढ़ने का दृढ़ संकल्प कर लिया। एक दिन रेलवे लाईन और सड़क से दूर मझियावां गाँव से सुखल मिश्र गुम हो गये। जैसे-तैसे, वे, पैसे-निःसंबल, वह मगध से काशी पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने लोगों से पूछा—काशी का सबसे बड़ा पंडित कौन है ? किसी ने कह दिया—महामहोपाध्याय शिव कुमार शास्त्री। दूसरे दिन पूछते-पूछते सुखल मिश्र वहाँ पहुँच गये। शास्त्रीजी द्वार पर दातवन कर रहे थे। सुखल मिश्र को क्या पता था, यह सामने बैठा बृद्ध-मूर्ति काशी ही नहीं सारे भारत में अपनी विद्वता का सिक्का जमा चुका है। देश के बड़े-बड़े पंडित उनका विद्यार्थी बनना अपना अहो-भाग्य समझते हैं।

पंडित शिवकुमार शास्त्री ने पूछा—कहाँ आये हो ? संकोच और डर से शून्य सुखल मिश्र ने कहा—विद्या पढ़ने। आप का नाम सुनकर आपसे पढ़ने गया से आया हूँ। 'कुछ पढ़े हो ?' 'एक अक्षर भी नहीं।' पंडित शिवकुमार शास्त्री ने दुत्कारा नहीं। खुद दरिद्रता से परिचित थे। उन्होंने कुछं पैसे देकर कहा—'जाओ इससे क-ख सीखने की पोथी खरीद लाओ।'

सुखल मिश्र में प्रतिभा थी, यद्यपि अबतक उसका प्रयोग नहीं होने पाया था। शास्त्री जी बड़े स्नेह से स्वयं इस होनहार तरुण को पढ़ाते थे। अक्षर ज्ञान के बाद उन्होंने लघु कौमुदी पढ़ानी शुरू की। सुखल मिश्र को अब कुछ आगे का रास्ता दिखाई पड़ने लगा। उन्होंने बड़ी तत्परता से पढ़ाई जारी रखी। लघु कौमुदी समाप्त कर ली। अब वह आगे की सीढ़ी पर कदम रखना चाहते थे। सुखल मिश्र अब पंडित यदुनन्दन शर्मा के नाम से पुकारे जाने लगे। अचानक वह बीमार हो गये, गुरुजी से आज्ञा ली और स्वास्थ्य लाभ के लिए गाँव चले आये। स्वच्छन्द चरवाहा सुखल साल भर पर पंडित यदुनन्दन शर्मा बन कर गाँव आये थे। कुछ संस्कृत का ज्ञान हो गया था। हिन्दी और संस्कृत पढ़ने-लिखने लगे थे।

स्वास्थ्य-लाभ के बाद अब यदुनन्दन शर्मा बनारस लौटने को सोच रहे थे, इसी बीच गाँव के रिश्ते में उनके चाचा नौकरी से छुट्टी पर आये। सुखल को बिलकुल दूसर पंडित यदुनन्दन शर्मा के रूप में देख कर वह आकृष्ट हुए और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


धीरे-धीरे परामर्श देना शुरू किया। 'संस्कृत विद्या, की आजकल माँग नहीं है। भिखमंगी करना ठीक नहीं। अंग्रेजी पढ़ो। वकील बनना, या अच्छे सरकारी ओहदे पर कोई अधिकारी।' अंग्रेजी पढ़ने के लिए फीस-किताब-खाना कहाँ से लायेगा, यह ख्याल चाचा को नहीं था। मगर एकबार समझ में आ जाने पर यदुनन्दन शर्मा के लिए कोई दुसह काम नहीं था। उन्होंने अभी तक जो मार्ग अपनाया था, उससे वह एक संस्कृत के अच्छे पंडित होनेवाले थे। उन्हें यह मालूम था कि टेकारी में अंग्रेजी का हाई स्कूल है। अब वहाँ जाकर अंग्रेजी पढ़ने का संकल्प किया। बनारस जाते समय यदुनन्दन शर्मा सब तरह से कोरे थे, किन्तु अब वह लघु कौमुदी को अच्छी तरह पढ़ चुके थे, साथ ही शाकद्वीपी ब्राह्मण कुल में पैदा होने से अपनी कुल विद्या 'बैध्यक' का भी थोड़ा परिचय रखते थे। उन्होंने पहले तय किया कि किसी तरह टेकारी में रहने के लिए स्थान मिल जाये। स्कूल के एक विद्यार्थी ने खाना बनाने के लिए रख लिया। रसोईया यदुनन्दन देख रहा था, उसके मालिक को संस्कृत पढ़ने में भारी दिक्कत हो रही है। उसने अपनी सेवाएँ संस्कृत पढ़ाने के लिए पेश की। बदले में अंग्रेजी पढ़ाने का अनुरोध किया। मालिक को यदुनन्दन के बतलाये सरल रास्ते से बड़ा लाभ हुआ। मालिक ने ६-७ माह यदुनन्दन को अंग्रेजी पढ़ाया, और आगे पढ़ाने में उन्हें दिक्कत मालूम होने लगी। मालिक ने फीस का भार अपने ऊपर लिया और यदुनन्दन स्कूल में दाखिल हो गये।

मझियावां टेकारी राज की जमींदारी में था। टेकारी राज के महाराजा विलायत से लौटे थे। स्कूल का नया मकान बना था। नया विद्यालय भवन के उद्घाटन के लिए समारोह हो रहा था। यदुनन्दन शर्मा ने महाराजा के सामने पढ़ने के लिए अंग्रेजी में एक कविता लिखी। भवन उद्घाटन समारोह के अवसर पर यदुनन्दन शर्मा ने अंग्रेजी में एक लम्बी तुकबंदी सुनायी।

अंग्रेजी की इस लम्बी तुकबंदी की अन्तिम पंक्तियों के भाव थे–'तुम्हारा गरीब रैयत ब्राह्मण जाति का यदुनन्दन नामक विद्यार्थी ने इस कविता की रचना की है, जो कि यावत चंद्रदिवाकर तुम्हारा मंगल चाहता है।'

यदुनन्दन शर्मा को सात रुपये की पुस्तकें इनाम में मिली। फीस माफ करने की बात कही गई, तो तरुण यदुनन्दन ने कहा–मुझसे भी अधिक निस्सहाय विद्यार्थी है, जिनको फीस देकर पढ़ना कठिन है। बड़ी कृपा हो यदि उनकी भी फीस माफ हो जाये।' उनकी अपील पर टेकारी हाई स्कूल निःशुल्क कर दिया गया।

१९१९ ई० में यदुनन्दन शर्मा ने मैट्रिक पास किया। उनकी इच्छा कॉलेज में जाने की थी। कॉलेज के खर्च का ख्याल कर उनका उत्साह मंद हो जाता। फिर भी प्रयास जारी रखा। कुछ दिन एक स्कूल में अध्यापक रहे। फिर एक जमींदार के मैनेजर। नौकरी की खोज में पुलिस सब इन्सपेक्टर के लिए 'इंटरव्यू'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



दिया। एक अंग्रेज इंटरव्यू लेने वाले पुलिस सुपरिटेन्डेंट के व्यवहार का शर्मा जी ने विरोध किया और अन्त में उन्हें पुलिस की नौकरी के योग्य नहीं समझा गया। सन् १९२५ ई० में वे हिन्दू-विश्वविद्यालय, बनारस में दाखिल हुए। दाखिला फीस दे देने के बाद उनके पास मात्र दो-तीन रुपये बचे। छित्तुपुर के एक लोहार के घर में एक सबसे बुरी कोठरी ली। लोहार ने किराये की मांग की। एक शाम चना चबाना और एक शाम चुन-बीन कर लाये कंडों से गंगातट पर लिट्टी लगा कर गुजर करने वाले यदुनन्दन शर्मा किराया कहाँ से देते ? उन्होंने कहा–किराये के लिए मेरे पास पैसे नहीं है, मैं तुम्हारी भाथी को दो घंटे प्रतिदिन चला दिया करूँगा।' ४-५ दिन भाथी चलायी भी। लोहार ने तरुण यदुनन्दन की तपस्या को देखा और कह दिया–'बाबू मुझे किराया नहीं चाहिए, आप पढ़ें और जब तक चाहे यह कोठरी आप के लिए रहेगी।'

पंडित शिवकुमार शास्त्री को पढ़ाने के लिए राजी करनेवाला तरुण यदुनन्दन एक दिन पंडित मदनमोहन मालवीय के पास गया। यदुनन्दन की बात सुनकर मालवीय जी ने उपदेश देना शुरू किया–'पढ़ कर क्या करोगे, कोई काम करो, जीविका कमाओ।' यदुनन्दन उपदेश सुनने नहीं गये थे। उन्होंने कहा–'मैं जीविका के लिए काम भी करना चाहता हूँ और पढ़ने के संकल्प को भी नहीं छोड़ना चाहता। मुझे कोई काम दे दीजिये।' मालवीय जी ने उपेक्षापूर्वक जब कहा कि तुम्हारे जैसे काम करने की बात करने वाले कितने ही विद्यार्थी को मैं देख चुका हूँ, काम के मैदान में वे डट नहीं सकते।

यदुनन्दन शर्मा ने कहा–'आप कोई काम, पाखाना साफ करने का भी, देकर देख लिजिए और यदि मैं महीने भर करता रहूँ, तो मेरी फीस माफ करवा दीजिये।'

उनकी बात का मालवीय जी पर गहरा प्रभाव पड़ा। काम नहीं मिला, किन्तु यदुनन्दन शर्मा की फीस माफ हो गई।

गंगा तट पर लिट्टी लगाते और फाका करते यदुनन्दन की पढ़ायी चलती रही। उनके सहपाठियों ने यह बात किसी प्रोफेसर से कही। उनके पूछने पर यदुनन्दन शर्मा ने कुछ काम करके सहायता लेने की बात कही और छात्रावास एवं विद्यालय में झाड़ू देने का काम मांगा। प्रोफेसर ने कॉलेज के विद्यार्थी से झाड़ू दिलवाना पसंद नहीं किया और आफिस के रूम में सोने की जगह दे दरवाजों में रंग लगाने का काम दिया। यदुनन्दन शर्मा जब होस्टल के अनपढ़ रसोईयों को देखा, उनको ख्याल आया, इन्हें पढ़ाना चाहिए। उनके उत्साह को देखकर बाद में उक्त प्रोफेसर ने यही काम उन्हें सौंपा और इस प्रकार भोजन की चिन्ता से मुक्त हो वे पढ़ने और पढ़ाने लगे।

१९२७ में यदुनन्दन शर्मा आई० ए० और १९२९ में बी० ए० पास किया। बी० ए० की परीक्षा देने के बाद उन्हें पता चला कि दरभंगा में भारी हैजा फैला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


हुआ है। यदुनन्दन शर्मा दरभंगा जिले के दलसिंहसराय में पहुँचे और ३-४ सप्ताह तक उस क्षेत्र के हैजा पीड़ितों की सहायता की।

सन् १९३० में गाँधीजी का नमक सत्याग्रह शुरू हुआ। पंडित यदुनन्दन शर्मा अपने को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से अलग कैसे रख सकते थे। हिन्दु विश्वविद्यालय में नमक बनाने वालों में वह भी शामिल थे। पंडित यदुनंदन शर्मा विशेषज्ञ निकले। उनकी देखरेख में कुमार बद्री नारायण सिंह के गाँव कर्मा में नमक बनाया गया। बहुत से लोग गिरफ्तार हो गये। गया जिला कांग्रेस के नेतृत्व का भार पंडित यदुनंदन शर्मा पर आया। शर्माजी ने बड़ी योग्यता से गाँव-गाँव घुम कर आंदोलन का संचालन किया। पुलिस की नजर से बहुत दिनों तक वह बच नहीं सके। एक दिन जब शेरघाटी से गिरफ्तार होकर गया कोतवाली जा रहे थे, तब उन्हें समाचार मिला कि वह बी० ए० में उत्तीर्ण हो गये। शर्मा जी को सोलह माह की सजा हुई, किन्तु दस महीने बाद ही १९३१ के गाँधी-इर्विन समझौते के कारण वह छोड़ दिए गये। सन् १९३२ और १९३३ में भी शर्मा जी गिरफ्तार किए गये और ६-६ माह का सश्रम कारावास जीवन व्यतीत किया।

जेल में बड़े घरों के नेताओं को ऊपरी श्रेणी में रखा जाता था। जेल के अंदर रहनेवाले बाबू नेताओं का व्यवहार साधारण किसान मजदूर परिवार से आनेवाले स्वयंसेवकों से अच्छा नहीं था। पंडित यदुनन्दन शर्मा किसान परिवार के थे, उन्हें बाबूगिरी पसंद नहीं थी। वह स्वयं-सेवको में अकृत्रिम रूप से हिले-मिले रहते थे। वह अपनी शिक्षा की डिग्री के आधार पर 'डीविजन' ले सकते थे। किन्तु उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि साधारण किसान सत्याग्रही पंडित यदुनन्दन शर्मा को अपना अगुआ मानने लगे।

जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने बिहार के किसानों में नयी जागृति पैदा की। किसानों की मूक वेदना को अपनी प्रबल वाणी प्रदान की। पंडित यदुनन्दन शर्मा किसान सभा में शामिल होकर गया के अत्यन्त पददलित तथा भयत्रस्त किसानों में रूह फूकनी शुरू की।

१८ जून १९३३ ई० को बिहार प्रदेश किसान सम्मेलन ने गया जिले के किसानों की जाँच के लिए एक जाँच समिति बनाई थी, जिसमें स्वामी सहजानन्द सरस्वती, पंडित यमुना कार्यी, पंडित यदुनन्दन शर्मा, डाक्टर युगलकिशोर सिंह और बलदेव सहाय एडवोकेट कुल पाँच सदस्य थे। समिति के सदस्यगण घोर बरसात में गया जिलें के अनेक गाँवों में गए और किसानों की स्थिति जो कुछ देखा, उसे ८० पृष्ठों में 'गया जिले के किसानों की करुण कहानी' के नाम से एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर दिया। २० सितंबर १९३३ में गया कलक्टर के सामने पंडित यदुनन्दन शर्मा के नेतृत्व में ६० हजार से लेकर लगभग एक लाख किसानों का शानदार प्रदर्शन हुआ। सारे ब्रिहार में लोकप्रिय किसान नेता के रूप में यदुनन्दन शर्मा की ख्याति फैल गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



२९, ३० अगस्त १९३४ को गया में बिहार प्रदेश किसान सम्मेलन पुरुषोत्तम दास टंडन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, इस सम्मेलन में खान अब्दुल गफ्फार खान, मोहन लाल गौतम आदि नेताओं ने भाग लिया। पंडित यदुनन्दन शर्मा ने अपने भाषणों में जमीन्दारों के अमलों द्वारा किसानों पर विभिन्न प्रकार के जुर्म किये जाने की विस्तृत चर्चा की और उसे तुरंत रोकने की माँग की।

५ अक्तूबर १९३४ को स्वामी सहजानन्द सरस्वती और पंडित यदुनन्दन शर्मा को गया की एक सभा में भाषण करने पर सरकारी अधिकारियों द्वारा रोक लगा दी गई। भारत के प्रथम राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद इस सभा की अध्यक्षता कर रहे थे।

पंडित यदुनन्दन शर्मा के नेतृत्व में सन् १९३६ ई० में टेकारी अंचल के सांडा और बेलागंज अंचल के शाहबाजपुर गाँव के किसानों का संगठित संघर्ष हुआ। जमींदार हारे, किसानों को विजय प्राप्त हुई।

बिहार में कांग्रेस मंत्रिमंडल बनने पर भी शर्मा जी को किसानों की कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी और कई बार जेल की हवा खानी पड़ी। २२ दिसंबर १९३८ को वारसलीगंज के रेबड़ा में विवादग्रस्त खेतों की फसल काट किसान सत्याग्रह का प्रारंभ पंडित यदुनन्दन शर्मा ने किया। रेबड़ा का किसान सत्याग्रह बिहार में ही नहीं, भारत के किसान आंदोल के इतिहास में भी ऊँचा स्थान रखता है। पंडित यदुनन्दन शर्मा ने रेबड़ा के किसान-भेड़ को बाघ बनाया। वहाँ की महिलाओं ने भी कांग्रेस-मिनिस्ट्री द्वारा भेजी गई मिलिटरी के सामने निर्भयता और साहस दिखलायी। जमींदार के दाँत खट्टे करके शर्मा जी ने किसानों को खेत दिलवाये।

९, १० अप्रैल १९३९ को अखिल भारतीय किसान सभा का चतुर्थ अधिवेशन गया में आयेजित हुआ। आचार्य नरेन्द्र देव सम्मेलन के अध्यक्ष और पंडित यदुनन्दन शर्मा स्वागताध्यक्ष थे। अपने स्वागत भाषण में पंडित यदुनन्दन शर्मा ने जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के प्रति जो उद्‌गार प्रकट किया था, वह इस प्रकार हैं–'एक बात जो मुझे सोते, जागते, चलते-फिरते हर समय याद रहती है। वह यह कि हमारा स्वामी सहजानन्द सरस्वती हमारे किसान आंदोलन का 'डायनुमा' हैं। यह सब कुछ भूलकर सदियों से पीड़ित भारतीय जनता के दिल और दिमाग में नयी रोशनी भरने के लिए चौबीस घंटे चालू रहता है। चन्द वर्षों में ही उसने इस किसान आंदोलन को वहाँ पहुँचा दिया है, जहाँ पहुँच कर यह अपने विपक्षियों को अपना लोहा मानने को मजबूर कर रहा है। मेरा अपना ख्याल है कि यह स्वामी सहजानन्द सरस्वती भारत के पद-दलितों के लिए वही है जो रूस के दलितों के लिए लेनिन थे।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


पंडित यदुनन्दन शर्मा को स्वामी सहजानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व में आगाध श्रद्धा थी । वे उनके जीवन के अंत तक सहयोगी बनकर रहे ।

सन् १९३९ में अगस्त सितंबर महीने में मझियावां के किसानों का ऐतिहासिक सत्याग्रह हुआ । मखदुमपुर अंचल के सतीस्थान, हिसुआ अंचल के सिन्दुआरी, औरंगाबाद अंचल के फेसर अदि दर्जनों स्थानों में किसान आंदोलन का नेतृत्व पंडित यदुनन्दन शर्मा ने किया ।

द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर १९४० में पंडित यदुनन्दन शर्मा पर गिरफ्तारी का वारंट निकला । यदुनन्दन शर्मा आसानी से हाथ लगने वाले न थे । पुलिस दो वर्ष से अधिक दिनों तक खोज करती रही, मगर वह हाथ नहीं आये । अन्तरधान काल में भी उनकी चेतावनियां ,नोटिसें, बुलेटिन बराबर प्रकाशित हो लोगों के बीच बँटती रहती थी । पुलिस के हाथ पड़कर भी निकल भागने की उनकी कितनी ही कहानियां प्रचलित हैं । सन् १९४० की बात है । वह पटना जिले के नौबतपुर प्रखंड के एक गाँव गोपालपुर में छिपे हुए थे । किसानों के लोकप्रिय नेता पंडित यदुनन्दन शर्मा को कौन नहीं शरण देता? पुलिस के अधिकारियों को पता लग गया । पुलिस गाँव में पहुँच गई । गाँव वालों को अपने नेता के लिए भारी चिन्ता हुई, लेकिन यदुनन्दन शर्मा विचलित नहीं हुए । उन्होंने तुरंत एक तरकीब सोची और गाँव वालों को बतलाई । सब सहमत थे । नेवारी-पुआल का एक पुतला बनाया, शर्मा जी ने आधी धोती नीचे आधी ऊपर की ओर कपड़े में लिपटे 'शिशु के शव' को दोनों हाथों में लिए 'हाय बाबू' 'हाय बाबू' 'हाय बाबू' चिल्लाते आंसू बहाते गाँव से नदी का रास्ता लिया ।

सन् १९४१ में एक शाम को ५ बजे वह पटना से कागज, टाइपराइटर आदि लिए एक आदमी के साथ एक्के पर दीघा घाट की ओर जा रहे थे । एक सी. आई. डी. ने पीछा किया। निश्चय कर लेने पर उसने एक्के वाले को कोतवाली ले चलने के लिए कहा । शर्माजी के पूछने पर सी. आई. डी. ने कहा-'मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ, आप यदुनन्दन शर्मा है ।' शर्मा जी ने एक्के के लौटने में आपत्ति नहीं की और देश भक्ति के नाम पर उस आदमी को समझाने की कोशिश की मगर उस पर असर नहीं हुआ । एक्का राजापुर गाँव पहुँचा तो उनके एक डांट पर एक्का खड़ा हो गया । शर्मा जी डंडा संभालकर उतर पड़े । सी. आई. डी. भी उतर पड़ा । शर्माजी के साथी सामान को लेकर चले गये । हाथ से निकलते देख सी. आई. डी. 'चोर-चोर' चिल्लाया । लोग दौड़ पड़े । शर्माजी एक किसान के घर के भीतर घुस कर बैठ गये । लोगों ने घर घेर लिया उन्हें बतलाया गया था कि एक पिस्तौल वाला चोर बहुत सा रुपया लिए बैठा है । उनके समझाने पर भी जब गाँव वाले नहीं माने तो उन्होंने यह कहकर खाली हाथ पाकेट में डाला-पहिले रुपया लोगे या पिस्तौल ? अच्छा यह दस गोली की पिस्तौल है, पहले इसी को लो, लेकिन गोलियों को खाली कर लेने दो' यह कहकर ज्यों ही पाकेट में हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

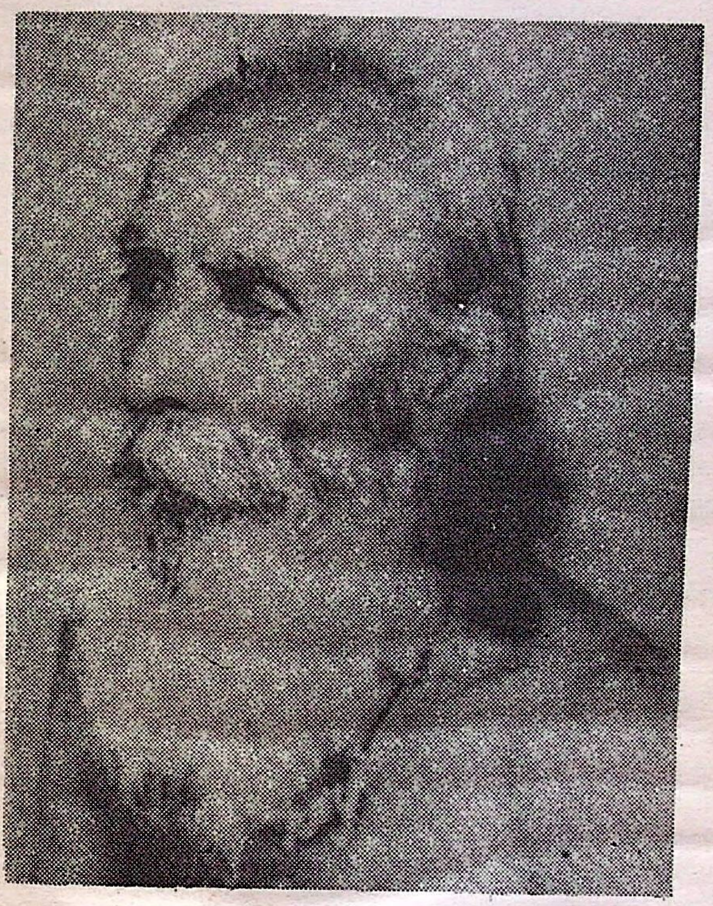

सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और किसानों के प्राण पंडित यदुनन्दन शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



डाला लोग भाग गये । वहाँ से निकलने पर एक किसान कार्यकर्त्ता मिला, जो उन्हें पहचानता था । रात भर उसने शर्मा जी को अपने घर में रखा, दूसरे दिन अंधेरा रहते ही वे वहाँ से चले गये । ऐसी बहुत सारी कहानियां उनके फरार जीवन की है।

१५ अगस्त १९४७ को देश की आजादी मिलने पर शर्मा जी ने सदा सर्वदा के लिए कांग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया । पंडित यदुनन्दन शर्मा एक समर्पित स्वतंत्रता सेनानी थे । १९५२ में स्वतंत्रता सेनानियों की समस्या को लेकर शर्माजी ने गया में जिला स्वतंत्रता सेनानी सम्मेलन आयोजित किया था। वह किसानों के निर्भीक लड़ाकू नेता थे । रात-दिन सोते जागते उन्हें यही धुन सवार रहती–किसान-मजदूर राज्य कब और कैसे क़ायम होगा ? किसानों का उन पर अटूट विश्वास था ।

३ मार्च १९७५ को किसानों का प्यारा नेता चल बसा । गाँधीजी के छेड़े नमक सत्याग्रह से उन्होंने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया, किन्तु गांधीवाद पर उन्हें कभी विश्वास नहीं रहा । वह वामपक्षी जनवादी विचारधारा के समर्थक थे और कांग्रेस राज को पूंजीपतिवर्ग का शासन मानते थे। शर्माजी का संपूर्ण जीवन त्याग और बलिदान का जीवन था । लोभ, अभिमान उनको छू तक नहीं सका था। शर्मा जी बेलागंज प्रखंड के नेयामतपुर में किसान आश्रम बनाकर रहते थे । वहाँ देश के अधिकांश चोटी के नेताओं को आने का अवसर मिला है । आज इस आश्रम के जीर्णोद्घार की आवश्यकता है । स्वतंत्रता सेनानियों का सही स्मारक इस तरह के आश्रम को सुरक्षित रखकर ही चिरस्थायी बनाया जा सकता है ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# अगस्त क्रांति की पृष्ठभूमि और गतिविधियां

विद्रोह सहसा फूट नहीं पड़ते, क्रान्तियां बिजली की तरह नीले और सा आसमान से टूट नहीं पड़ती, आंदोलन कोई जादू की लकड़ी द्वारा खड़े भी नहीं जाते। यह सब तो दबी-कुचली जनता की अकांक्षाओं का केवल बाह्य रूप होते हैं शान्ति की दिखावटी सतह के नीचे अन्दर-ही-अन्दर विरोधाग्नि सुलगती रहती है क्षणिक कारण, नीचे दबी हुई बारूद में चिनगारी सी प्रज्वलित कर प्रचंड में फैल आन्दोलन, क्रांति या बगावत उग्र रूप लेता है, अतः यह आन्दोलन संगठित भी सकते हैं और असंगठित भी, हिंसात्मक भी अहिंसात्मक भी, सफल भी और असफ भी। यह सब बातें देश की स्थिति, संस्कृति, संस्कार, नेताओं के विचार, संगठन शक्ति नारे और कार्यक्रम की उपयोगिता अदि बातों पर निर्भर है।

ठीक इसी तरह सन् १९४२ से पहले स्थायी कारण अपनी परिपक्व स्थिति पहुँच चुके थे। जनता की बढ़ती बेचैनी, परेशानी और असंतोष सभी ने उग्र रूप धा कर लिया था। दूसरे विश्व युद्ध के प्रारंभ के साथ भारतीय आकांक्षाएँ और आश उभर चुकी थी। नेताजी सुभाष चन्द्रबोस और किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्व ने १९४० में ही रामगढ़ काँग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय समझौ विरोधी सम्मेलन का आयोजन कर यह घोषणा कर दी थी कि अब 'जंगे आजादी' घोषणा कर दो। 'हम न देगें एक पाई, और न देगें एक भाई' शुरू कर दो जंगे आज की लड़ाई। महात्मा गाँधी भारतीय राजनीति के केन्द्र विन्दु थे। कांग्रेस की नी निर्धारित करते थे। उन्होंने वामपक्षी शक्तियों और काँग्रेस कार्यकर्त्ताओं तथा कु नेताओं के दबाव पर भी उस समय आन्दोलन छेड़ने से इन्कार कर दिया। ब्रिटि सरकार की मित्रता-विरोधी नीति से तथा कुछ कांग्रेस जनों के दबाव से जब वे मज हो गये तब उन्होंने व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ दिया। आन्दोलन शुरू करते हुए उन्हें स्पष्ट कह दिया कि मैं वर्तमान सरकारी रूख के प्रति अपना असंतोष प्रकट कर चाहता हूँ। संसार को सूचित करना चाहता हूँ कि भारतवर्ष इस युद्ध में ब्रिटिश के स सम्मिलित नहीं है।

१५ फरवरी १९४२ को सिंगापुर का पतन हुआ। ७ मार्च को रंगून हाथों निकल गया। १२ मार्च को अंडमान तथा भारत के आसपास के समुद्र तट पर आक्र संकट का खौफ फैला हुआ था। इस बीच भारतीय समस्या का समाधान खोजने लिए आया क्रिप्समिशन अपने प्रयास में विफल होकर ब्रिटेन लौट गया था। गाँधी इस बात को बार-बार दोहरा रहे थे कि भारत की सुरक्षा के लिए आवश्यक है कि ब्रि भारत की सत्ता देशवासियों को सौंप दे। भारत में किसको सत्ता सौंपी जाये ? इस प्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

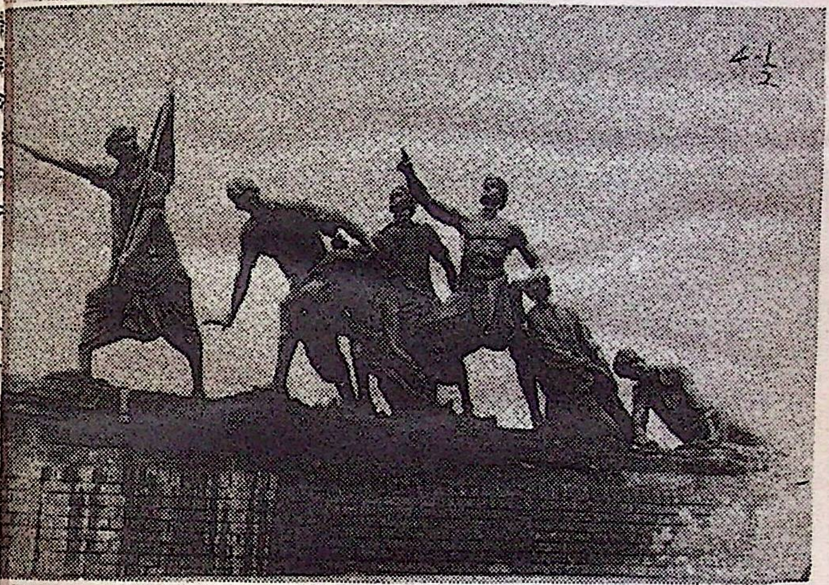

**११ अगस्त १९४२ में पटना सचिवालय के सामने हुए शहीदगण**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के उत्तर में गाँधीजी ने कहा कि भारत को भगवान भरोसे छोड़ दो–"दस-पन्द्रह दिन भले ही अराजकता के रहें, पर मेरे ख्याल में हम उस पर काबू पा लेंगे।"

उन्होंने अमरीकी पत्रकार लुई फिशर से स्पष्ट शब्दों में कहा–"एक ठोस और निश्चित बात मुझे महसूस होती है, और यह कि हमारे महान् राष्ट्र की अस्वभाविक गुलामी खत्म होनी चाहिए।"

८ अगस्त १९४२ को बम्बई में कांग्रेस की कार्यसमिति ने गाँधीजी की राय से अंग्रेजों के तमाम दलीलों का जबाव देने के साथ एक प्रस्ताव स्वीकृत किया और "अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा बुलन्द हुआ। सरकार दमन करने को तैयार बैठी थी। ९ अगस्त को प्रातः गाँधीजी सहित तमाम वरिष्ठ नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। देश में विद्रोह फैल गया। 'करो या मरो' के नारे गूंजने लगे। अगस्त क्रान्ति की चिनगारी शहर और गाँव में तेजी से फैलने लगी। दमन-चक्र के साथ ही पूरे देश में जनता के क्रोध की ज्वालामुखी फूट पड़ी। छात्रों,तरुणों, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के अनुयायियों, पुराने क्रांतिकारियों, कांग्रेस समाजवादियों ने अपने-अपने ढंग और तौर तरीकों से 'अगस्त क्रांति' में अपना योगदान किया। आकार, विस्तार, त्याग, बलिदान, संगटन शक्ति, जनोत्साह, ध्येय तथा नीति निपुणता सभी दृष्टियों से पिछले सभी आन्दोलनों से यह कहीं बढ़ा-चढ़ा था। लगभग सम्पूर्ण देश में हजारों शहीद हुए। एक लाख से अधिक जेलों में गये, एक करोड़ रुपये से अधिक सामूहिक जुर्माने हुए। लगभग चार करोड़ व्यक्तियों ने खुले रूप से इसमें भाग लिया। सतारा स्टेट में नाना पाटिल के नेतृत्व में आन्दोलन काफी ऊँचाई पर गया। मिदनापुर, उत्तर प्रदेश के बलिया, आजमगढ़, उड़ीसा में बालासोर और कर्नाटक में संघटित दृष्टि से बड़ा जोरदार आन्दोलन चला।

९ अगस्त को ही बिहार के सभी प्रमुख नेता गिरफ्तार कर लिये गये। अस्पताल छोड़ कर पटना में प्रायः सभी ने पूर्ण हड़ताल कर दी। ११ अगस्त १९४२ का दिन बिहार के इतिहास में चिरस्मरणीय हो गया, स्कूल और कॉलेज के सात छात्रों ने पटना सचिवालय पर झंडा फहराने के क्रम में शहीद हो गये। एक घायल छात्र ने अस्पताल में दम तोड़ने के पहले जब पूछा कि मुझे गोली कहाँ लगी है–पीठ में तो नहीं? उसे बताया गया कि गोली उसकी पीठ में नहीं छाती में लगी है। तभी उसने संतोष के साथ अन्तिम सांस ली। पटना के कलक्टर आर्चर से उसी दिन श्री कृष्ण सिंह ने जेल में पूछा था कि किसी लड़के की पीठ में तो गोली नहीं लगी? आर्चर के 'नहीं' कहने पर श्री बाबू ने भावपूर्ण शब्दों में कहा था, "आर्चर, अब तुम्हारे दिन लद गये' ?

सभी अत्याचारी सरकारों की तरह अंग्रेजी सरकार भी यह मान कर चल रही थी कि कुछ ही दिनों में सब कुछ ठीक हो जायेगा। सरकार का मानना है कि अपने नेताओं के गिरफ्तार हो जाने पर कार्यकर्त्ता और जनता निष्क्रिय हो जायेगी, इसलिए सरकार ने जिला स्तर तक के नेताओं को कैद कर लिया, किन्तु इस दमनचक्र के साथ ही पूरे देश में जनता के क्रोध का ज्वालामुखी फुट पड़ा। सरकार लाठी, गोली, कोड़ों, घुड़सवार टुकड़ियों, बिना वारंट गिरफ्तारियों पर भरोसा कर रही थी, किन्तु जितना अत्याचार बढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


रहा था, उतना ही विद्रोह भड़क रहा था। डाकघरों, तारघरों, टेलिफोन के खंभों पर हमले हो रहे थे। रेल की पटरियां उखाड़ी जा रही थी। जेलों पर कब्जा कर कैदियों को रिहा करवाया जा रहा था। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा विस्फोटक स्थिति थी। बलिया में तो प्रशासन को ठप कर समानांतर सरकार ही स्थापित कर दी गयी थी। महाराष्ट्र के सतारा में और बंगाल के मिदनापुर में राष्ट्रीय सरकार कायम करके पूरा प्रशासन हाथ में ले लिया गया था। मध्यप्रदेश में अष्टी और चिपूर में आंदोलन उग्र रूप में फूटा। देशी राज्यों तक में इसकी लपटें पहुँच गयी और कई जगहों पर आजादी के दीवानों ने थानों पर कब्जा कर लिया।

गाँधीजी की अहिंसा और सत्याग्रह की सीख लोग उस समय भूल गये। जनता ने जिनमें अधिक संख्या छात्रों और नौजवानों की थी, 'करो या मरो' को मूलमंत्र के समान गांठ में बांधा और सर पर कफन लेकर हजारों-लाखों लोग गाँवों-कस्बों और शहरों में निकल पड़े। एक अजीब समां पूरे देश में पैदा हो गयी। हर व्यक्ति नेता बन गया और हर चौराहा 'करो या मरो' का कार्यालय। देश ने अपने को क्रांति के हवन कुंड में झोंक दिया। क्रांति की ज्वाला देश के कोने-कोने में धू-धू कर जालने लगी। बम्बई ने ही रास्ता दिखाया था। आवागमन के सारे साधन ठप्प हो चुके थे। धुँआधार गोलियां चल रही थी। लोगों की वीरता और सरकार की नृशंसता की ऐसी खबरे आ रही थी कि रोंगटे खड़े हो जाते थे।

१९४२ की अगस्त क्रांति कितनी व्यापक थी, इसका अंदाज ३१ अगस्त ४२ को बाइसराय लार्ड लिगलिथगो ने मिस्टर चर्चिल को जो संदेश भेजा, उससे स्पष्ट होता है। लिगलिथगोने लिखा, "यहाँ मैं १८५७ के बाद की सबसे गंभीर बगावत का मुकाबला करने में जुटा हुआ हूँ। सैनिक सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हम इसकी व्यापकता और गंभीरता को दुनिया की निगाहों से छिपा रहे हैं।" स्थिति सचमुच यही थी। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक फैला यह विद्रोह भारत की स्वतंत्रता के जन-साधारण के संकल्प का जयघोष था। भारतवर्ष का सबसे बड़ा जन-आन्दोलन होने का गौरव अगस्त क्रान्ति को प्राप्त है। यह छानबीन करने की आवश्यकता नहीं कि इसका श्रेय किसे मिलना चाहिए। वास्तविक श्रेय भारत की जनता को ही मिलना चाहिए। जिस जनता के सामने पहले से कोई कार्यक्रम नहीं था, और जिस आन्दोलन में व्यापक नेतृत्व का सर्वथा अभाव था, उसमें जनता ने लड़ाई ठानी थी, और जनता ने ही मुसीबतों का सामना किया। वह आन्दोलन भारतीय जन-समुदाय का था, जो स्वराज्य के लिए अधीर हो रहा था और लड़ने के लिए आकुल था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अगस्त उन्नीस सौ बयालीस की अभूतपूर्व जनक्रांति रक्ताक्षरों में सदा अंकित और अमिट रहेगी। अठारह सौ सत्तावन के जनविप्लव के बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय जनता की क्रांतिकारी चेतना और जन आक्रोश का उच्चतम रूप था।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# अगस्त क्रांति के चिरस्मरणीय दिन

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उन्नीस सौ बयालीस की अभूतपूर्व जन क्रांति अमिट रूप में रक्ताक्षरों में अंकित रहेगी। अठारह सौ सन्तावन के जन-विप्लव से उन्नीस सौ छयालीस के नौसेना विद्रोह तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय जन-चेतना की गौरवमयी शानदार परम्परा की अटूट श्रृंखला रही है।

अप्रैल, १९४२ में साप्ताहिक 'हरिजन' में प्रकाशित अपने एक लेख में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने पहली बार 'भारत छोड़ो'' का नारा दिया। ६ जुलाई को कांग्रेस कार्य समिति ने वर्धा की बैठक में 'भारत छोड़ो' नारे का अनुमोदन किया। गांधीजी ने इस प्रस्ताव के सिलसिले में घोषणा की कि इसे कार्यान्वित करने का संघर्ष, जो व्यापक सविनय अवज्ञा आन्दोलन का रूप लेगा, अहिंसा की सीमाओं से बाहर जा सकता है। यह अंग्रेजों को सीधी धमकी थी। ७ अगस्त को बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन ने नया असहयोग आन्दोलन शुरू करने का निर्णय किया। दो दिनों के भीतर गाँधीजी समेत कांग्रेस के सारे नेता औपनिवेशिक शासन का तख्ता उलटने का षडयंत्र रचने के आरोप में गिरफ्तार कर लिये गये। यह आरोप पुलिस द्वारा गढे गये झूठ प्रमाणों पर आधारित था। इसके बाद कांग्रेस को अवैध घोषित कर दिया गया और उसके कार्यकलाप पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सम्पूर्ण भारत में क्रांतिकारी लहर फैल गयी।

९ अगस्त की भोर में गाँधीजी सहित कांग्रेस कार्यकारिणी के सभी सदस्य बम्बई में गिरफ्तार कर लिए गये। उस दिन सारे देश में दिन भर गिरफ्तरियां होती रही। गाँधीजी ने जनता के नाम 'करो या मरो' का महामंत्र दिया। उन्होंने कहा कि 'हम या तो भारत को स्वतंत्र करेंगे अथवा उसके लिए संघर्ष में अपने प्राणों की बलि देंगे। हम देश को चिरंतन दासता की बेड़ियों में बंधे हुए देखने को जिन्दा नहीं रहेंगे।' सारे भारत में 'अंग्रेजों भारत छोड़ दो', 'हम गुलाम अब नहीं रहेंगे', 'हम गुलाम अब नहीं रहेंगे', 'करो या मरो' आदि नारे गूँजने लगे।

एक ओर सरकार की ओर से कठोर कारवाईयां की जा रही थी। राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी की खबर देश भर में आग की तरह फैल गई। सारा देश भीषण विक्षोभ एवं रोष से उत्तेजित हो उठा। देश की जनता अपनी राष्ट्रीय चेतना के लिए एक चुनौती मानकर विदेशी शासन को समाप्त करने के लिए कृत संकल्प होकर एकजुट हो गई। छात्रों में इसकी प्रतिक्रिया गहरी हुई। छात्रों और तरुणों की टोलियां आत्मोत्सर्ग की भावना से स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी। अनेक जगहों में स्वतःस्फूर्त विरोध प्रदर्शन और हड़तालें शुरू हो गई। सैकड़ों रेलवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


स्टेशनों, डाकखानों और पुलिस चौकियों पर हमले हुए। संचार-साधनों को नष्ट किया गया। सड़क तथा रेल पुलों को उड़ा दिया गया। अधिकारियों ने ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शनों में भाग लेने वालों पर निर्मम दमन चक्र चलाया। दो हजार से अधिक लोग पूरे देश में शहीद हुए और लगभग ६० हजार गिरफ्तार किये गया।

पटना में ११ अगस्त को सचिवालय भवन पर झण्डा फहराते हुए ७ छात्र शहीद हो गये। लगभग २५ गम्भीर रूप से घायल हुए। सचिवालय गोली काण्ड में छात्रों की शहादत ने सारे बिहार को आजादी की लड़ाई में एक नयी जान डाल दी।

१९४२ की अगस्त क्रांति के समय मेरी अवस्था लगभग १५ साल कीथी। मैं कुर्था (गया) थाने के पोन्दिल मिडल स्कूल का छात्र था। 'अंग्रेजों, भारत छोड़ दो' के शंखनाद से आलोड़ित, राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव, मेरे मन-मस्तिष्क पर गहरा पड़ा। अजादी के लिए तन-मन धन न्योछावर करने वाले आन्दोलनकारियों की टोलियों में मैं शामिल होने लगा। हमारे पिताजी (श्री कैलाश शर्मा) १९३२-३३ के राष्ट्रीय आंदोलन में छः माह की जेल यात्रा कर चुके थे। हमारा गाँव मझियावां राष्ट्रीय आन्दोलन और किसान आन्दोलन का केन्द्रस्थल था। मैंने १९४१ में ही कुर्था छात्र सम्मेलन आयोजित किया था। कुर्था थाना छात्र संघ के श्री राम प्रकाश विद्यार्थी अध्यक्ष और मैं सचिव था। ४२ की अगस्त क्रांति को सफल बनाने में स्कूलों में हड़ताल कराकर हम लोग कूद पड़े। पोन्दिल, खटांठंगी, कुर्था, लारी, शकूराबाद सभी जगहों के स्कूल बन्द हो गये। बेनीपुर के श्री श्याम बिहारी लाल (शहीद) बारा गांव के श्री राम दहिन सिंह, पोखवां गांव के विदूरजी आदि १३ अगस्त को मझियावां आये। भगतजी (रामविलास शर्मा) के दरवाजे पर सरयू बाबू से बातें हुई। सरयू बाबू उन दिनों कुर्था थाने के गांधीजी समझे जाते थे। लम्बे काल तक कुर्था थाना कांग्रेस कमिटी के मंत्री रह चुके थे। पंडित यदुनन्दन शर्मा के बाद मझियावां गाँव में बाबू सरयू सिंह की राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रतिष्ठा थी। बातचीत में यह तय पाया गया कि १५ अगस्त को हमलोग कुर्था थाना पर चढ़ाई करेंगे और तिरंगा झण्डा फहरायेंगे। १५ अगस्त को शनिवार का दिन था। हम सभी लोग कुर्था में इकट्ठा हुए। सौ, सवा सौ लोग रहे होंगे। थाने का दरोगा भजनानन्दी थे। धर्मावलंबी दारोगा हमेशा 'जय-जय सियाराम' का जाप करते रहते थे। उसका नाम ही 'जय-जय सियाराम पड़ गया था। हम लोगों के पहुँचते उसने थाने की चाभी सरयू बाबू को सौंप दी। थाने पर तिरंगा झण्डा फहरा दिया गया। उस दिन कोई दुर्घटना नहीं घटी।

१६ अगस्त दिन रविवार को थाने के जमादार गुलाम हैदर ने संध्या समय तिरंगा झण्डा उतार दिया। थाने भर के चौकीदार और दफादार को थाने पर इकट्ठा किया। थाने के जमींदारों की लाइसेंसी बन्दूकें जमा की। आजादी के दीवानों को थाने के जमादार गुलाम हैदर की खुली चुनौती थी। १७ अगस्त दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



सोमवार को थाने भर में यह बात फैल गई। १८ अगस्त दिन मंगलवार की सुबह से ही लोग कुर्था में जमा होने लगे। कुर्था मिडल स्कूल में आन्दोलनकारियों का जमाव और थाने पर जमादार गुलाम हैदर, सिपाही, चौकीदार और दफादार की फौज लेकर आजादी के दीवानों को ललकार रहा था।

मझियावां गाँव से हमलोग २५ विद्यार्थी और नौजवान उस दिन कुर्था आये थे। बाबू सरयू सिंहजी कुर्था में पहले ही से उपस्थित थे। रामदहीन सिंह के नेतृत्व में बारा; श्यामबिहारी लाल के नेतृत्व में बेनीपुर, रामप्रकाश विद्यार्थी के नेतृत्व में खेमकरण सराय, रामस्वरूप सिंह के नेतृत्व में सचई, सत्यनारायण शर्मा के नेतृत्व में महमदपुर, भैरव सिंह के नेतृत्व में फुलसाथर तथा बढ़हिया के बाजुल हक, पोरवना के विदुरजी और राम भजन शर्मा, लारी के अर्जुन शर्मा, सईदी चक के गंगा पाण्डेय, टाली के उमा पाठक, अईरा के गया शर्मा, राजेपुर के रामू मोची, खटांगी के कैलास गुप्ता, मिर्जापुर के सीताराम शर्मा, सरता के हरिद्वार सिंह, महुआ बिगहा के भीम शर्मा, सरेया के बाँके बिहारी शर्मा, कसवां के शक्ति कुमार आदि के नेतृत्व में लगभग ५०० लोग कुर्था में इकट्ठे हो गये। कुछ लोगों के पास परम्परागत हथियार भी था। बाबू सरयू सिंह ने सभी का हथियार रखवा दिया और कहा कि हम गाँधीजी के सत्य और अहिंसा के रास्ते पर स्वराज्य की लड़ाई लड़ने जा रहे हैं। लाठी और गोलियों से डरना नहीं होगा और कभी भी हिंसात्मक काम नहीं करना होगा। सभी एक स्वर से बोल उठे–'महात्मा गाँधी की जय' 'अंग्रेजों भारत छोड़ दो' 'हम गुलाम अब नहीं रहेंगे', अपना देश आजाद करेगें, 'करो या मरो' का संकल्प लिए आजादी के दीवानों का काफिला एक जुलूस के रूप में लगभग दो बजे दिन में कुर्था बाजार होते हुए थाने की ओर बढ़ा हम लोग नारे लगाते आगे बढ़ रहे थे। बीच-बीच में गीत भी गाते थे। 'सर बांधे कफनियां हो, शहीदों की टोली निकली'। जुलूस जब कानीहौज से आगे बढ़ा तो गोली चल गई। गुलाम हैदर ने पहले आसमानी फायर किया। फिर निशाना लगाकर गोलियां चलने लगी। गोली के छर्रे से कई लोग घायल हुए भगदड़ मच गई। श्यामबिहारी लाल गिर गए। उन पर राजेपुर के एक चौकीदार ने गड़ासा से हमला किया।

पेट की अतड़ियां कट गयी। बंदुक के कुन्दे से भी मार पड़ी। बाबू सरयु सिंह भी घायल होकर धराशायी हो गये। उन्हें भी बन्दुक के कुन्दे से मार पड़ी। दोनों को घसीटा गया। शक्ति कुमार भी घायल हुए। हमलोगों ने बगल के कानीहौज में शरण ली। वहाँ लारी के अर्जुन शर्मा छिपे हुए थे। उनके सीने से खून की बूंदे टपक रही थी। मैंने कहा–शर्माजी आप को गोली लग गई। उन्होंने कहा–तुम्हारे पैर से भी खून टपक रहा है। कानीहौज की बगल वाली गली में हमारे गाँव के कामता शर्मा घायल पड़े थे। हम तीनों किसी तरह अस्पताल पहुँचे। हमारे गाँव के गाँधी शर्मा और चन्द्रविलास शर्मा को भी छर्रे लगे थे। कुर्था बाजार में सन्नाटा छा गया। सभी दुकानें बन्द हो गई। उधर श्यामबिहारी लाल और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


सरयु सिंह मरणासन्न पड़े थे । जहानाबाद अस्पताल ले जाते हुए रास्ते में ही श्यामबिहारी लाल शहीद हो गये । शहीद श्यामबिहारी उन दिनों कुर्था थाना कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के मंत्री थे । बड़े उत्साही नौजवान । मझियावां किसान सत्याग्रह में भी उन्होंने भाग लिया था । बेनीपुर के जयमंगल सिंह भी जेल गये थे। शहीद श्यामबिहारी के पिता महावीर लाल जी पटवारी थे । बेटे की शहादत के बाद वे भी कांग्रेस के सक्रिय सदस्य बन गये थे । बाबू सरयु सिंह जहानाबाद अस्पताल में चिकित्सा के बाद जमानत पर रिहा किये गये ।

इस गोलीकांड से स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ। १३ अगस्त को गया में पुलिस की गोलियों से तीन व्यक्ति शहीद हो चुके थे। १६ अगस्त को अरबल थाना पर उत्तेजित भीड़ ने आक्रमण कर सरकारी कागजात विनष्ट कर दिया और थाना में आग लगा दी । सभी जगहों में तार और टेलीफोन कटे हुए थे । रेलवे लाईन अनेक स्थानों पर तोड़ दी गयी थी । चाकन्द स्टेशन जला दिया गया था । २० अगस्त को गया के १५० लिपिकों ने इस्तीफा दे दिया ।

आंदोलन के दौरान अरबल, कुर्था, घोसी, गोह, नवीनगर, कुटुम्बा, अतरी, गुरुआ, इमामगंज, डुमरिया, गोविन्दपुर, कौआकोल, वारसलीगंज और पकरीवारावां थाना से पुलिस हटा ली गयी थी ।

कुर्था गोलीकांड के बाद हम जब अपने घर पर गये तो हमारे पितामह ने हमारी खुब पिटाई की । मैं मार खाता था और 'महात्मा गाँधी की जय' 'भारत मात की जय' के नारे से अपने पितामह के क्रोध को और तेज करता था । जब मार खाते-खाते बेहोश हो गया तो गाँव के लोगों ने आकर मुझे छुड़ाया । कई दिनों तक हल्दी गर्म कर बदन पर चढ़ाये गये । कुछ अच्छा होने पर चन्द्रविलास शर्मा के साथ घर से भाग निकले । भगवतीपुर, चमण्डी आदि गाँव में घुम कर मैं फिर अरवल इलाके में चला गया । फरारी की अवस्था में अरबल अंचल के निरंजनपुर में हमलोग पन्ना बाबू जमींदार के लठैतों के घेरे में फँस गये । अरवल अंचल के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री गोदानी सिंह जी और क्रांतिकारी गायक श्री हलधर जी हमारे साथ थे । किसी तरह हम लोग बचकर वहाँ से निकल भागे ।

अपने भूमिगत जीवन में ही हलधर जी के साथ मखदुमपुर अंचल के सुगांव में श्री बन्धुशाह जी के घर में ठहरे । बन्धुशाह जी आर्य समाजी विचार के थे। उन दिनों मैं कट्टर वैष्णव कन्ठी माला पहनता था । रामायण का पाठ करता था। वैष्णव तिलक लगाता था । मझियावां गाँव के ठाकुरवाड़ी के महंत रामदेव दास का शिष्य भी हो गया था । देशभक्ति और रामभक्ति पिता जी से विरासत में मिली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



थी। हमारे पिताजी भी कट्टर वैष्णव थे। उन्होंने भी महंथ रामदेव दास जी से ही दीक्षा ली थी।

सुगांव में बन्धुशाह जी ने मुझे महर्षि दयानंद सरस्वती का 'सत्यार्थ प्रकाश' तीन बार अध्ययन करने की शर्त पर उपहार में दी। तीन चार तो नहीं, एक बार में उसे जरूर पढ़ डाला। धीरे-धीरे वैष्णव धर्म से आस्था खिसकने लगी। आगे चल कर महापंडित राहुल सांकृत्यायन की लिखी किताब 'तुम्हारी क्षय हो', साम्यवाद ही क्यों ? आदि पढ़कर दूसरे ही रंग में रंग गया। मैंने अपने भूमिगत जीवन में औरंगाबाद (करमा भगवानपुर) के सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी कुमार बद्रीनारायण के साथ अधिकांश समय बिताया। बद्री बाबू भी अंत तक फरार ही रह गये थे। वे राजनीतिक कार्याकर्त्ताओं को काफी मदद करते थे। सम्पन्न जमींदार परिवार के होते हुए भी किसान आंदोलन के प्रबल समर्थक थे।

१९४६ में बिहार में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनने के बाद मैंने श्रीबाबू और अनुग्रह बाबू को एक-एक पत्र लिखा और बताया कि १९४२ के आंदोलन में हमारी पढ़ाई समाप्त हो गयी है। हमारी पढ़ाई की कोई व्यवस्था कीजिए। एक दिन अचानक सदाकत आश्रम, पटना से एक खत आया। खत में लिखा था, बिहार विद्यापीठ फिर संचालित हो गया है। आप की पढ़ाई की व्यवस्था वहीं की गयी है। खत देखते आप पटना चले आइये। मैं पटना सदाकत आश्रम में विद्यापीठ का छात्र बन गया, वहीं से सुप्रसिद्ध किसान नेता जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती मुझे अपने साथ, बिहटा श्री सीताराम आश्रम ले गये। १९५० के २६ जून को स्वामी जी का देहावसान हो गया और मैं अगस्त माह में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया।

बाल्य-काल की अनुभुतियां विकास-क्रम से कुछ इस प्रकार सम्पृक्त होकर रह जाती है कि मनुष्य चाहकर भी उनके प्रभाव से आजीवन मुक्त नहीं हो पाता। मेरे साथ कुछ ऐसी ही घटनाएँ घटी है।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# आजादी के दीवानों के तराने अब भी गूंजते हैं

आजादी के लिए संघर्ष में हमारे स्वतंत्रता-सेनानियों और देशभक्त साहित्यकारों के कंठों से अनेक गीत और तराने सहज रूप में मुखरित हुए। इन गीतों को गाते हुए आजादी के दीवाने हर जुल्म और सितम हँसते-हँसते सहते थे। यद्यपि ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दमन-चक्र उन्हें पीसता रहा, फाँसी पर झुलाता रहा, परन्तु हमारे वीर योद्धा कदम-से-कदम मिलाकर आगे ही बढ़ते रहे। कभी पीछे लौटने का नाम नहीं लिया।

हमारे स्वतंत्रता-संग्राम का इतिहास बड़ा ही रोचक, रोमांचकारी तथा विविधताओं से भरा हुआ है। अपने-अपने ढंग पर योगदान कर असंख्य स्वाधीनता-सेनानियों ने स्वतंत्रता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रकट की थी। उनके त्याग और बलिदान का इतिहास हमेशा अमिट रहेगा। इन में आजादी के वे दीवाने क्रान्तिकारी भी शामिल हैं, जिन्होंने देश और विदेशों में सशस्त्र क्रांति का अवाहन कर अपने प्राणों की आहुति दी और महात्म गाँधी के अहिंसक सैनिक भी जिन्होंने लाखों की संख्या में यंत्रणाएं सही, लेकिन उफ तक न की।

आजादी के दीवाने हमारे स्वतंत्रता सेनानी किसी एक जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नहीं थे। इस देश में बसने वाली सभी जातियों और धर्मावलंबियों ने कन्धे-से-कन्धा मिलाकर और एकजूट होकर देश की स्वतंत्रता प्राप्त की। आजादी के दीवानों के पीठ पर कोड़े लगाये जाते, परन्तु कोड़े की हर चोट पर उनके मुँह से 'वन्देमतरम्' के नारे या कोई गीत की पंक्तियां निकलकर आसपास के सा[...] वातावरण में एक नयी शक्ति का संचार करती थी। फलतः मुर्दा दिलों में भी जवानी हिलोर मारने लगती थी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारम्भिक काल से ही हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को क्रान्तिकारी गीतों ने नया जीवन-संबल प्रदान किया। १९५७ में प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दौरान उर्दू में प्रकाशित 'पयामे आजादी' नामक पत्र में एक क्रान्तिकारी गीत छपा था, जो कौमी झंडे की सलामी के समय गाया जाता था। इसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं–

> **"आज शहीदों ने है तुमको अहले वतन ललकारा**
> **तोड़ो गुलामी की जंजीरें बरसाओ अंगारा।**
> **हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख हमारा भाई-भाई प्यारा,**
> **यह है आजादी की झण्डा इसे सलाम हमारा"**

'वन्देमातरम्' आजादी की लड़ाई का प्रथम राष्ट्रीय गीत बना। बंकिम बा[...]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



के सुप्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'आनन्द मठ' (१८८२ ई०) में उसके एक पात्र भवानंद ने गाया है–

**वन्देमातरम्**
**सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम् ।**
**शस्य-श्यामलां मातरम्**
**शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्**
**फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्**
**सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम,**
**सुखदां वरदां मातरमु,**
**वन्देमातरम्**

उन दिनों बहादुरशाह जफर और राम प्रसाद विस्मिल के शेर स्वतंत्रता सेनानियों के अतिरिक्त बच्चे-बच्चे की जुवान पर थिरकते रहते थे–

**"गाजियों में बू रहेगी, जब तलक ईमान की**
**तख्ते लन्दन तक चलेगी, तेग हिन्दुस्तान की"**

और इस प्रकार–

**"सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है**
**देखना है जोर कितना, बाजुए कातिल में है"**

सन् १९२१ के असहयोग आंदोलन के दिनों में एक कविता काफी लोकप्रिय थी, जिसमें कहा गया था–

**"बनाके कुटिया स्वतंत्रता की**
**सपूत जेलों में रम रहे हैं ।**
**निकलके देखेंगे वे तपस्वी**
**स्वतंत्र भारत, स्वतंत्र भारत"**

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों का लोकप्रिय गीत था–

**"छीन सकती है नहीं सरकार**
**वंदेमातरम्**
**हम गरीबों के गले का हार**
**वंदेमातरम्"**

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राम प्रसाद विस्मिल का गीत "सरफरोशी की तमन्ना" सब से अधिक लोकप्रिय था । विस्मिल ने यह गीत फांसी पर झुलने के पहले गाया था । शहीदे आजम शहीद-शिरोमणि सरदर भगत सिंह घोर संकट की घड़ियों में यह गीत गाते हुए फूले नहीं समाते थे । उनके जीवन की एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


महत्वपूर्ण घटना है–२१ जनवरी १९३० को लेनिन की बरसी के दिन वे और उन साथी गले में लाल रूमाल बांधे हुए अदालत में दाखिल हुए। सभी अपनी-अपनी जा कठघरे में खड़े हो गये और सबने विस्मिल का गीत "सरफरोशी की तमन्ना" गाक एक नयी शक्ति का अनुभव किया और गीत समाप्त होने पर नारे लगाये।

'इकबाल' का "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" और श्री श्यामला गुप्त 'पार्षद' का 'झंडागीत' सारे देश में लोकप्रिय हुआ। रविबाबू का 'जनगणम तो राष्ट्रीय गीत ही बन गया। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के दौर में राष्ट्रीय एकत विदेशी वस्त्र का बहिष्कार, आर्थिक नव निर्माण, हिन्दू मुस्लिम एकता को द प्रदान करने वाले गीतों ने धूम मचा दी। इस तरह के गीतों की कुछ पंक्तियां य बानगी के रूप में उपस्थित हैं–

**"खिदमते मुल्क का जब दिल में ख्याल आएगा,**
**खुद-ब-खुद पास चला हुनरो कमाल आएगा।**
**सब से पहले ही मैं मकतल में पहुँच जाऊंगा,**
**जब वतन के लिए मरने का सवाल आएगा।" (हरिकृष्ण प्रेमी)**
**"मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे,**
**सायां न रहे न ये साज रहे,**
**फकत हिन्द मेरा आजाद रहे,**
**मेरी माता के सर पर ताज रहे।" (माधव शुक्ल)**
**"भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलाम खाना !"**
**"आजाद होगा, होगा, आया है वह जमाना।" (अज्ञात)**
**"बांध ले विस्तर फिरंगी, राज अब जाने को है,**
**जुल्म काफी कर चुके, पब्लिक बिगड़ जाने को है।"**

ये गीत गली-गली में गाये जाते थे। वंशीधर शुक्ल की कविता–"सिर बां कफनवा हो, शहीदों की टोली निकली" और जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' रचना शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले' अब भी गूंजते हैं।

आजाद हिन्द फौज का प्रमाण गीत–"कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गी गाए जा, यह जिन्दगी है कौम की तू कौम पर लुटाये जा।" आज तक हमत कभी नहीं भूले हैं।

मैथिली शरण गुप्त की "भारत भारती" जन-गण के गले का हार बन गयी सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता–"खूब लड़ी मरदानी, वह तो झाँसी वाली र थीं" ने मुरदों में भी नया जीवन संचार किया।

सुमित्रानन्द पंत की 'ग्राम्या' दिनकर का 'हुंकार' रामनरेश त्रिपाठी 'पथिक' माखनलाल चतुर्वेदी की 'फूल की अभिलाषा' आजादी के दीवानों के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



हार बन गये। उर्दू के तत्कालीन साहित्य में हजारों नग्मों, शेर, रूबाइयां, गजलें तथा तराने भरे पड़े हैं। शायद ही उस दौर का कोई ऐसा शायर हो जिसने वतन की याद में कौमी तराने न छेड़े हों।

लोक-भाषाओं में गीत भी आजादी की भावनाओं से ओत-प्रोत थे। मगही, मैथिली, भोजपुरी में सैकड़ों लोकगीत लिखे गये। रघुवीर सहाय की 'बटोहिया' और प्रो० मनोरंजन की 'फिरंगिया' की काफी ख्याति हुई।

सोहन लाल द्विवेदी की एक कविता की कुछ पंक्तियां इस प्रकार है–

**जंजीरों से चले बांधने**
**आजादी की चाह!**
**घी से आग बुझाने की**
**सोची है सीधी राह!**
**हाथ-पांव जकड़ों जो**
**चाहो है अधिकार तुम्हारा**
**जंजीरों से कैद नहीं**
**हो सकता हृदय हमारा!**

कई रंग-रूपों और छंदों में आजादी के तराने गाये गये।

'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी के आह्वान गीत से चिनगारी की जगह ज्वालाएं फूटती थी–

**"क्या देख न सकते जंजीरों का गहना**
**हथकड़िया क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना।"**

एक अज्ञात कवि की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

**खादी का डंका घर-घर में बजवा दिया गाँधी बाबा ने।**
**मिट्टी में लंकाशायर को मिलवा दिया गाँधी बाबा ने।**

महिलाओं के गीत भी लिखे और गाये गये। एक पंक्ति द्रष्टव्य है–

**"चलु सखी, चलु सखी जेल के जवईया है,**
**जेल के तो खेल करवई, फाँसी के झुलवईया है।"**

एक दूसरा पंक्ति देखें–

**"खादी की साड़ी रंग दे, छापेमार रे रंगरेजवा।"**
**जिसे पहनकर हो जाएं, तइयार रे रंगरेजवा।"**

आने वाली पीढ़ियां आजादी के दीवानों के साथ के तरानों को भी याद रखेगी, जिसकी गहरी छाप हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में सदा अंकित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## आजादी के तराने

### अख्तरे एकबाल इस गुल का चमकता जायेगा

—बहादुर शाह ज़

हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की ,
तख्ते लंदन पर चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ।
खार हसरते कब्र तक दिल में खनता जायेंगा ,
मुर्ग विस्मिल की तरह लाश फड़कता जायेगा ।
देखिये कब तक जवाबे खत से आंखें शाद हों
रास्ता देख नहीं, कासिद भटकता जायेगा ।
जान जायेगी जा इश्के-आरिजे गल रंग में ,
'तख्त- ए -ताबूत' मिस्लें गुल महकता जायेगा ।
मैं वह कुरता हूँ कि मेरी लाश पर ऐ दोस्त,
एक जमाना दीद -ए- हसरत से तकता जायेगा ।
ऐ 'जफर' कायम रहेगी जब तलक अक्लीमे हिन्द ,
'अख्तरे एकबाल' इस गुल का चमकता जायेगा ।

**(दिल्ली के अन्तिम शाहंशाह ने यह कविता रंगून में लिखी थी**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# कौमी तराना

(१८५७ के स्वाधीनता संग्राम में भारतीय सैनिक कौमी झंडे की सलामी के समय यह गीत गाते थे। यह गीत उस समय उर्दू अखबार 'पयामे आजादी' में छपा था। यह अखबार लंदन के ब्रिटिश म्युजियम में सुरक्षित है।)

हम हैं इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।
ये है हमारी मिल्कीयत, हिन्दुस्तान हमारा,
इसकी रूहानियत से, रौशन है जग सारा।

कितना कदीम, कितना नईम, सब दुनिया से न्यारा,
करती है जरखेज जिसे, गंगो-जमन की धारा।
उपर बर्फीला पर्वत, पहरेदार हमारा,
नीचे शाहिल पर बजता, सागर का नक्कारा।

इनकी खानें उगल रही, सोना हीरा पारा,
इनकी शानो शौकत का, दुनिया में जयकारा।
आया फिरंगी दूर से, ऐसा मन्तर मारा,
लूटा दोनों हाथ से, प्यारा वतन हमारा।

आज शहीदों ने है तुमको, अहले वतन ललकारा,
तोड़ो गुलामी की जंजीरें, बरसाओ अंगारा।
हिन्दु मुसलमां - सिख हमारा, भाई-भाई प्यारा,
ये है आजादी का झंडा, इसे सलाम हमारा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# जनगणमन-अधिनायक जय हे !

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता !
पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंगा,
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंगा।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष माँगे,
गाहे तब जयगाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे भारत-भाग्य- विधाता।
जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।
जनगणमन पंथपरिचायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।
घोर तिमिर घन निविड़-निशीथे पीड़ित मूर्च्छित देशे।
जाग्रत् छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेषे।
स्नेहमयि तुम माता।
जनगण दुःखत्रायक जय हे भारत- भाग्य- विधाता।
जय हे, जय हे, जय जय जय, जय हे।
रात्रिप्रभानिल, उदित रविच्छवि पूर्व- उदयगिरिभाले,
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नवजीवन रस ढाले।
तव करुणारुण- रागे, निद्रित भारत जागे।
तव चरणे नत माथा।
जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता !

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# हिन्दोस्ताँ हमारा

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्ताँ हमारा ।।
गुर्वत में हो अगर हम रहता है दिल वतन में ।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा ।।
पर्वत जो सबसे ऊँचा हमसाया आस्माँ हो ।
वे सन्तरी हमारा, वे पासवाँ हमारा ।
गोदी में खेलती हैं इसकी हजारों नदियाँ ।।
गुलशन है जिनके दम से रश्के-जिनाँ हमारा ।
ऐ आबे-रूदे गंग्रा वे दिन है याद तुझको ।
उतरा तेरे किनारे जब कारवाँ हमारा ।
मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।
हिन्दी हैं, हम-वतन हैं, हिन्दोस्ताँ हमारा ।।
यूनान मिस्र रोमाँ सब मिट गए जहाँ से ।
अब तक मगर है बाँकी नामो निशाँ हमारा ।।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जमाँ हमारा ।।
इकबाल कोई मुहरम अपना नहीं जहाँ में ।
मालूम क्या किसीको दर्दे- निहाँ हमारा ।।

—अल्लाहमा इकवाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# हमारी ख्वाहिश

[ क्रान्तिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' यह गीत गाते-गाते फाँसी के फंदे पर झूल गये बाद में यह गीत-स्वतन्त्रता सेनानियों का प्रेरक गीत बन गया ।]

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजू- ए- कातिल में है।
रहबरे राहे मुहब्बत, रह न जाना राह में,
लज्जते सहरा नवर्दी दूरि- ए- मंजिल में है।
वक्त आने दे, बता देंगे तुझे, ऐ आसमाँ!
हम अभी से क्या बताएँ, क्या हमारे दिल में है।
अब न अगले वलवले हैं और न अरमनों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है।
आज मकतल में ये कातिल कह रहा है बार-बार,
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है।
ए शहीदे -मुल्को -मिल्लत, तेरे जज्बों के निसार,
तेरी कुर्बानी का चर्चा गैर की महफिल में है।

—रामप्रसाद 'बिस्मिल' (सन् १९२१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## आह्वान

कस ली है कमर अब तो, कुछ करके दिखायेगे,
आजाद ही हो लेंगे, या सर ही कटा देंगे।
हटने के नहीं पीछे, डरकर कभी जुल्मों से,
तुम हाथ उठाओगे, हम पैर बढ़ा देंगे।
बेशस्त्र नहीं है हम, बल है हमें चरखे का,
चरखे से जमीं को हम तो चर्ख गुंजा देंगे।
परवा नहीं कुछ दम का, गम की नहीं, मातम की,
है जान हथेली पर, एक दम में गवां देंगे।
उफ तक भी जुबां से हम हरगिज न निकालेंगे,
तलवार उठाओ तुम, हम सर को झुका देंग।
सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका,
चलवाओ गन मशीनें, हम सीना अड़ा देंगे।
दिलवाओ हमें फाँसी, ऐलान से कहते हैं,
खूं से ही हम शहीदों के फौज बना देंगे।
मुसाफिर जो अंडमान के, तूने बनाये, जालिम,
आजाद ही होने पर, हम उनको बुला लेंगे।

—अशफाकउल्ला खाँ
सन् १९३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# शहीद

शहीदों के खूं का असर देख लेना,
मिटायेंगे जालिम का घर, देख लेना।
किसी के इशारों से हम मुंतजिर है,
बहा देंगे खूँ की नहर, देख लेना।
झुका देंगे गर्दन को हम जेरे-खंजर,
खुशी से कटायेंगे सर, देख लेना।
जो खुदगर्ज गोली चलायेंगे हम पर,
तो कदमों में उनका ही सर देख लेना।
जो नस्ल हमने सींचा है खूने-जिगर से,
वो होगा कभी बागबर, देख लेना।
किनारे लगेगी भंवर से ये कश्ती,
वह आयेगी एक दिन लहर, देख लेना।
बुलाएं ये जायेंगी खुद सरनगूँ हो,
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना।
खुजंदी हुआ हिंद आजाद अपना,
छपेगी यह एक दिन खबर देख लेना।

—खुजंदी
सन् १९३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# वंदे मातरम्

छीन सकती है नहीं सरकार वंदे मातरम्
सरचढ़ों के सर में चक्कर उस समय आता जरूर,
कान में पहुँची जहाँ झनकार वंदे मातरम्
जेल में चक्की घसीटे, भूख से वह मर रहा,
उस समय भी बक रहा बेजार वंदे मातरम्,
मौत के मुँह में खड़ा है, कह रहा जल्लाद से,
भोंक दे सीने में वह तलवार, वंदे मातरम्,
डॉक्टरों ने नब्ज देखी, सर हिलाकर कह दिया,
हो गया इसको तो यह आजार वंदे मातरम्,
इद, होली, दशहरा, शबरात से भी सौ गुना,
है हमारा लाड़ला त्यौहार वंदे मातरम्,
जालिमों का जुल्म भी काफूर-सा उड़ जायेगा,
फैसला होगा सरे दरबार वंदे मातरम्,

— अज्ञात
सन् १९३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# देश-गीत

## जय जय प्यारा भारत देश

(१)

जय-जय प्यारा, जग से न्यारा
शोभित सारा, देश हमारा
जगत-मुकुट, जगदीश-दुलारा
जग -सौभाग्य, सुदेश
जय-जय प्यास भारत-देश ।

(२)

प्यारा देश, जय देशेश
अजय अशेष, सदय विशेष
जहाँ न संभव अध का लेश
संभव के वल पुण्य-प्रवेश
जय-जय प्यारा भारत- देश ।

(३)

स्वर्गिक शीश-फूल पृथिवी का
प्रेम-मूल, प्रिय लोकत्रयी का
सुललित प्रकृति-नटी का टीका
ज्यों निशि का राकेश
जय-जय प्यारा भारत-देश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



(४)

जय-जय शुभ्र हिमाचल श्रृंगा
कल-रव-निरत कलोलिनि गंगा
भानु प्रताप चमत्कृत अंगा
तेज-पुंज तप वेश
ज-जय प्यारा भारत-देश।

(५)

जग में कोटि-कोटि जुग जीवै
जीवन-सुलभ अमी-रस पीवै
सुखद वितान सुकृत का सीवै
रहै स्वतंत्र हमेश
जय-जय प्यारा भारत-देश।

—श्रीधर पाठक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## मेरी माता के सर पर ताज रहे

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे,
सामां न रहे न ये साज रहे।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे,
मेरी माता के सर पर ताज रहे।
सिख, हिन्दू, मुसलमां एक रहें,
भाई-भाई सा रस्म रिवाज रहे।
गुरु-ग्रन्थ कुरान-पुरान रहे,
मेरी पूजा रहे औ नमाज रहे।
मेरी टूटी मड़ैया में राज रहे,
कोई गैर न दस्तन्दाज रहे।
मेरी बीना के तार मिले हों सभी,
इक भीनी मधुर आवाज रहे।
ये किसान मेरे खुशहाल रहें,
पूरी हो फसल सुख-साज रहे।
मेरे बच्चे वतन पै निसार रहें,
मेरी माँ-बहनों की लाज रहे।
मेरी गायें रहें, मेरे बैल रहें,
घर-घर में भरा सब नाज रहे।
घी-दूध की नदियाँ बहती रहे,
सर्वस्व आनन्द स्वराज रहे।
माधो की है चाह खुदा की कसम,
मेरे बादे वफात ये बाज रहे।
खादी का कफन हो मुझ पै पड़ा,
'बन्दे मातरम्' आलफाज रहे।

— माधव शुक्ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# कौमी गीत

दावा है हर आन हमारा ।
सारा हिंदुस्तान हमारा ॥
जंगल और गुल्जार हमारे,
दरिया और कुहसार हमारे ।
कुएँ और बाजार हमारे,
फूल हमारे, खार हमारे ।
हर घर हर मैदान हमारा,
सारा हिंदुस्तान हमारा ॥
गो नहीं इसमें फौजी कुव्वत,
फिर भी बहुत है दिल में हिम्मत ।
और हमारे साथ है कुदरत,
अब कोई ताकत कोई हुकूमत ।
रोक दे तो तुफान हमारा,
सारा हिंदुस्तान हमारा ॥
हमसे भारत की रौनक है,
आजादी दिन रात सबक है ।
अपनी धनक है अपनी शफक है,
हर जर्रे पर अपना हक है ।
खेत अपने दहकान हमारा ॥
हिन्द का मालिक हर हिन्दी हो,
सिर्फ यहाँ एक कौम बसी हो ।
घीर न पाये ख्वाह कोई हो,
चाहे वह खुद अपनी खुदी हो ।
देख जरा अरमान हमारा,
सारा हिंदुस्तान हमारा ॥

—सागर निजाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## स्वदेशी कजली

अब जनि बिलम लगावहु कछ तुम शुभ अवसर यह आयो रामा ।
हरि हरि घर-घर करहु स्वदेशी को प्रचार रे हरी (टेक) ॥१॥
काहे निपट निकम्बी वस्तुन लेवन माँ चित्त लायो रामा ।
हरि-हरि वै विदेश, धन जनि फूँकौ घर सारा रे हरी ॥२॥
हा ! चटकीली वस्तु विदेशी भारत भर है छायो रामा ।
हरि-हरि सब भारत वस्तुन भारत करि डारा रे हरी ॥३॥
भये विदेश विलासी क्यों सब का तुमको भरमायो रामा ?
हरि-हरि करत घृणा निज देश, विदेश पियारा रे हरी ॥४॥
जेहि के वल जग सभ्य भयो सब जेहि जग ज्ञान सिखाया रामा ।
हरि-हरि नाम धाम सब डूबो सबहि हमारा रे हरी ॥५॥
ताली दै दै हँसत हमें, सब नीच असभ्य बनाया रामा,
हरि हरि तौहूँ थिक ! तुम करत विदेश पियारा रे हरी ॥६॥
जानहु का नहि पुन्य भूमि भारत हरि अहै बनायो रामा,
हरि हरि होत जहाँ तृण शस्य अनाज अपार रे हरी ॥७॥
जल थल सरिता सर उपवन वन मुनि मन लेत लुभायो रामा,
हरि हरि प्रकृति देवि को छवि है जहाँ सुख द्वारा रे हरी ॥८॥
सुख सम्पत्ति दाता भारत की सेवा ध्यान लगाओ रामा,
हरि हरि धन जन मन अर्पण सब करहु तुम्हारा रे हरी ॥९॥
स्वास वायु जब लौं जीवन मह "जय श्री भारत" गाओ रामा,
हरि हरि देवहु तुरत विदेशी वस्तुन जारी रे हरि ॥१०॥
"खाओ पहिनी ओढ़ौ, देओ, लेओ जो मन भायो रामा"
हरि हरि सो सबहोय स्वदेशी यदि प्राण धारा रे हरी ॥११॥

—पांडेय लोचन प्रसाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# प्रभात-फेरी

## (संगीत सौरभ)

उठो सोने वालो, सबेरा हुआ है,
वतन के फकीरों का फेरा हुआ हैं।
जागो तो निराश-निशा खो रही है,
सुनहरी सुपूरब दिशा हो रही है,
चलो मोह की कालिमा धो रही है,
न अब कौम कोई पड़ी सो रही है।
तुम्हें किस लिए मोह घेरे हुआ है ?
उठो सोने वालो, सबेरा हुआ है।
जवानो उठो, कौम की जान जागो,
पड़े किस लिए देश की शान जागो,
तुम्हीं दीन की आस-अरमान जागो,
शहीदों की सच्ची सुसन्तान जागो।
चलो दूर आलस अंधेरा हुआ है,
उठो सोने वालो, सबेरा हुआ है।
उठो देवियो, वक्त खोने न देना,
कहीं फूट के बीज बोने न देना,
जगे जो उन्हें फिर से सोने न देना,
कभी देश अपमान होने न देना।
मुसीबत से अब तो निबेरा हुआ है,
उठो सोने वालो, सबेरा हुआ है।
नयी कौमियत, मुल्क में उग रही है,
युगों बाद फिर हिन्द मां जग रही है,
खुमारी लिये जान को भग रही है,
दिलों में निराली लगन लग रही है।
शहीदों का फिर आज फेरा हुआ है,
उठो सोने वालो, सबेरा हुआ है।

—अज्ञात कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## स्वातन्त्र्य-मन्त्र

महर्षि मोहन के मुख से निकला,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
सचेत होकर सुना सभी ने
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
रहा हमेशा स्वतंत्र भारत
रहेगा फिर भी स्वतंत्र भारत ।
कहेंगे जेलों में बैठकर भी
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।
कुमारि-हिमगिरि अटक-कटक में
बजेगा डंका स्वतंत्रता का ।
कहेंगे तैंतीस करोड़ मिलकर,
स्वतंत्र भारत स्वतंत्र भारत ।

—श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले

वतन की आबरू को पास देखें कौन करता है,
सुना है आज मकतब में हमारा इम्तहाँ होगा ।
जुदा मत हो मेरे पहलू से ए दर्दे वतन हर्गिज,
न जाने बादे मुर्दन मैं कहाँ और तूँ कहाँ होगा?
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरनेवालों का यही बाकी निशाँ होगा ।
इलाही वो भी दिन होगा जब अपना राज़ देखेंगे,
जब अपनी ही जमीं होगी और अपना आसमाँ होगा ।।

—जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# सिर बाँधे कफनवा हो

(जलियाँवाला बाग-हत्याकाण्ड को लक्ष्य कर लिखी गयी)

सिर बाँधे कफनवा हो, शहीदों की टोली निकली........
सत्तावन में गदर हुआ था, इसी हिन्द के बीच
बहादुरशाह के चारों बेटे बड़े अनोखे बीर
अँग्रेज के छक्के छूटे शेखी मिल गई धूर
बीरों की टोली निकली। सिर बाँधे................
नानाजी की बेटी 'मैना' जिन्दा दई जलाय
दुर्गा, पद्मावती सरीखी स्वर्ग गई हरषाय
उन्हीं की हमजोली निकली। सिर बाँधे................
स्वतंत्रता प्यारी की खातिर निकल पड़े रजपूत
झाँसीवाली रानी भी बाँध कमर मजबूत
डाल गलझोली निकली। सिर बाँधे................
गांधीजी का शस्त्र अहिंसा सत्याग्रह- संग्राम
चर्खा चक्र सुदर्शन छूटा मचा विश्व कोहराम
ब्रिटिश की ठठोली निकली। सिर बाँधे................
भूखों रहकर प्राण दे गया हाय यतेन्दर दास
वोरस्टर लाहौर-जेल में दे अंग्रजो को मात
जनाजे की डोली निकली। सिर बाँधे................
पापी डायर के फायर से भूमि हुई सब लाल
जलियाँवाले बाग के अन्दर जूझा मदन गोपाल
कलेजे में गोली निकली। सिर बाँधे................
लगान कर दो बंद हिंद में हुआ जभी ऐलान
सबसे पहले कमर बाँधकर रखे हाथ पर मान
अकेली बारडोली निकली। सिर बाँधे..............
बिस्मिल, रोशन, लहरी औ अशफाक अली से वीर
आजादी लेने निकले थे, फाँसी चढ़े अखीर
शक्ति अनतोली निकली। सिर बाँधे...............

—वंशीधर शुक्ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# अभिलाषा

## (माता के सर पर ताज रहे)

मेरी जाँ न रहे, मेरा सर न रहे, समाँ न रहे, न ये साज रहे ।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे, माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में जसके सोहे तिलक औ गोद में गाँधी विराज रहे ।
न ये दाग बदन में सुफेद रहे न तो कोढ़ रहे न ये खाज रहे ॥
सिख हिन्दू मुसलमाँ एक रहें भाई-भाई-सा रस्मोरिवाज रहे ।
गुरु ग्रन्थ कुरान पुरान रहे मेरी पूजा रहे और नमाज रहे ॥
मेरी टूटी मड़ैया में राज रहे, कोई गैर न दस्तंदाज रहे ।
मेरी बीन के तार मिले हों सभी एक भीनी मधुर आवाज रहे ॥
ये किसान मेरे खुशहाल रहें, हो पूरी फसल सुख साज रहे ।
मेरे बच्चे वतन में निसार रहें, मेरी माँ-बहिनों में लाज रहे ॥
मेरी गायें रहें, मेरे बैल रहें, घर-घर में भरा सब नाज रहे ।
घी-दूध की नदियाँ बहती रहें, हरसूँ आनन्द स्वरांज्य रहे ॥
मांधो की है चाह खुदा की कसम मेरे बाद वफात ये वाज रहे ।
गाढ़े का कफन हो मुझ पे पड़ा वन्दे मातरम् अलफाज रहे ॥

—माधव शुक्ल (राष्ट्रीय सिंहनाद, १९२२)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## एक फूल की चाह

[लाखों-करोड़ों भारतीय युवकों को प्रेरित करनेवाली एक भारतीय आ पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी की यह कविता सन् १९३० में ब्रिटिश सरकार द्वा जब्त कर ली गयी थी । आज भी इसकी प्रासंगिकता ज्यों की त्यों बनी हुई है ।]

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर है हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ में देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक ।।

—माखनलाल चतुर्वेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# झण्डा-गीत

[कानपुर के श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' का यह गीत १३ अप्रैल १९२४ को कानपुर के फूलबाग (अब गणेशशंकर विद्यार्थी उद्यान) में 'जलियाँवाला बाग दिवस' पर आयोजित सभा में पं० जवाहरलाल नेहरू के साथ पहली बार सामूहिक रूप से गाया गया था। बाद में यह झण्डा-गीत सारे देश मे लोकप्रिय हुआ।]

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा !
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !
सदा शक्ति बरसानेवाला, प्रेम-सुधा सरसानेवाला,
वीरों को हरसानेवाला, मातृभूमि का तन-मन सारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !
स्वतन्त्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण में,
काँपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाये भय संकट सारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !
इस झण्डे के नीचे निर्भय, लें स्वराज, यह अविचल निश्चय,
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !
आओ प्यारे ! वीरो आओ, देश-धर्म पर बलि-बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !
इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए,
विश्व-विजय करके दिखलाए, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा !

—श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## स्वदेशी गान

(१)

जियें तो स्वदेशी बदन पर वसन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।
पराया सहारा है अपमान होना,
जरूरी है निज शान का ध्यान होना।
स्वदेशी पै वाजिब है कुर्बान होना,
इसीसे है सम्भव समुत्थान होना।
लगन में स्वदेशी की हर-मरदो-जन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(२)

निछावर स्वदेशी पै कर मालो-जर दो,
स्वदेशी से भारत का भण्डार भर दो।
रहें चित्र से वह चकाचौंध कर दो,
दिखा पूर्वजों के लहू का असर दो।
स्वदेशी हो सज-धज, स्वदेशी चलन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(३)

चलो इस तरह अपना चर्खा चला दो,
मनों सूत की ढेरियाँ तुम लगा दो।
बुनो इतने कपड़े मिलों को छका दो,
जमा दो स्वदेशी का सिक्का जमा दो।
स्वदेशी हो गुल और स्वदेशी चमन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(४)

न अतलस न मखमल की हो चाह तुमको,
कपट-सिन्धु की मिल गयी थाह तुमको।
न अबकर सकेंगे वे गुमराह तुमको,
किसीकी रही कुछ न परवाह तुमको।
फिदाए-वतन अपना तन प्राण धन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



(५)

उठो कर्मवीरो ! तुम्हें कौन भय है,
स्वदेशी का संग्राम भी शान्तिमय है।
प्रथा पाप की पाप में आप लय है,
विजय है विजय है तुम्हारी विजय है।
स्वदेशी हो पूजन स्वदेशी भजन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(६)

समर स्वत्व का वीरवर ठान दो तुम।
किसीके प्रलोभन में मत मान दो तुम।
खुशी से स्वदेशी पे यह जान दो तुम,
बने जिस तरह माँ को सम्मान दो तुम।
स्वदेशी हो जीवन स्वदेशी मरन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(७)

बनो कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो,
गुलामी की जंजीर चर्खे से तोड़ो।
मुसीबत उठाओ मगर मुँह न मोड़ो,
तपोबल से अन्याय का मर्म तोड़ो।
स्वदेशी हो पोषण, स्वदेशी भरण हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(८)

तुम्हीं तो स्वदेशी के हो आज त्राता,
तुम्हीं देश के भाग्य के हो विधाता।
तुम्हीं पे है सौ जाँ से कुर्बान माता,
तुम्हें फिर न क्यों ध्येय का ध्यान आता।
जो साधन स्वदेशी हो संकट-शमन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

(९)

करो प्रण कि आजाद होकर रहेंगे–
जहाँ में, कि बरबाद होकर रहेंगे।
सितमगर ही या शाद होकर रहेंगे,
कि हम शायद आबाद होकर रहेंगे।
स्वदेशी हो अख्तर स्वदेशी कथन हो,
मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।

—स्वामी नारायणानन्द 'अख्तर'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## वतन की राह में

वतन की राह में, वतन के नौजवाँ शहीद हो ।
पुकारते हैं ये जमीनो- आसमाँ शहीद हो ।
शहीद ! तेरी मौत ही, तेरे वतन की जिन्दगी ।
तेरे लहू से जग उठेगी इस चमन की जिन्दगी ।
खिलेंगे फूल उस जगह, पै, तूँ जहाँ शहीद हो ।
तू आज उठ वतन के दुश्मनों से इन्तकाम ले ।
इस अपने दोनों बाजुओं से, खंजरों का काम ले ।
चमन के वास्ते चमन के बागवाँ, शहीद हो ।
पहाड़ तक भी काँपने लगे तेरे जूनून से ।
तू आसमाँ पै इन्कलाब, लिख दे अपने खून से ।
जमीं नहीं, तेरा वतन है आसमाँ, शहीद हो ।
वतन की लाज जिसकी थी, अजीज अपनी जान से ।
वो नवजवान जा रहा है, आज कितनी शान से ।
इक जवाँ की खाक पर, हर इक जवाँ शहीद हो ।
है कौन खुशनसीब माँ कि जिसका ये चिराग है ।
वो खुशनसीब है कहाँ, ये जिसके सर का ताज है ।
अमर वो देश क्यों न हो, कि तू जहाँ शहीद हो ।

—बिस्मिल इलाहाबादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# फाँसी

बला से हमको लटकाए अगर सरकार फाँसी से,
लटकते आये अक्सर पैकरे- ईसार फाँसी से।
लबे-दम भी न खोली जालिमों ने हथकड़ी मेरी,
तमन्ना थी कि करता मैं लिपटकर प्यार फाँसी से।
खुली है मुझको लेने के लिए आगोशे आजादी,
खुशी है, हो गया महबूब का दीदार फाँसी से।
कभी ओ बेखबर तहरीके-आजादी भी रुकती है ?
बढ़ा करती है उसकी तेजी-एक-रफ्तार फाँसी से।
यहाँ तक सरफरोशाने-वतन बढ़ जाएँगे कातिल,
कि लटकाने पड़ेंगे नित तुझे दो-चार फाँसी से।

—रामप्रसाद 'बिस्मिल'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## शहीदों की याद में

फाँसी का झूला झूल गया मर्दाना भगत सिंह,
दुनिया को सबक दे गया मस्ताना भगत सिंह।
राजगुरू से शिक्षा लो, दुनिया के नवयुवको।
सुखदेव से पूछो, कहाँ मस्ताना भगत सिंह।
रोशन कहाँ, अशफाक और लहरी, कहाँ बिस्मिल,
आजाद से था सच्चा दोस्ताना भगत सिंह।
स्वागतं को वहाँ देवगण में इन्द्र भी होंगे,
परियाँ भी गाती होंगी यह तराना भगत सिंह।
दुनिया की हर एक चीज को हम भूल क्यों न जायें।
भूले न मगर दिल से मस्ताना भगत सिंह।
भारत के पत्ते- पत्ते में सोने से लिखेगा,
राजगुरू, सुखदेव और मस्ताना भगत सिंह।
ए हिन्दियों, सुन लो, जरा हिम्मत करो दिल में,
बनना पड़ेगा सबको अब दीवाना भगत सिंह।

—अज्ञात, सन् १९३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## बाँध ले बिस्तर, फिरंगी

[क्रानितकारी अशफ़ाक उल्ला को कौन भूल सक़ता है । उनका यह आह्वान-गीत गली-गली में गाया जाता था जबकि सरकार ने इसे जब्त कर लिया था ।]

बाँध ले बिस्तर फिरंगी, राज अब जाने को है,
जुल्म काफी कर चुके, पब्लिक बिगड़ जाने को है ।
गोलियाँ तो खा चुके, अब तोप भी हम देख लें,
मर मिटेंगे मुल्क पर, फिर इन्कलाब आने को है ।
वीर तो इस जेल में हैं, क्रीम के वह नाखुदा,
जेलखाना तोड़ देंगे, यह हवा चलने को है ।
कह रहे हैं बाबा गांधी, मान लो शर्तें तमाम,
वरना फिर नक्शा हुकूमत का पलट जाने को है ।
आ गये हैं पटेल भी अब, कारजारे-हिन्द में,
देख लेना, राजशाही बेनकाब होने को है ।
लिख दी गाँधी ने ये चिट्ठी, आखिरी इर्विन के नाम,
अब सँभल जा, फिरंगी, वरना निशाँ मिटने को है ।
मालवी ने वार अपना, कर दिया इंग्लैंड पर,
देखना अब मानचेस्टर भी उजड़ जाने को है ।

—कुँवर प्रतापचन्द्र 'आजाद', (सन् १९३०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# २६. स्वतन्त्रता पुकारती !

['प्रसाद' जी का यह सुप्रसिद्ध अभियान-गीत उनके नाटक 'चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। स्वतंत्रता सेनानी इस गीत को हद से ज्यादा पसन्द करते थे और जुलूस निकालने के अवसर पर इसका प्रायः उपयोग किया करते थे]

हिमाद्रि तुंग शृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतन्त्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ है—बढ़े चलो! बढ़े चलो!
असंख्य कीर्ति- रश्मियाँ,
विकीर्ण दिव्य दाह-सी!
सपूत मातृ- भूमि के,
रुको न शूर साहसी!
अराति-सैन्य-सिंधु से सुवाड़वाग्नि- से जलो,
प्रवीर हो, जयी बनो—बढ़े चलो! बढ़े चलो!

—जयशंकर 'प्रसाद'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## २७ बंदना के इन स्वरों में

बंदना के इन स्वरों में स्वर मेरा मिला लो ।
बंदिनी माँ को न भूलो,
राग में जब मत्त झूलो,
अर्चना के रत्न कण में, एक कण मेरा मिला लो ।
जब हृदय का तार बोले,
शृंखला के बंद खोले,
हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो ।

—सोहनलाल द्विवेदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# बटोहिया

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे हिम- खोह रे बटोहिया ॥
एक द्वार घेरे रामा हिम -कोतवालवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया ॥
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,
जहवाँ कुहँकि कोइलि बोले रे बटोहिया ॥
पवन सुगन्ध मन्द अगर गगनवाँ से,
कामिनी बिरह-राग गावे रे बटोहिया ॥
बिपिन अगम घन सघन बगन बीच,
चम्पक कुसुम रंग देवे रे बटोहिया ॥
द्रुम बट पीपल कदम्ब निम्ब आम वृक्ष,
केतकी गुलाब फूल-फूले रे बटोहिया ॥
तोता तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा से,
पपिहा के पी-पी जिया साले रे बटोहिया ॥
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोरे प्रान बसे गंगा- धार रे बटोहिया ॥
गंगा रे जमुनवाँ के जगमग पनियाँ से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया ॥
ब्रह्मपुत्र पंचनद घहरत निसि -दिन,
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया ॥
अपर अनेक नदी उमड़ि- घुमड़ि नाचे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया ॥
आगरा प्रयाग काशी दिल्ली कलकतवा से,
मेरे प्रान बसे सरजू तीर रे बटोहिया ॥
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,
वहाँ ऋृषि चारो बेद गावे रे बटोहिया ॥
सीता के विमल जस राम-जस कृष्ण-जस,
मोरे बाप-दादा के कहानी रे बटोहिया ॥
व्यास बाल्मीक ऋृषि गौतम कपिल देव,
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया ॥
रामानुज रामानन्द न्यारि प्यारी रूपकला,
ब्रह्म-सुख-वन के भँवर रे बटोहिया ॥
नानक कबीर गौर संकर श्री राम कृष्ण,
प्रलय के गतिया बतावे रे बटोहिया ॥
विद्यापति कालीदास सूर जयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया ॥
जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ,
वहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया ॥
बुद्धदेव पृथु विक्रमार्जुन सिवाजी के,
फिरि-फिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया ॥
अपर प्रदेस देस सुभग सुघर बेस,
मोरे हिन्द जग के निचोड़ रे बटोहिया ॥
सुन्दर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेहि,
जन 'रघुवीर' सिर नावे रे बटोहिया ॥

—श्री रघुवीर नारायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


# फिरंगिया

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आज इहे भइलऽ मसान रे फिरंगिया।
अन्न धन जन बल बुद्धि सब नास भइल,
कौनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया।
जहँवाँ थोड़े ही दिन पहिले ही होत रहे,
लाखो मन गल्ला और धान रे फिरंगिया।
उहें आज हाय रामा! मथवा पर हाथ धरि,
बिलखि के रोवेला किसान रे फिरंगिया।
हाय दैव! हाय! हाय!! कौना पापे भइल बाटे,
हमनी के आज अइसन हाल रे फिरंगिया।
सात सौ लाख लोग दू- दू साँझ भूखे रहे,
हरदम पड़ेला अकाल रे फिरंगिया।
जेहु कुछ बाँचेला त ओकरो के लादि-लादि,
ले जाला समुन्दर के पार रे फिरंगिया।
घरे लोग भूखे मरे, गेहुँआ बिदेस जाय,
कइसन बाटे जग के व्यवहार रे फिरंगिया।
जहँवाँ के लोग सब खात ना अघात रहे,
रुपया से रहे मालामाल रे फिरंगिया।
उहें आज जेने-जेने अँखिया घुमाके देख,
तेने-तेने देखबे कंगाल रे फिरंगिया।
वनिज- बेपार सब एकउ रहल नाहीं,
सब कर होइ गइल नास रे फिरंगिया।
तनि- तनि बात लागि हमनी का हाय रामा,
जोहिले बिदेसिया के आस रे फिरंगिया।
कपड़ो में जो आवेला बिदे से तो हमनी का,
पेन्ह के रखिला निज लाज रे फिरंगिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


आजो बिदेसवा से आवे ना कपड़वा तऽ,
लँगटे करब जा निवास रे फिरंगिया।
हमनी से ससता में रुई लेके ओकरे से,
कपड़ा बना- बना के बेचे रे फिरंगिया।
अइसहीं- अइसहीं दीन भारत के धनवाँ के,
लूटि- लूटि ले जाला बिदेसे रे फिरंगिया।
रुपया चालिस कोट भारत के साले- साल,
चल जाला दूसरा के पास रे फिरंगिया।
अइसन जो हाल आउर कुछ दिन रही रामा,
होइ जाइ भारत के नास रे फिरंगिया।
स्वाभिमान लोगन में नामों के रहल नाहीं,
ठकुरसुहाती बोले बात रे फिरंगिया।
दिन रात करे ले खुसामद सहेबवा के,
चाटेले बिदेसिया के लात रे फिरंगिया।
जहवाँ भइल रहे राजा परताप सिंह,
और सुलतान अइसन वीर रे फिरंगिया।
जिनकर टेक रहे जान चाहे चलि जाय,
तबहू नवाइब ना सिर रे फिरंगिया।
उँहवे के लोग आज अइसन अधम भइले,
चाटेले बिदेसिया के लात रे फिरंगिया।
सहेबा के खुसी लागी करलन सबहीन,
अपनो भइअवा के घात रे फिरंगिया।
जहवाँ भइल रहे अरजुन, भीम, द्रोण,
भीषम, करन सम सूर रे फिरंगिया।
उहें आज झुंड-झुंड कायर के बास बाटे,
साहस वीरत्व भइल दूर रे फिरंगिया।
केकरा करनिया कारन हाय भइल बाटे,
हमनी के अइसन हवाल रे फिरंगिया।
धन गइल, बल गइल, बुद्धि गइल, विद्या गइल,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


हो गइलीं जा निपटे कंगाल रे फिरंगिया।
सब विधि भइल कंगाल देस तेहू पर,
टीकस के भार तें बढ़ौंले रे फिरंगिया।
नून पर टिकसवा, कूली पर टिकसवा,
सब पर टिकसवा लगौले रे फिरंगिया।
स्वाधीनता हमनी के नामों के रहल नाही,
अइसन कानून के बरे जाल रे फिरंगिया।
प्रेस ऐक्ट, आर्म्स ऐक्ट, इंडिया डिफेंस ऐक्ट,
सब मिलि कइसन ई हाल रे फिरंगिया।
प्रेस ऐक्ट लिखे के स्वाधीनता के छीनलस,
आर्म्स ऐक्ट लेलस हथिआर रे फिरंगिया।
इंडिया डिफेंस ऐक्ट रच्छक के नाम लेके,
भच्छक के भइल अवतार करे फिरंगिया।
हाय! हाय! केतना जुवक भइले भारत के,
ए जाल में फँसि नजरबंद रे फिरंगिया।
केतना सपूत पूत एकरे करनवा से,
पड़ले पुलिसवा के फंद रे फिरंगिया।
अजो पंजबवा के करिके सुरतिया से,
फाटे़ला करेजवा हमार रे फिरंगिया।
भारत के छाती पर भारत के बचवन के,
बहल रकतवा के धार रे फिरंगिया।
छोटे-छोटे लाल सब बालक मदन सब,
तड़पि-तड़पि देले जान रे फिरंगिया।
छटपट करि-करि बूढ़ सब मरि गइले,
मरि गइले सुघर जवान रे फिरंगिया।
बुढ़िया महतारी के लकुटिया छिनाई गइल,
जे रहे बुढ़ापा के सहारा रे फिरंगिया।
जुवती सती से प्राणपति हा बिलग भइल,
रहे जे जीवन के अधार रे फिरंगिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



साधुओ के देहवा पर चूनवा के पोति-पोति,
रंडि आगे लँगटा करौले रे फिरंगिया।
हमनी के पसु से भी हालत खराब कइले,
पेटवा के बल रेंगअवले रे फिरंगिया।
हाय! हाय! खाय सबे रोवत बिकल होके,
पीटि-पीटि आपन कपार रे फिरंगिया।
जिनकर हाल देखि फाटेला करेजवा से,
अँसुआ बहेला चहुँधार रे फिरंगिया।
भारत बेहाल भइल लोग के ई हाल भइल,
चारो ओर मचल हाय-हाय रे फिरंगिया।
तेहू पर अपना कसाई अफसरवा के,
देले नाहीं कवनो सजाय रे फिरंगिया।
चेति जाउ चेति जाउ भैया रे फिरंगिया से,
छोड़ि दे अधरम के पंथ रे फिरंगिया।
छोड़ि दे कुनीतिया सुनीतिया के बाँह गहु,
भला तोर करी भगवन्त रे फिरंगिया।
दुखिआ के आह तोर देहिया भसम करी,
जरि-भूनि होई जईबे छार रे फिरंगिया।
एहीसे त कहऽ तानी भैया रे फिरंगी तोहे,
धरम से करु तें विचार रे फिरंगिया।
जुलुमी कानून ओ टिकसवा के रद कऽ दे,
भारत के दे दे तें स्वराज रे फिरंगिया।
नाहीं तऽ ई सांचे-साँचे तोरा से कहत बानी,
चौपट हो जाई तोर राज रे फिरंगिया।
तेंतिस करोड़ लोग अँसुआ बहाई ओमें,
बहि जाई तोर समराज रे फिरंगिया।
अन्न-धन-जन-बल सकल बिलाय जाई,
डूब जाई राष्ट्र के जहाज रे फिरंगिया।

—प्रो० मनोरंजन प्रसाद सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## स्वतंत्रता के दीवाने

जब रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने।
धरा धँसेगी प्रलय मचेगी, व्योम लगेगा थर्राने।

बहन कहेगी, जाओ भाई, कीर्ति-कौमुदी छिटकाना।
पुत्र कहेगा, पिता, शत्रु का झण्डा छीन मुझे लाना।
स्वाभिमानिनी माँ कह देगी, लाज दूध की रख आना।
और कहेगी पत्नी प्रियतम, विजयी हो स्वागत पाना।
सब पुरवासी लोग हर्ष से, फूल लगेंगे वर्षाने।
जब रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने ॥१॥

उधर गर्वपूरित रिपुदल का, कटक अपार खड़ा होगा।
इधर स्वयंसेवक- दल कर में, झण्डा लिए अड़ा होगा।
उन्हें तोप तलवार- तीर का, मन में गर्व बड़ा होगा।
इधर अहिंसा का उर में भी, जोश नया उमड़ा होगा।
उत्साही कवियों की कविता, शौर्य लगेगी वर्षाने।
जव रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने ॥२॥

गोदी सूनी हो जावेगी, कितनी ही माताओं को।
और चूड़ियाँ भी उतरेंगी, कितनी ही अबलाओं की।
घिर आयेंगी शिशुओं पर भी, घोर घटा विपदाओं की।
जब कि चलेगी भारत भू पर, वह आँधी अन्यायों की।
ऐसा आर्तनाद होगा वह, लग जावेंगे दहलाने।
जब रण करने को निकलेंगे स्वतन्त्रता के दीवाने ॥३॥

—भगवानदास 'बालेन्दु'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## प्रगति-गीत

चले चलो, चले चलो ! बढ़े चलो, बढ़े चलो !
समुद्र गर्जना करे
हिमाद्रि वर्जना करे
प्रलय खड़ा मना करे
सुनो नहीं, मुड़ो नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो !
चलो अगर, चलो अमर
निरस्त्र ही करो समर
बढ़ो प्रकाश पंथ पर
भिड़ो घनान्धकार से, लड़े चलो, बढ़े चलो !

— रामदयाल पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## असहयोग

कठिन है परीक्षा न रहने कसर दो,
न अन्याय के आगे तुम झुकने सर दो,
गँवाओ न गौरव, नये भाव भर दो,
हुई जाति बेपर है, तुम उसको पर दो।
असहयोग कर दो।
असहयोग कर दो ॥
मानते हो घर-घर खिलाफत का मातम,
अभी दिल में ताजा है पंजाब का गम,
तुम्हें देखता है खुदा और आलम,
यही ऐसे जखमों का है एक मरहम।
असहयोग कर दो।
असहयोग कर दो ॥
बड़े नाजों से जिनको माँओं ने पाला,
बनाए गए मौत का वे निवाला,
नहीं याद क्या बागे जालियानवाला,
गए भूल क्या दागे जालियानवाला ?
असहयोग कर दो।
असहयोग कर दो ॥
हृदय चोट खाये दबाओगे कब तक ?
बने नीच यों मार खाओगे कब तक ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



तुम्हीं नाज बेजा उठाओगे कब तक ?
बँधे बन्दगी यों बजाओगे कब तक ?
असहयोग कर दो ।
असहयोग कर दो ।।
नाजूमी से पूछो न आमिल से पूछो,
रिहाई का रास्ता न कातिल से पूछो,
ये है अक्ल की बात आकिल से पूछो,
तुम्हें क्या मुनासिब है खुद दिल से पूछो ।
असहयोग कर दो ।
असहयोग कर दो ।।
डरो मत नहीं साथ कोई हमारे,
करो कर्म तुम आप अपने तुम्हारे,
बहुत होंगे साथी सहायक तुम्हारे,
जहाँ तुमने प्रिय देश पर प्राण वारे ।
असहयोग कर दो ।
असहयोग कर दो ।।

—'त्रिशूल' (गाया प्रसाद शुक्ल 'सनेही')

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## चरखवा चालू रहे

मेरे चरखे का टूटे न तार, चरखवा चालू रहे ।
गांधी महात्मा दुलहा बने हैं
दुलहन बनी सरकार
चरखवा चालू रहे ।
वीर जवाहर बने सहबाला
अरविन्द बने नेवतार
चरखवा चालू रहे ।
वालंटियर सब बने बराती
जेलर बने वाजंदार
चरखवा चालू रहे ।
दुलहा गांधी जेंवन बैठें
देश में माँगे स्वराज
चरखवा चालू रहे ।
लार्ड विलिंगडन दौरत आये
जीजा, गौने में दीबो स्वराज
चरखवा चालू रहे ।

—अज्ञात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## मंजूर सर कटाना

भारत न रह सकेगा हर्गिज गुलामखाना ।
आजाद होगा, आया है वह ज़माना ॥
खूँ खौलने लगा है अब हिन्दोस्तानियों का ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहाँ ठिकाना ॥
यों बेजुबान बनकर बस अब न हम रहेंगे ।
कर देंगे जालिमों का सब बन्द जुल्म ढाना ॥
परवाह अब किसे है इस जेल और दमन की ।
एक खेल हो गया है फाँसी पे झूल जाना ॥
कौमी तिरंगे झंडे पर दिल फिदा है अपना ।
भारत निवासी सारे गाते हैं ये तराना ॥
भारत के हम हैं बच्चे भारत वतन हमारा ।
भारत के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

—अज्ञात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



## खादी का डंका

खादी का डंका घर-घर में बजवा दिया गांधी बाबा ने ।
मिट्टी में लंकाशायर को मिलवा दिया गांधी बाबा ने ।।
देशी चद्दर देशी धोती खादी का है कुर्ता-टोपी ।
ओढ़ना- बिछौना खादी का सिलवा दिया गांधी बाबा ने ।।
मनहूस विदेशी कपड़ों की जलती है भारत में होली ।
खादी की आँधी से रिपु को दहला दिया गाँधी बाबा ने ।।
जो पहन साड़ियाँ परदेशी, चलती थीं भारत की बहनें ।
ख़ादी से उनका सुन्दर तन सज़वा दिया गाँधी बाबा ने ।।

—अज्ञात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## रंग दे बसंती चोला

माँ, मेरा रंग दे बसंती चोला।
इसी रंग में रंग के शिवाजी ने
माँ का बंधन खोला।
यही रंग हल्दीघाटी में खुल करके था खेला।
नव बसंत में भारत के हित वीरों का यह मेला।
माँ, मेरा रंग दे बसंती चोला।

—अज्ञात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# चले चलो

## (संगीत सौरभ)

(१)

है सामने खुला हुआ मैदां चले चलो,
बागे-मुराद है समर- अफशा चले चले,
दरिया हो बीच में कि बयाबां चले चलो,
हिम्मत यह कह रही है खड़ी, हाँ, चले चलो,
चलना ही मसलहत है, मेरी जां, चले चलो ।

(२)

आवो कि खोले अपने निशां नंगो-नाम ने,
बांधी कमर है कसके हर इक शाद काम ने,
क्यों इस तरह कमर को लगे थक के थामने,
दीवारे- बाग वह नजर आती है सामने,
चिल्ला रही है –हिम्मते मर्दां चले चलो ।

(३)

हिम्मत के शहसवार जो घोड़े उठायेंगे,
दुश्मन फलक भी होंगे तो वह सर झुकायेंगे,
तूफान बुलबुलों की तरह सेठ जायेंगे,
नेकी के जोर उठके बदी को दबायेगे,
पीछे हटो न एक कदम, आगे बढ़े चलो ।

—आजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2


## जालिम सरकार मिटायेंगे

वेंदी पर शीश चढ़ायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।
जोशीले गाने गाने दो, आफत पर आफत आने दो ।
सर जाता है तो जाने दो, लेकिन मत कदम हटाने दो ।
जीवन की ज्योति जगायेंगे ।
हम बलि-वेदी पर जायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।
बज रहा बिगुल आजादी का, बाना पहिना है खादी का ।
है मोह न हमको गादी का, डर यहाँ किसे बरबादी का ।
जेलों में अलख जगायेंगे ।
हम बलि-वेदी पर जायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।
मन के सुख:दुख की लड़ियों का, भय छोड़ चलो फुलझड़ियों का ।
स्वागत कर लो हथकड़ियों का, जीने- मरने की घड़ियों का ।
प्राणों की भेंट चढ़ायेंगे ।
हम बलि-बेदी पर जायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।
सुनकर संघर्षों की बोली, बढ़ चली शहीदों की टोली ।
है अन्धाधुन्ध चली गोली, निर्भय सबने छाती खोली ।
भारत स्वाधीन बनायेंगे ।
हम बलि-वेदी पर जायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।
मुठभेड़ बीच में मत छोड़ो, जंजीर गुलामी की तोड़ो ।
भारत माँ से नाता जोड़ो, डर से डरकर मत मुँह मोड़ो ।
गौरव स्वदेश का गायेंगे ।
हम बलि- वेदी जायेंगे ।
जालिम सरकार मिटायेंगे ।

—छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2



# अगस्त क्रान्ति का झंडा फहरा

"अंग्रेजों भारत छोड़ो" जब हमने ललकारा था।
हर एक हृदय में था उमंग, हर एक हाथ में झंडा था।
इस ओर पुलिस ने छीना तो, उस ओर फहरता झंडा था।
गाँव, नगरों और डगरों में हर ओर उड़ रहा झंडा था।
हर घर पर, महल-झोपड़ियों पर उड़ती राष्ट्र-पताका थी।
लग रही तुरत सब के मन में यह कैसी दीप शलाका थी।
हावी था दुश्मन के मन पर वैभव बेहाली पर झंडा।
कालेज- कचहरी -अस्पताल , कोठे -कोतवाली पर झंडा।
जल की लहरों में चंचल हो, पावक में पला तिरंगा था।
यूनियन जैक पर एक बार फिर से उड़ चला तिरंगा था।
हँसता था हाहाकारों में हर ओर हुजूमों पर झंडा।
साम्राज्यवाद के गुरगों पर वह रंग तिरंगे ने डाला।
जिसके चलते अंग्रेजों का दुनियाँ में था मुँह काला।
एस. पी. कोतवाल, दरोगा के दिल में हिल रहा तिरंगा था।
दहशत में सोनेवालों का मन में मिल रहा तिरंगा था।
सोते -सोते उठ पड़ते थे, कप्तान कडा करके पहरा,
झट कूद पलंग से कहते थे–'झंडा फहरा' 'झंडा फहरा।

त्रिवेणी शर्मा 'सु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.